

श्रीमहावीरस्तुतिः।



गाथा—पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य,
अगारिणो या परतित्थिया य।
से केइ णेगंतहियं धम्ममाहु,
अणेलिसं साहुसमिक्खयाए ॥१॥

छाया—पृष्टवन्तः श्रमणा ब्राह्मणाश्च,
अगारिणश्च परतीर्थिकाश्च ।
स क इत्येकान्तहितं धर्ममाह,
अनीदृशं साधुसमीक्षया ॥१॥

अन्वयार्थ—(**समणा**) साधु (**माहणा**) ब्राह्मण (**य**) और (**अगारिणो**) श्रावक लोग (**य**) तथा (**परितित्थिया**) बौद्ध आदि परमतावलम्बी (**पुच्छिस्सु**) पूछने लगे कि जिसने (**साहुसमिक्खयाए**) भली भांति विचार करके (**णेगंतहियं**) सर्वथा हित कारक (**अणेलिसं**) अनुपम (**धम्मं**) धर्म (**आहु**) कहा है (**से**) वह (**केइ**) कौन है ?॥

भावार्थ—सुधर्मास्वामी से जम्बूस्वामी पूछने लगे, आर्य! संसार समुद्र से पार करनेवाला हितकारी और अनुपम धर्म किसने बताया है? ऐसा प्रश्न मैं साधु, श्रावक तथा अन्य मतावलम्बियों ने पूछा है ॥१॥

गाथा--कहं च णाणं कहं दंसणं से,
सीलं कहं नायसुतस्स आसी ।
जाणासि णं भिक्खु ! जहातहेणं,
अहासुतं बूहि जहाणिसंतं ॥ २ ॥

छाया--*कथञ्च ज्ञानं कथं दर्शनं तस्य,*
शीलं कथं ज्ञातसुतस्यासीत् ।
जानीषे भिक्षो ! याथातथ्येन,
यथाश्रुतं ब्रूहि यथानिशान्तम् ॥

अन्वयार्थ--(**से**) उस (**नायसुतस्स**) भगवान् महावीर का (**णाणं**) ज्ञान (**कहं**) कैसा था, (**दंसणं**) दर्शन (**कहं**) कैसा था, और (**सीलं**) शील (**कहं**) कैसा था (**भिक्खु!**) हे सुधर्मास्वामिन् ! आप (**जहातहेणं**) ठीक ठीक (**जाणासि**) जानते हो अतः (**अहासुतं**) जैसा सुना है और (**जहाणिसंतं**) जैसा निश्चय किया है, वैसा (**बूहि**) कहो ॥

भावार्थ--जम्बूस्वामी सुधर्मा स्वामी से फिर पूछने लगे कि, हे सुधर्म स्वामिन् ! आप ठीक ठीक जानते हैं, इसलिये कृपा करके यह बताइये कि भगवान् महावीर का ज्ञान कैसा था ? और उन्होने उसे कैसे पाया था ? तथा उन का दर्शन-सामान्यप्रतिभास और यम नियम आदि शील किस प्रकार के थे ॥ २ ॥

गाथा--खेयन्ने से कुसले महेसी,
अणंतनाणी य अणंतदंसी ।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स
जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥३॥

छाया—खेदज्ञः (क्षेत्रज्ञः) स कुशलो महर्षिः,

अनन्तज्ञानी च अनन्तदर्शी ।

यशस्वी चक्षुष्पथे स्थितस्य,

जानीहि धर्मञ्च धृतिञ्च प्रेक्षस्व ॥३॥

अन्वयार्थ—(**से**) भगवान् महावीर (**खेयन्ने**) खेद अथवा क्षेत्र-आत्मा को जानने वाले (**कुसले**) कुशल (**महेसी**) महर्षि (**अणंतनाणी**) अनन्त ज्ञानवान् (**अणंतदंसी**) अनन्त दर्शनवाले (**य**) और (**जसंसिणो**) यशस्वी हैं । अतः अर्हन्त दशामें भगवान् को (**चक्खुपहे**) आँखो के विषय रूप से (**ठियस्स**) स्थित (**जाणाहि**) जानो (**च**) और (**धम्मं**) भगवान् के बताए हुए धर्म को (**च**) और (**धिइं**) संयम की दृढ़ता को (**पेहि**) देखो ॥

भावार्थ—जम्बूस्वामी के इस प्रकार पूछने पर सुधर्मा स्वामी भगवान के दर्शन, ज्ञान, शील और यश आदि का वर्णन करने लगे। बोले-भगवान् महावीर, संसारी जीवों के दुःखको-जो कि कर्मों के फलसे पैदा होता है जानते थे, क्योंकि उसके दूर करने का यथावत् उपदेश दिया है। आत्मा के सच्चे स्वरूप के ज्ञाता थे, कर्मरूपी कुश को उखाड़ने में कुशल थे, महान् ऋषि थे, अनन्तपदार्थों के जानने वाले होने से अनन्त ज्ञानी थे, अनन्तदर्शन-केवलदर्शनवाले थे, तथा अक्षय और अतुल कीर्तिवाले थे। अतएव भगवान को अर्हन्तदशा में आंखो के समान सूक्ष्मादि पदार्थों के दिखाने वाले जानकर उनके बताए हुए धर्म को, तथा चरित्र सम्बन्धी दृढ़ता को विचारो ॥३॥

गाथा--उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु,

तसा य जे थावर जे य पाणा ।

से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने,
दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥

छाया--उर्ध्वमधस्तिर्यक्षु दिक्षु.
त्रसाश्च ये स्थावरा ये च ।
स नित्यानित्याभ्यां समीक्ष्य प्राज्ञ:.
दीप (द्वीप) इव धर्मं समितमुदाह ॥ ४ ॥

अन्वयार्थ-- (**से**) उन (**पन्ने**) केवलज्ञानी भगवान् महावीर ने (**उड्ढं**) ऊर्ध्व (**अहेयं**) अधः और (**तिरियं**) तिरछी (**दिसासु**) दिशाओं में (**जे**) जो (**तसा**) त्रस (**य**) और (**थावर**)स्थावर (**पाणा**) प्राणी हैं, उनको (**णिच्चणिच्चेहि**)नित्य रूप से और अनित्य रूप से(**समिक्ख**) जानकर (**दीवे व**)दीपक की नाई अथवा संसार रूप समुद्र में गिरे हुए जीवों के लिये द्वीप की भांति (**धम्मं**)धर्म को (**समियं**)समानभाव से(**उदाहु**)प्रतिपादन किया ॥

भावार्थ--सुधर्मास्वामी फिर बोले-भगवान् महावीर ने त्रस और स्थावर जीवों को, जो ऊपर नीचे और इधर उधर स्थित हैं अर्थात् सब जगह मौजूद हैं, पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा अनित्य और द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा नित्य जाना । अतएव उन ज्ञानवान् भगवान् ने ऐसे उत्तम धर्म का उपदेश दिया जोकि ससार रूपी समुद्र में पड़े हुए प्राणियों को द्वीप की तरह सहारा देने वाला है । और अज्ञान रूप अन्धकार को दूर करने के लिये दीपक के समान है । पूर्वोक्त कथन से बौद्ध आदि अनात्मवादी मतों का खंडन किया गया है तथा वृक्ष आदि में जीव है ऐसा सिद्ध किया गया है, और जैन दर्शन के स्याद्वाद सिद्धान्त का भी प्रतिपादन कर दिया गया है ॥४॥

गाथा--से सव्वदंसी अभिभूय नाणी,
णिरामगंधे धिइमं ठितप्पा ।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं,
गंथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥

छाया--*स सर्वदर्शी अभिभूय ज्ञानी,*
निरामगंधो धृतिमान् स्थितात्मा ।
अनुत्तरः सर्वजगति विद्वान्.
ग्रन्थातीतोऽभयोऽनायुः ॥ ५ ॥

अन्वयार्थ--(**से**) वह (**सव्वदंसी**) सर्वदर्शी भगवान् (**अभिभूय**) क्षायोपशमिक ज्ञानों को जीत कर (**नाणी**) केवल ज्ञानवान् (**णिरामगंधे**) निर्दोष चारित्र पालने वाले (**धिइमं**) धीर (**ठितप्पा**) अपनी आत्मा में स्थित-लवलीन (**सव्वजगंसि**) समस्त संसार में (**अणुत्तरे**) सर्वोत्कृष्ट (**विज्जं**) पदार्थों के जानने वाले अर्थात् विद्वान् (**गंथा**) परिग्रह से (**अतीते**) रहित (**अभए**) भय रहित (**अणाऊ**) और आयु रहित थे ॥

भावार्थ--भगवान् महावीर स्वामी सामान्यरूप से पदार्थों के जानने वाले, तथा मति श्रुत अवधि और मनःपर्यय इन चार क्षयोपशमजन्य ज्ञानों को हटाकर केवलज्ञान वाले थे। क्योंकि ज्ञान और चारित्र से मोक्ष होता है। इस लिये भगवान् के ज्ञान का वर्णन करके चारित्र का वर्णन करते हैं। भगवान महावीर मूल और उत्तर गुणों को पूर्णतया पालन करते तथा अनेक विघ्न बाधाओं एवं परिषहों के आनेपर भी चारित्र से चलायमान नहीं होते थे। भगवान् तीन लोक में सब से श्रेष्ठ विद्वान् परिग्रह से रहित अतएव निर्ग्रन्थ सात प्रकार के भयों से रहित, तथा समस्त कर्मों से मुक्त थे ॥ ५ ॥

गाथा—से भूइपराणे अणिएअचारी,
ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू ।
अणुत्तरं तप्पति सूरिए वा,
वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥६॥

छाया—स भूतिप्रज्ञोऽनियतचारी.
ओघंतरो धीरोऽनन्तचक्षुः ।
अनुत्तरं तप्यति सूर्य इव,
वैरोचनेन्द्र इव तमः प्रकाशः ॥६॥

अन्वयार्थ—(से) वह भगवान् **(भूइपराणे)** अत्यन्त बुद्धिमान् **(अणिएअचारी)** अप्रतिबद्ध विहार करनेवाले **(ओहंतरे)** संसार रूपी समुद्र को तिरनेवाले, **(धीरे)** धीर **(अणंतचक्खु)** अनन्त ज्ञानवान् **(अणुत्तरं)** सबसे ज्यादा **(तप्पति)** तपस्या करनेवाले **(सूरिए वा)** सूरज की भांति तथा **(वइरोयणिंदे व)** वैरोचन नामक अग्नि की तरह **(तमं)** अज्ञान-अन्धकार का नष्ट करके **(पगासे)** ज्ञान को प्रकाशित करनेवाले थे॥

भावार्थ—उन भगवान् महावीर की प्रज्ञा संसार का मंगल करने वाली एवं रक्षा करने वाली थी। उनका विहार अप्रतिबद्ध था, क्योंकि वह सब प्रकार के परिग्रह से परे थे। चारित्र संसार रूप समुद्र से पार करने वाला था। परिषहों को समान भाव से सहन करनेवाले अतएव धीर, तथा धी-बुद्धि से राजित-शोभित थे। ज्ञेय पदार्थ अनन्त हैं उन सब को भगवान् जानते थे, अतएव अनन्त ज्ञानवान् थे। दुनिया में सब से अधिक तप करनेवाले थे। और जिस तरह सूर्य अन्धकार को नष्ट करता है, अथवा वैरोचन नामक अग्नि के जलने से जैसे अन्धकार नहीं रह सकता, उसी तरह भगवान् भी अज्ञान रूप अन्धकार को नाश करनेवाले थे॥ ६ ॥

गाथा—अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं,
णेया मुणी कासव आसुपन्ने ।
इंदे व देवाण महाणुभावे,
सहस्स णेता दिवि णं विसिट्टे ॥७॥

छाया--अनुत्तरं धर्ममिमं जिनानाम् ,
नेता मुनिः काश्यप आशुप्रज्ञः ।
इन्द्र इव देवानां महानुभावः,
सहस्राणां नेता दिवि विशिष्टः ॥७॥

अन्वयार्थ--(जिणाणं) जिन भगवान् के (इणं) इस (अणुत्तरं) सर्वश्रेष्ठ (धम्मं) धर्म के (णेया) नेता, (मुणी) मुनि, (कासव) काश्यपगोत्रीय (महाणुभावे) महाप्रभावशाली भगवान् महावीर (दिवि) स्वर्ग में (सहस्स) हजारों (देवाण) देवों के (इंदे व) इन्द्र की नाई (विसिट्टे) रूप और गुण आदि में सब से प्रधान (णेता) नेता थे ॥

भावार्थ--जिस तरह स्वर्ग के सब देवों में इन्द्र रूप गुण और ऐश्वर्य आदि गुणों में प्रधान होता है, उसी तरह भगवान् महावीर स्वामी सब लोगों में उत्तम थे । ऋषभ आदि पूर्व २३ तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित धर्म के नेता-प्रचारक थे । इस कथन से उनका भ्रम दूर किया है जो महावीर स्वामी को ही जैनधर्म का संस्थापक मानते हैं । क्योंकि महावीर स्वामी जैनधर्म के संस्थापक नहीं, किन्तु उनके पहले होनेवाले २३ तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित धर्म के प्रचारकमात्र थे । प्रभु का गोत्र काश्यप था ॥७॥

गाथा--से पन्नया अक्खयसागरे वा,
महोदही वावि अणंतपारे ।

अणाइले वा अकसाइ मुक्के,

सक्के व देवाहिवई जुईमं ॥ ८ ॥

छाया--*स प्रज्ञयाऽक्षयसागरो वा,*

महोदधिरिव अनन्तपारः ।

अनाविलो वा अकषायी मुक्तः,

शक्र इव देवाधिपतिर्द्युतिमान् ॥ ८ ॥

अन्वयार्थ--(से) वह भगवान् महावीर **(पन्नया)** बुद्धि से **(अणंतपारे)** अनन्तपारवाले तथा **(अणाइले)** शुद्ध जलवाले **(महोदहीव)** स्वयम्भूरमण समुद्र की भांति **(अक्खयसायरे)** अक्षयसमुद्र थे तथा **(अकसाइ)** कषाय से रहित **(मुक्के)** कर्मों से मुक्त **(देवाहिवई)** तथा देवो के स्वामी **(सक्के व)** इन्द्र की तरह **(जुईमं)** दीतिमान् थे ॥

भावार्थ--भगवान् की उपमा किसी अन्यपदार्थ से नहीं दी जा सकती । किन्तु एकदेशीय उपमा सागर से दी गई है । अर्थात् जिस प्रकार स्वयंभूरमण अनन्त पारवाला है, उसी तरह भगवान् द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा अनन्त ज्ञानवान् थे । समुद्र का जल जैसे निर्मल होता है, भगवान् का ज्ञान भी उसी तरह स्पष्ट अर्थात् कलुषतारहित था। भगवान् कषाय से रहित तथा ज्ञानावरणादि कर्मों के वन्धन से मुक्त थे। जैसे इन्द्र का प्रभाव देवों पर होता है, उसी तरह भगवान् का प्रभाव भी प्रायः प्राणी मात्र पर था ॥८॥

गाथा--से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए,

सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।

सुरालए वासिमुदागरे से,

विरायए णेगगुणोववेए ॥९॥

छाया--स वीर्येण प्रतिपूर्णवीर्यः,

सुदर्शन इव नगसर्वश्रेष्ठः ।

सुरालयवासिमुदाकरः स-

विराजतेऽनेकगुणोपपेतः ॥९॥

अन्वयार्थ--**(से)** भगवान् **(वीरिएणं)** बल से **(पडिपुन्नवीरिए)** पूर्णशक्तिवाले थे, तथा **(वा)** जैसे **(सुदंसणे)** सुमेरु पर्वत **(णगसव्वसेट्ठे)** सब पर्वतो में श्रेष्ठ है, उसी प्रकार प्रभु महावीर भी सर्वश्रेष्ठ थे । और सुमेरु जैसे **(सुरालयवासिमुदागरे)** देवों को हर्ष पैदा करने वाला होता है, वैसे ही भगवान् सब को हर्ष पैदा करनेवाले थे, तथा सुमेरु जैसे **(णेगगुणोववेए)** अनेक गुणों से शोभित होता है **(से)** भगवान् भी अनेक उत्तमोत्तम गुणों से शोभायमान थे ॥

भावार्थ--भगवान् का वीर्यान्तराय कर्म बिलकुल नष्ट हो गया था । अतएव उनमें अनन्त वीर्य-अनन्त शक्ति का प्रादुर्भाव हो गया था । सुमेरु पर्वत जैसे सब पर्वतो में श्रेष्ठ है, भगवान् भी शक्ति आदि गुणों से सर्वश्रेष्ठ थे । तथा स्वर्ग जैसे देवों को हर्षजनक होता है, उसी प्रकार सुमेरु भी हर्ष जनक है. और उसी प्रकार भगवान् भी प्राणीमात्र के हर्ष के उत्पादक थे । सुमेरु जैसे अनेक गुणों से-सुनहरी रंग, चन्दनादि गंध और उत्तम फलों से-शोभित होता है. भगवान् भी ज्ञान, शक्ति, आदि गुणों से विराजमान थे ॥९॥

गाथा--सयं सहस्साण उ जोयणाणं,

तिकंडगे पंडगवेजयंते ।

से जोयणे णवणवते सहस्से,

उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १० ॥

छाया--शतं सहस्राणां तु योजनानाम्,
त्रिकण्डकः पण्डकवैजयन्तः ।
स योजने नवनवतिसहस्रे,
उच्छ्रितोऽधः सहस्रमेकम् ॥ १० ॥

अन्वयार्थ--(**से**)वह सुमेरु पर्वत (**सयं सहस्साण**) एक लाख (**जोयणाणं**) योजन का है (**तिकंडगे**) तीन भाग वाला है (**पंडगवेजयंते**) जिसकी पाण्डुक वन ध्वजा है, तथा (**णवणवते**) (९९)निन्यानवे (**सहस्से**)हजार (**जोयणे**) योजन (**उद्धुस्सिते**) ऊँचा है, और (**एगं**) एक (**सहस्सं**) हजार (**हेट्टं**) नीचा है ॥

भावार्थ--इस गाथा मे भगवान् की उपमाभूत सुमेरुगिरि का वर्णन किया गया है । सुमेरु एक लाख योजन ऊँचा है, निन्यानवे हजार योजन ऊपर तथा एक हजार योजन नीचे है । इसके तीन कंटक- भाग हैं तीन कण्टकों मे से सबसे ऊपर वाले कण्टक पर पण्डुक वन है । वह ऐसा जान पड़ता है, मानो ध्वजा है । यह सुमेरु पर्वत जैसे समस्त मध्यलोक में व्याप्त है, भगवान् के ज्ञान और दर्शन आदि गुण भी समस्त लोकालोक में व्याप्त है ॥ १० ॥

गाथा--**पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए,**
जं सूरिया अणुपरिवट्टयंन्ति ।
से हेमवन्ने बहुनंदणे य,
जंसी रतिं वेदयन्ती महिंदा ॥११॥

छाया--स्पृष्टो नभसि तिष्ठति भूम्यवस्थितः,
यं सूर्या अनुपरिवर्त्तयन्ति ।

स हेमवर्णो बहुनन्दनश्च,

यस्मिन् रतिं वेदयन्ति महेन्द्राः ॥११॥

अन्वयार्थ–(**से**) वह सुमेरु (**णभे**) आकाश को (**पुट्टे**) स्पर्श करके (**चिट्ठइ**) स्थित है, तथा (**भूमिवट्टिए**) भूमि को छूकर स्थित है (**जं**) जिसकी (**सूरिया**) सूर्य (**अणुपरिवट्टयंति**) प्रदक्षिणा करते है, और जो (**हेमवन्ने**) सोने की जैसी कान्ति वाला है, जिसमें (**बहु**) बहुत अर्थात् चार (**नंदणे**) नन्दनादि वन है, (**जंसी**) तथा जिस में (**महिंदा**) महेन्द्र आकर (**रतिं**) रति का (**वेदयती**) अनुभव करते है ॥

भावार्थ--फिर भी सुमेरु का वर्णन करते है-वह सुमेरु पर्वत ऊपर आकाश को व्याप्त करके तथा नीचे भूमि को स्पर्श करके स्थित है, अतएव वह ऊर्ध्वलोक अधोलोक और तिर्यक्लोक को स्पर्श करने वाला है। ज्योतिष्क विमान उसकी प्रदक्षिणा किया करते है। उसका रंग सोने का सा पीला है। उसके ऊपर चार वन है। भूमि में भद्रशाल वन है, उसके पांच सौ योजन ऊपर नन्दन वन है, उसके बासठ हजार योजन ऊपर सौमनस वन है, उसमें छत्तीस हजार योजन ऊपर पाण्डुक वन है। [illegible] वह अनेक क्रीडास्थलों से युक्त है। और उसमें देव और देवेन्द्र [illegible] रतिक्रीड़ा का अनुभव करते है ॥११॥

मू.गा–से पव्वए सद्दमहप्पगासे,

विरायती(ति) कंचणमट्ठवन्ने।

अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे,

गिरीवरे से जलिए व भोमे॥१२॥

छाया–[illegible]

[illegible]

अनुत्तरो गिरिषु च पर्वदुर्गो,
गिरिवरः स ज्वलितो भौम इव ॥१२॥

अन्वयार्थ--(**से**)वह(**पव्वए**)सुमेरु पर्वत(**सद्दमहप्पगासे**)शब्द से गुंजायमान है, तथा(**कंचणमट्ठवन्ने**) सोने की तरह पीले वर्ण वा (**विराजते**) शोभित होता है (**गिरिसु**)सब पर्वतों में (**अणुत्तरे**) है (**पव्वदुग्गे**) पर्व अर्थात् मेखला आदि के कारण दुर्गम है, और (**से**) वह (**गिरिवरे**)सब में प्रधान सुमेरु (**भोमे व**)पृथ्वी की तरह (**जलि**... कान्ति वाला है ॥१२॥

भावार्थ--शब्द का स्वभाव ही गूंजने का है। छोटे २ पर्वत औ मकानो के पास भी अगर आवाज़ की जाती है, तो प्रतिध्वनि होती है और वह भी इतनी तेज़ कि पहला शब्द भी उतना जोर का नहीं होत सुमेरु पर्वत देवताओ का क्रीडास्थान है, अतएव वह भी उन के द्वा की गई ध्वनियों से गूंजता है, और वह गूंज प्रबल होती है। इसी त परमात्मा महावीर स्वामी की दिव्यध्वनि प्रबल होती है और ज़ोरदार होती है, यही कारण है कि भगवान् के सदुपदेश का अमिट तथा शी प्रभाव होता है। पर्वत के पीले रंग की भांति महावीर स्वामी का पी रंग का शरीर दर्शनीय था। जैसे सुमेरु पर चढ़ना मुश्किल है, उ प्रकार भगवान् को जीतना भी टेढ़ी खीर है, क्योंकि भगवान् सर्वज्ञ थे ॥१२

गाथा--**महीइ मज्झम्मि ठिये णगिंदे,**
पन्नायते सूरियसुद्धलेसे।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने,
मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥

छाया—मह्यां मध्ये स्थितो नगेन्द्रः

प्रज्ञायते सूर्यवच्छुद्धलेश्यः ।

एवं श्रिया तु स भूरिवर्णः

मनोरमो द्योतयत्यर्चिमालीव ॥१३॥

अन्वयार्थ—(**महीइ**) पृथ्वी के (**मज्झम्मि**) मध्य में (**ठिये**) स्थित (**णगिंदे**) पर्वतों में प्रधान सुमेरु (**पन्नायते**) लोक में उत्कृष्ट रूप से जाना जाता है, तथा (**सूरियसुद्धलेसे**) सूर्य के जैसे शुद्ध तेज वाला (**एवं**) पूर्वोक्त प्रकार की (**सिरीए**) लक्ष्मी से (**उ**) विशेष प्रकार से (**भूरिवन्ने**) विचित्र २ रत्नों से शोभित होने से अनेक वर्ण वाला (**मणोरमे**) मनोहर (**अच्चिमाली**) सूर्य की तरह (**जोयइ**) दशों दिशाओं को प्रकाशित करता है ॥

भावार्थ—रत्नप्रभा पृथ्वी के मध्यदेश में जम्बूद्वीप है, और जम्बूद्वीप के ठीक बीच में सब पर्वतों में प्रधान सुमेरु पर्वत है; क्योंकि सुमेरु पर्वत २ धात की खण्ड और २ अर्द्धपुष्कर द्वीप में भी हैं, किन्तु उनकी ऊंचाई ८४ हजार योजन ही है. और जम्बूद्वीप के मध्यभागस्थ सुमेरु एक लाख योजन ऊंचा है; इसलिए यह पर्वत सब पर्वतों में प्रधान कहा जाता है। इसी प्रकार ऋषि मुनि और महात्मा तो बहुत हैं, किन्तु उन सब में भगवान् महावीर प्रधान थे। सुमेरु पर सूर्य की प्रभा पड़ने से जैसे वह चमकने लगता है भगवान का शरीर भी वैसा ही चमकदार एवं प्रभाशाली था। भगवान अष्ट प्रातिहार्य आदि लक्ष्मी से शोभायमान थे, और अज्ञानान्धकार को नाश करने वाले थे। सूरियसुद्धलेसे तथा अच्चिमाली जोयइ इन दो शब्दों से यह मालूम होता है कि भगवान का शरीर स्वयं प्रकाशमान था, तथा वह जगत् को ज्ञान का प्रकाश भी देते थे ॥१३॥

अनुत्तरो गिरिषु च पर्वदुर्गो,
गिरिवरः स ज्वलितो भौम इव ॥१२॥

अन्वयार्थ--(**से**)वह(**पव्वए**)सुमेरु पर्वत(**सद्दमहप्पगासे**)शब्द
से गुंजायमान है, तथा(**कंचणमट्ठवन्ने**) सोने की तरह पीले वर्ण वा
(**विराजते**) शोभित होता है (**गिरिसु**)सब पर्वतों में (**अणुत्तरे**)
है (**पव्वदुग्गे**) पर्व अर्थात् मेखला आदि के कारण दुर्गम है, और (**से**)
वह (**गिरिवरे**)सब में प्रधान सुमेरु (**भोमे व**)पृथ्वी की तरह (**जलि**
कान्ति वाला है ॥१२॥

भावार्थ--शब्द का स्वभाव ही गूंजने का है। छोटे २ पर्वत और
मकानो के पास भी अगर आवाज़ की जाती है, तो प्रतिध्वनि होती
और वह भी इतनी तेज़ कि पहला शब्द भी उतना जोर का नहीं होत
सुमेरु पर्वत देवताओ का क्रीड़ास्थान है, अतएव वह भी उन के द्व
की गई ध्वनियों से गूंजता है, और वह गूंज प्रबल होती है। इसी त
परमात्मा महावीर स्वामी की दिव्यध्वनि प्रबल होती है और ज़ोरदार
होती है, यही कारण है कि भगवान् के सदुपदेश का अमिट तथा श
प्रभाव होता है। पर्वत के पीले रंग की भांति महावीर स्वामी का प
रंग का शरीर दर्शनीय था। जैसे सुमेरु पर चढ़ना मुश्किल है, उ
प्रकार भगवान् को जीतना भी टेढ़ी खीर है, क्योंकि भगवान् सर्वज्ञ थे ॥१

गाथा--महीइ मज्झम्मि ठिये णगिंदे,
पन्नायते सूरियसुद्धलेसे।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने,
मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥

छाया—मह्यां मध्ये स्थितो नगेन्द्रः

प्रज्ञायते सूर्यवच्छुद्धलेश्यः ।

एवं श्रिया तु स भूरिवर्णः

मनोरमो द्योतयत्यर्चिमालीव ॥१३॥

अन्वयार्थ—(**महीइ**) पृथ्वी के (**मज्झम्मि**) मध्य में (**ठिये**) स्थित (**णगिंदे**) पर्वतो में प्रधान सुमेरु (**पन्नायते**) लोक में उत्कृष्ट रूप से जाना जाता है, तथा (**सूरियसुद्धलेसे**) सूर्य के जैसे शुद्ध तेज वाला (**एवं**) पूर्वोक्त प्रकार की (**सिरीए**) लक्ष्मी से (**उ**) विशेष प्रकार से (**भूरिवन्ने**) विचित्र २ रत्नो से शोभित होने से अनेक वर्ण वाला (**मणोरमे**) मनोहर (**अच्चिमाली**) सूर्य की तरह (**जोयइ**) दशो दिशाओ को प्रकाशित करता है ॥

भावार्थ—रत्नप्रभा पृथ्वी के मध्यदेश में जम्बूद्वीप है, और जम्बूद्वीप के ठीक बीच में सब पर्वतो में प्रधान सुमेरु पर्वत है; क्योकि सुमेरु पर्वत २ धात की खण्ड और २ अर्द्धपुष्कर द्वीप में भी हैं, किन्तु उनकी ऊचाई ८५ हजार योजन ही है, और जम्बूद्वीप के मध्यभागस्थ सुमेरु एक लाख योजन ऊंचा है; इसलिए यह पर्वत सब पर्वतों में प्रधान कहा जाता है। इसी प्रकार ऋषि मुनि और महात्मा तो बहुत हैं, किन्तु उन सब में भगवान् महावीर प्रधान थे। सुमेरु पर सूर्य की प्रभा पड़ने से जैसे वह चमकने लगता है भगवान् का शरीर भी वैसा ही चमकदार एवं प्रभाशाली था। भगवान् अष्ट प्रातिहार्य आदि लक्ष्मी से शोभायमान थे, और अज्ञानान्धकार को नाश करने वाले थे। सूरियसुद्धलेसे तथा अच्चिमाली जोयइ इन दो शब्दो से यह मालूम होता है कि भगवान् का शरीर स्वयं प्रकाशमान था, तथा वह दूसरों को ज्ञान का प्रकाश भी देते थे ॥१३॥

गाथा—सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स,

पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।

एतोवमे समणे नायपुत्ते,

जाईजसोदंसणनाणसीले ॥ १४ ॥

छाया—सुदर्शनस्येव यशो गिरेः,

प्रोच्यते महतः पर्वतस्य ।

एतदुपमः श्रमणो ज्ञातपुत्रो,

जातियशोदर्शनज्ञानशीलः ॥ १४ ॥

अन्वयार्थ—(महतो) महान् **(पव्वयस्स)** पर्वत **(सुदंसणस्सेव)** सुदर्शन **(गिरिस्स)** मेरु पर्वत का **(जसो)**यश-कीर्ति जैसे कहा है उसी प्रकार **(पवुच्चइ)** भगवान् की कीर्ति करते है **(एतोवमे)** पूर्वकथित उपमा से उपमित **(समणे)**श्रमण **(नायपुत्ते)** ज्ञातपुत्र भगवान् महावीर **(जाईजसोदंसणनाणसीले)**जाति, यश, दर्शन, ज्ञान, और शील में श्रेष्ठ थे ॥

भावार्थ--भगवान् की एकदेशीय उपमा सुमेरु पर्वत से दी गई थी। और इसी प्रसंग को लेकर सुमेरु का कीर्तिगान किया है । अब फिर उपमेय का अर्थात् भगवान् महावीर का वर्णन करते है—कि ज्ञातवंश के क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए भगवान् समस्त जाति वालो मे, तमाम यशस्वी लोगो में, समस्त ज्ञानवालो तथा दर्शनवालो में और सब चारित्रनिष्ठ पुरुषो में श्रेष्ठ थे ॥१४॥

गाथा--गिरी (रि) वरे वा निसहाऽऽययाणं,

रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।

तओवमे से जगभूइपन्ने,

मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥

छाया--गिरिवरो वा निषध आयतानां,

रुचक इव श्रेष्ठो वलयायतानाम ।

तदुपमः स जगति भूतिप्रज्ञः,

मुनीनां मध्ये तमुदाह प्रज्ञः ॥ १५ ॥

अन्वयार्थ--**(वा)** जैसे **(निसह)** निषध **(आययाणं)** लम्बे-पर्वतो में **(गिरिवरे)** श्रेष्ठ पर्वत है तथा **(व)** जैसे **(रुयए)** रुचक पर्वत **(वलयाययाणं)** गोल पर्वतो मे **(सेट्ठे)** श्रेष्ठ है **(तओवमे)** उन की तरह **(से)** भगवान् महावीर भी **(जगभूइपन्ने)** संसार में प्रभूत प्रज्ञा वाले हैं । अतः **(पन्ने)** प्रकृष्टज्ञानवालो ने **(तं)** उन्हें **(मुणीण)** सब मुनियो के **(मज्झे)** मध्य में **(उदाहु)** उत्कृष्ट कहा है ॥

भावार्थ--हरिवास क्षेत्र के पर्वत का नाम निषध पर्वत है । वह लम्बाई में सबसे बड़ा है तथा रुचक नाम का पर्वत गोलाई में अद्वितीय है । इस के समान दूसरा नही है । उसी प्रकार भगवान् महावीर भी ज्ञान में अद्वितीय थे । उन के जैसा पूर्णज्ञानी उन समय कोई दूसरा नहीं था । अतएव बुद्धिमानो ने उन्हे उत्कृष्ट कहा है ॥१५॥

गाथा--अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता,

अणुत्तरं झाणवरं झियाइ ।

सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं,

संखिंदुएगंतऽवदातसुक्कं ॥१६॥

छाया--अनुत्तरं धर्ममुदीरयित्वा,

अनुत्तरं ध्यानवरं ध्यायति ।

सुशुक्लशुक्लमपगण्डशुक्लं,
शंखेन्द्वेकान्तावदातशुक्लम् ॥१६॥

अन्वयार्थ–(**अणुत्तरं**) सब से उत्तम (**धम्मं**) धर्म को (**ईरइत्ता**) कहकर भगवान् (**अणुत्तरं**) प्रधान (**झाणवरं**) व्यु क्रियानिवृत्ति नाम के ध्यान को (**झियाइ**) ध्याते है। अर्थात् (**सुसुक सुक्कं**) उत्तम श्वेत वस्तु की तरह वह शुक्ल ध्यान, जोकि (**अप डसुक्कं**) अर्जुन सोने की तरह अथवा जल के फेन की तरह, या (**संखि दुएगंतऽवदातसुक्कं**) शंख और चन्द्रमा की तरह शुभ्र है, उस भगवान् ने ध्यान किया ॥

भावार्थ--भगवान् श्रीमहावीर ने ऐसे धर्म का उपदेश दिया, जो समस्त धर्मों में प्रधान है, तथा शुक्लध्यान को धारण किया। वह शुक्ल अर्जुन सोने की तरह, जल के फेन की तरह, शंख की तरह तथा चन की तरह स्वच्छ है। भगवान् सूक्ष्मकाययोग का निरोध करते हुए ध्यान के तीसरे भेद सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति नामक ध्यान को ध्याते है, जब योग का निरोध कर चुकते है, तब व्युपरतक्रियानिवृत्ति नाम के थे शुक्ल ध्यान को धारण करते है ॥१६॥

गाथा--**अणुत्तरग्गं परमं महेसी,**
असेसकम्मं स विसोहइत्ता।
सिद्धिं गते साइमणंत पत्ते,
नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥

छाया–अनुत्तराग्र्यां परमां महर्षिः,
अशेषकर्माणि स विशोध्य।

सिद्धिं गतः साद्यनन्तां प्राप्तः,
ज्ञानेन शीलेन च दर्शनेन॥ १७ ॥

अन्वयार्थ--(**स**) वह (**महेसी**) महर्षि भगवान् (**असेसकम्मं**) सब कर्मों को (**विसोहइत्ता**) पूरी तरह नष्ट करके (**अणुत्तरग्गं**) सर्व प्रधान, तथा लोकाग्र में (**गते**)स्थित हुए (**साइमणंत**) और सादि अनन्त, तथा (**परमं**) उत्कृष्ट (**सिद्धिं**) सिद्धि को (**नाणेण**) ज्ञान (**सीलेण**) शील(**य**) और (**दंसणेण**)दर्शन के द्वारा (**पत्ते**)प्राप्त हुए॥

भावार्थ--भगवान् ने क्षायिक ज्ञान, क्षायिकदर्शन, और क्षायिकचारित्र के द्वारा सर्वोत्तम लोकाग्र में पहुंचानेवाली मुक्ति को सब कर्मों का नाश कर के प्राप्त किया था। वह मुक्ति सादि और अनन्त है। कई लोग जीव मोक्ष से वापिस आजाता है ऐसा मानते हैं, किन्तु वह युक्तियुक्त नहीं है। क्यो कि संसार में घुमाने वाले राग, द्वेष, क्रोध मान, माया आदि विकार है। जब तक ये विकार मौजूद रहते हैं, तब तक मुक्ति नही मिलती। अतएव मुक्त जीव के विकार नही होते। और जिस के ये विकार नहीं है, वह संसार मे कैसे घूम सकता है? अर्थात् मुक्तात्मा रागादि विकारों से रहित होने के कारण संसार मे वापिस नहीं आसकते। यदि रागादि का सद्भाव माना जाय तो मुक्ति ही नहीं हो सकती। यदि बाद में पैदा होते हैं, ऐसा कहा जाय तो वह भी ठीक नहीं है। क्यों कि विकारो को विकार ही पैदा करते हैं। जब मुक्तात्मा निर्विकार है, तो विकार पैदा ही नही हो सकते ॥१७॥

गाथा--रुक्खेसु णाए जह सामली वा,
जस्सि रतिं वेदयती सुवन्ना।

वणेसु वा नंदणमाहु सेट्ठं,
नाणेण सीलेण य भूइपन्ने ॥ १८ ॥

छाया-- *वृक्षेषु ज्ञातो यथा शाल्मली वा,*
यस्मिन् रतिं वेदयन्ति सुपर्णाः ।
वनेषु वा नन्दनमाहुः श्रेष्ठ,
ज्ञानेन शीलेन च भूतिप्रज्ञः ॥ १८ ॥

अन्वयार्थ--(जह) जैसे **(रुक्खेसु)** वृक्षों में **(सामली)** शाल्मली वृक्ष **(वा)** तथा **(वणेसु)** वनों में **(नंदणं)** नन्द‍न वन **(सेट्ठं)** श्रेष्ठ **(णाए)**समझा जाता है **(जंसि)** जिसमें नि‍ **(सुवन्ना)** सुपर्णकुमार नामक भवनवासी देव **(रतिं)** रम‍ क्रीडा का **(वेदयंती)** अनुभव करते है उसी प्रकार भगवा‍न **(नाणेण)** ज्ञान से **(य)** और **(सीलेण)**चारित्र से श्रेष्ठ तथ‍ा **(भूइपन्ने)** प्रभूत ज्ञानशाली **(आहु)** कहे जाते है ॥

भावार्थ--जैसे सब वृक्षों में शाल्मली(सेमल) का वृक्ष प्रधान ए‍वं श्रेष्ठ है । वह शाल्मली वृक्ष पृथ्वीकाय का है तथा नित्य है , तथा संसा‍र के समस्त वनो मे नन्दन वन जैसे उत्तम है , क्योकि इन दोनो जगह व‍ह रहने वाले , तथा बाहर से आने वाले सुपर्णकुमार जाति के भवनवासी देव आनन्द क्रीड़ा करते तथा नानाप्रकार के विलास करते हैं , उसी प्रका‍र भगवान् महावीर भी सब में उत्तम थे । क्योंकि उस समय भगवान् महा-वीर की बराबरी करने वाला न तो कोई ज्ञानवान् ही था और न चारि‍त्र धारण करने वाला ही था । इस प्रकार सेमल वृक्ष तथा नन्दनवन की उपमा देकर भगवान् की स्तुति की गई है ॥१८ ॥

गाथा--थणियं व सद्दाण अणुत्तरं उ,
चंदो व ताराण महाणुभावे ।

गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं,

एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥१९॥

छाया—स्तनितं वा शब्दानामनुत्तरं तु,

चन्द्रो वा ताराणां महानुभावः ।

गन्धेषु वा चन्दनमाहुः श्रेष्ठ-

मेवं मुनीनामप्रतिज्ञमाहुः ॥१९॥

अन्वयार्थ—(**व**) जैसे (**थणियं**) मेघ की गर्जना (**सद्दाण**) सब शब्दो में (**अणुत्तरं उ**) प्रधान है और (**व**) जैसे (**चंदो**) चन्द्रमा (**ताराण**) सब तारों में (**महाणुभावे**) मनोहर है (**वा**) अथवा (**गंधेसु**) सब सुगंधि-द्रव्यो में (**चंदणं**) चन्दन को (**सेट्ठं**) श्रेष्ठ (**आहु**) कहते हैं (**एवं**) इसी प्रकार भगवान् को भी (**मुणीणं**) सब मुनियो की अपेक्षा (**अपडिन्नं**) इस लोक और परलोक की प्रतिज्ञा-कामना से विरक्त (**आहु**) कहते है ॥

भावार्थ—जैसे सब शब्दों में मेघ की गर्जना का शब्द बड़ा प्रबल होता है । सब शब्द उससे नीचे दर्जे के ही है, तथा सब नक्षत्र मण्डल में चन्द्रमा सब से सुन्दर है, अतएव प्रधान है, और सब सुगंध-वाले पदार्थों मे मलयज चन्दन उत्तम है, उसी प्रकार समस्त मुनियों मे भगवान् महावीर उस समय सब से प्रधान थे, क्योंकि उन्हें इस लोक और परलोक सम्बन्धी किसी भी विषय की कामना न थी ॥१९॥

गाथा—जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे,

नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठं ।

खोओदए वा रसवेजयंते,

तवोवहाणे मुणि वेजयंते ॥२०॥

छाया—यथा स्वयम्भूरुदधीनां श्रेष्ठो,
नागेषु वा धरणेन्द्रमाहुः श्रेष्ठं ।
क्षोदोदकं वा रसवैजयन्त -
स्तपउपधानेन मुनिर्वैजयन्तः ॥२०॥

अन्वयार्थ—**(जहा)** जैसे **(सयंभू)** स्वयम्भूरमण समुद्र **(उदहीण)** सब समुद्रों में **(सेट्ठे)** श्रेष्ठ है **(वा)** तथा **(धरणिंदं)** धरणेन्द्र **(नागेसु)** नागकुमार जाति के भवनवासी देवों में **(सेट्ठं)** श्रेष्ठ है **(वा)** और **(खो-ओदए)** इक्षुरस **(रसवेजयंते)** सब रसों में प्रधान है, उसीप्रकार **(तवोवहाणे)** विशिष्ट तप के द्वारा **(मुणि)** भगवान् को **(वेजयंते)** प्रधान **(आहु)** कहते हैं ॥

भावार्थ—समस्त समुद्रों में स्वयंभूरमण समुद्र प्रधान है। क्योंकि यहां अनेक प्रकार के देव आकर क्रीड़ा करते हैं, तथा अपने चित्त को प्रसन्न करते हैं। उसी प्रकार सब ऋषि मुनियों में भगवान् प्रधान थे, क्योंकि वे भी अज्ञात विषयों का ज्ञान कराकर लोगों का चित्त प्रसन्न कर देते थे। तथा नागकुमार-भवनवासियो में धरणेन्द्र जिस तरह प्रधान है, अथवा समस्त रसों मे गन्ने का रस जैसे प्रधान है, उसी तरह भगवान् भी सब लोगो मे प्रधान थे ॥२०॥

गाथा—**हत्थीसु एरावणमाहु णायं,**
सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे
निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥२१॥

छाया—हस्तिष्वैरावणमाहुर्ज्ञात,
सिंहो मृगाणां सलिलानां गङ्गा ।

पक्षिषु वा गरुत्मान् वेणुदेवो.

निर्वाणवादिनामिह ज्ञातपुत्रः ॥२१॥

अन्वयार्थ--जैसे(**हत्थीसु**)सब हाथियों में(**एरावणं**)ऐरावत हाथी(**णाए**)प्रधान है,(**मिगाणं**)पशुओ में(**सीहो**)सिंह जैसे प्रधान है(**सलिलाण**)जलों में(**गंगा**)महागंगा का जल प्रधान है (**वा**)और (**पक्खीसु**)पक्षियो में(**वेणुदेवे**)वेणुदेव अर्थात्(**गरुले**)गरुड़ पक्षी प्रधान है, उसी प्रकार(**इह**)समस्त संसार में(**निव्वाणवादीणं**)मोक्ष माननेवालो के मध्य (**णायपुत्ते**)भागवान् महावीर को प्रधान (**आहु**) कहते है ॥

भावार्थ--सब हाथियो में ऐरावत हाथी प्रधान है वह अपना चाहे जैसा रूप बना सकता है। ऐरावत हाथी का वर्णन साहित्य में सफेद किया जाता है। सफेद हाथी जहा होता है वहा की श्री-वृद्धि होती है। जब से भगवान् गर्भ में आये थे, तब ही से महाराज सिद्धार्थ की श्री-वृद्धि हुई थी। इसी से भगवान् का नाम भी वर्द्धमान पड़ गया था। इसीलिए कहा गया है कि सब हाथियो मे ऐरावत हाथी की नाई, तथा पशुओ मे सिंह के समान, जलो में महागंगा के जल की तरह और पक्षियों मे गरुड़ पक्षी की तरह भगवान् समस्त मोक्ष वादियो में प्रधान थे; क्योकि भगवान् ने ही मोक्ष का यथार्थ स्वरूप और मार्ग बताया है ॥२१॥

गाथा--**जोहेसु णाए जह वीससेणे,**

पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।

खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के,

इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥२२॥

छाया--योधेषु ज्ञातो यथा विश्वसेनः.

पुष्पेषु च यथाऽरविंदमाहुः ।

क्षत्रियाणां श्रेष्ठो यथा दान्तवाक्यः,
ऋषीणां श्रेष्ठस्तथा वर्द्धमानः ॥२२॥

अन्वयार्थ--(**जह**) जैसे (**जोहेसु**) योद्धाओं में (**वीससेणे**) चक्रवर्ती (**णाए**) प्रधान है (**वा**) और (**पुप्फेसु**) फूलों में (**अरविंद**) कमल सुगन्धिवाला है तथा (**जह**) जैसे (**खत्तीण**) क्षत्रियों में (**दंतवक्के**) चक्रवर्ती (**सेट्ठे**) प्रधान है (**तह**) उसी प्रकार (**इसीण**) ऋषियों में (**वद्धमाणे**) भगवान् वर्द्धमान स्वामी को (**सेट्ठे**) प्रधान (**आहु**) कहते है ॥

भावार्थ--चक्रवर्त्ती के चौरासी लाख हाथी, चौरासी लाख घोड़े और छियानवे करोड़ पैदल सेना होती है, और वह खुद भी वीस लाख अष्टापदो के बल बराबर बल वाला होता है, अतएव चक्रवर्त्ती से, अथवा वासुदेव से बढ़िया कोई दूसरा योद्धा नहीं हो सकता। तथा सब सुगंधि वाले पुष्पो में कमल प्रधान होता है और समस्त क्षत्रियो में जैसे चक्रवर्त्ती प्रधान है, उसी तरह भगवान् महावीर उस समय के समस्त ऋषिमुनियों में श्रेष्ठ थे ॥२२॥

गाथा--**दाणाण सेट्ठं अभयप्पदाणं,**
सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं,
लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥

छाया--*दानानां श्रेष्ठं अभयप्रदानं,*
सत्येषु वाऽनवद्य वदन्ति ।
तपस्सु वोत्तम ब्रह्मचर्यं,
लोकोत्तमः श्रमणो ज्ञातपुत्रः ॥२३॥

क्षत्रियाणां श्रेष्ठो

ऋषीणां श्रेष्ठस्त

अन्वयार्थ--(**जह**) जैसे (**जोहे**
चक्रवर्ती (**णाए**) प्रधान है (**वा**) और (
कमल सुगन्धिवाला है तथा (**जह**) जैसे
चक्के) चक्रवर्त्ती (**सेट्ठे**) प्रधान है (**तह**,
षियों में (**वद्धमाणे**) भगवान् वर्द्धमान स्वा
कहते हैं ॥

भावार्थ--चक्रवर्ती के चौरासी लाख
और छियानवे करोड़ पैदल सेना होती है, अ
अष्टापदों के बल बराबर बल वाला होता है, अतएव
देव से बढ़िया कोई दूसरा योद्धा नहीं हो सकता
पुष्पों में कमल प्रधान होता है और समस्त
प्रधान है, उसी तरह भगवान् महावीर उस सम
में श्रेष्ठ थे ॥२२॥

गाथा--**दाणाण सेट्ठं अभयप्पदाणं,**
सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं,
लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते

छाया--दानानां श्रेष्ठ अभयप्रदानं,
सत्येषु वाऽनवद्यं वदन्ति ।
तपस्सु वोत्तमं ब्रह्मचर्यं,
लोकोत्तमः श्रमणो ज्ञातपुत्रः ॥२३॥

ादि को सहने वाले तथा (धुणति) अष्ट कर्मों को दूर करते है, (विग-
ागेही) अभिलाषा से रहित तथा जो (सणिणहिं) द्रव्य आदि का सं
ाय (न) नहीं (कुव्वति) करते, (आसुपन्ने) और जिनका ज्ञान सदा
ापयोग वाला है (समुद्दं) समुद्र की (व) भांति (महाभवोघं) पर्यायों
ा समूहरूप संसार को (तरिउं) तैरकर (अभयंकरे) अपने और दू-
सरों द्वारा जीवों की रक्षा करने वाले और (अणंतचक्खू) अनन्त ज्ञा-
नवान् थे ॥

भावार्थ--संसार के प्राणी पृथ्वी पर सब प्रकार के कार्य कर-
ते है, किन्तु पृथ्वी किसी पर क्रोध नहीं करती, वह सब कुछ सहन क-
रती है। इसी तरह भगवान् महावीर भी परीषह और उपसर्ग आदि सब
सहन करते थे, न किसी पर अप्रसन्न होते और न प्रसन्न। पृथ्वी जिस त-
रह सबका आधार है, भगवान् भी रक्षक होने से जीवों के आधार रूप
थे। प्रभु महावीर आठ कर्मों से रहित. बाह्य वस्तुओं की ममता से रहित थे,
तथा उन्हें किसी वस्तु के जानने के लिए छद्मस्थ की तरह सोचने विचारने
की आवश्यकता न थी क्यों कि भगवान हर एक समय उपयोगात्मक ज्ञान
से युक्त थे, तथा अनेक दुःखो से भरे हुए संसाररूपी समुद्र को तिरकर
मुक्त होने वाले, स्वयं जीवों की रक्षा करनेवाले और उपदेश देकर दूसरों से रक्षा
कराने वाले, तथा अनन्त पदार्थों को जानने मे अनन्त ज्ञानवान् थे ॥२५॥

गाथा--कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एआणि वंता अरहा महेसी,
ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥२६॥

छाया--क्रोधञ्च मानञ्च तथैव मायां,
लोभं चतुर्थमध्यात्मदोषान्।

ण) सब सभाओं में (**सुहम्मा**) सौधर्म इन्द्र की (**सभा**) सभा(**सेट्ठा**) श्रेष्ठ है, (**सव्वधम्मा**) संसार के सब धर्म (**निव्वाणसेट्ठा**) मोक्षप्रधान हैं किन्तु (**णायपुत्ता**) भगवान् महावीर से (**परम्र्**) उत्तम (**णाणी**) ज्ञानी (**न**) कोई भी नहीं (**अत्थि**) है ॥

भावार्थ--उत्कृष्ट स्थिति में सर्वार्थसिद्धि के देव प्रधान हैं, क्योंकि सुखपूर्वक रहते हुए इतनी स्थिति पांचवे अनुत्तर विमान के देवों के सिवाय और किसी की नहीं है, उनके बराबर सुख भी किसी दूसरे को नहीं है, तथा जिस तरह सौधर्म इन्द्र की सभा अन्य सभाओं मे उत्तम है, और सब आस्तिक (परलोक, स्वर्ग, नरक, आत्मा आदि पदार्थों को मानने वाले) धर्मों का फल एक मुक्ति ही है, क्योंकि मिथ्यात्व मार्ग की पुष्टि करने वाले भी अपने को मोक्ष को प्रधान मानने वाले कहते हैं, उसी तरह भगवान् भी समस्त ज्ञानियो में उत्कृष्टज्ञानी थे, उस समय उनकी बराबरी करने वाला कोई दूसरा न था ॥२४॥

गाथा--**पुढोवमे धुणइ विगयगेही,**
न सण्णिहिं कुव्वति आसुपन्ने ।
तरिउं समुद्दं व महाभवोघं,
अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥२५॥

छाया--*पृथिव्युपमो धुनाति विगतगृद्धि-*
र्न सन्निधिं करोति आशुप्रज्ञः ।
तरित्वा समुद्रमिव महाभवोघ-
मभयङ्करो वीरोऽनन्तचक्षुः ॥२५॥

अन्वयार्थ--(**वीर**) भगवान् महावीर (**पुढोवमे**) पृथ्वी की तरह सब के आधार भूत अथवा पृथ्वी की तरह परीषह और उपसर्ग

आदि को सहने वाले तथा **(धुणति)** अष्ट कर्मों को दूर करते हैं, **(विगयगेद्धी)** अभिलाषा से रहित तथा जो **(सण्णिहिं)** द्रव्य आदि का संचय **(न)** नहीं **(कुव्वति)** करते, **(आसुपन्ने)** और जिनका ज्ञान सदा उपयोग वाला है **(समुद्दं)** समुद्र की **(व)** भांति **(महाभवोघं)** पर्यायों के समूहरूप संसार को **(तरिउं)** तैरकर **(अभयंकरे)** अपने और दूसरों द्वारा जीवों की रक्षा करने वाले और **(अणंतचक्खू)** अनन्त ज्ञानवान् थे ॥

भावार्थ--संसार के प्राणी पृथ्वी पर सब प्रकार के कार्य करते है, किन्तु पृथ्वी किसी पर क्रोध नहीं करती, वह सब कुछ सहन करती है। इसी तरह भगवान् महावीर भी परीषह और उपसर्ग आदि सब सहन करते थे, न किसी पर अप्रसन्न होते और न प्रसन्न। पृथ्वी जिस तरह सबका आधार है, भगवान् भी रक्षक होने से जीवों के आधार रूप थे। प्रभु महावीर आठ कर्मों से रहित. बाह्य वस्तुओं की ममता से रहित थे, तथा उन्हें किसी वस्तु के जानने के लिए छद्मस्थ की तरह सोचने विचारने की आवश्यकता न थी क्यों कि भगवान हर एक समय उपयोगात्मक ज्ञान से युक्त थे, तथा अनेक दुःखों से भरे हुए संसाररूपी समुद्र को तिरकर मुक्त होने वाले, स्वयं जीवों की रक्षा करनेवाले और उपदेश देकर दूसरों से रक्षा कराने वाले, तथा अनन्त पदार्थों को जानने से अनन्त ज्ञानवान् थे ॥२५॥

गाथा--कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एआणि वंता अरहा महेसी,
ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥२६॥

छाया--क्रोधञ्च मानञ्च तथैव मायां,
लोभं चतुर्थमध्यात्मदोषान्।

एतान् वान्त्वाऽर्हन्महर्षि
र्न करोति पापं न कारयति ॥२६॥

अन्वयार्थ—भगवान् महावीर स्वामी **(कोहं)** क्रोध को **(च)** और **(माणं)** मान को **(च)** और **(मायं)** माया को **(तहेव)** इसी प्रकार **(चउत्थं)** चौथे **(लोभं)** लोभ को अर्थात् **(एआणि)** इन **(अज्झत्थदोसा)** आध्यात्मिक-आत्मा सम्बन्धी दोषों को **(वंता)** त्यागकर **(अरहा)** अर्हत तथा **(महेसी)** महर्षि हुए, तथा **(पाव)** पाप **(ण)** न **(कुव्वई)** स्वयं करते **(ण)** और न **(कारवेइ)** दूसरों से कराते हैं ॥

भावार्थ--कारण के नाश होने पर कार्य का भी नाश हो जाता है संसार के कारण क्रोध, मान, माया और लोभ हैं, अतः इनके नाश होते ही संसार (कर्म सहित अवस्था) का भी नाश हो जाता है, इसलिए भगवान् क्रोध आदि को नष्ट करके अर्हन्तदशा एवं महर्षिपद को प्राप्त हुए, क्योंकि वास्तव में क्रोधादि को दूर किये विना कोई महर्षि नहीं हो सकता। भगवान् न स्वयं पाप करते हैं न दूसरों से ही पाप कराते हैं ॥२६॥

गाथा—किरियाकिरियं वेणइयाणवायं,
अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इति वेयइत्ता,
उवट्ठिए संजमदीहरायं ॥२७॥

छाया—क्रियाक्रियं वैनयिकानुवादं,
अज्ञानिकानां प्रतीत्य स्थानम्।
स सर्ववादमिति वेदयित्वा,
उपस्थितः संयमदीर्घरात्रम् ॥२७॥

अन्वयार्थ—(से) वह भगवान् महावीर **(किरियाकिरियं)** क्रियावाद और अक्रियावाद के **(वेणइयाणवायं)** वैनयिकवाद के **(अण्णाणियाणं)** तथा अज्ञानवाद के **(ठाणं)** पक्ष को **(पडियच्च)** जानकर तथा **(सव्ववायं)** अन्य समस्त वादों के पक्ष को **(इति)** सम्यक् प्रकार **(वेयइत्ता)** समझा कर **(संजमदीहरायं)** यावजीवन संयम में **(उवट्ठिए)** उपस्थित हुए ॥

भावार्थ—लोक में अनेक मत प्रचलित हैं। कोई लोग क्रिया से ही मोक्ष मानते हैं, उन के मत में दीक्षा लेने मात्र से मुक्ति हो जाती है। कोई लोग अक्रियावादी हैं उन का मत है कि मुक्ति के लिए सिर्फ ज्ञान की ही आवश्यकता है, चारित्र की आवश्यकता नहीं। गोशालिक मत के मानने वाले विनय से ही मोक्ष मानते हैं, तथा कोई २ अज्ञान से ही मोक्ष मानते हैं, और भी अनेक प्रकार के सिद्धान्त हैं, उन सब को भगवान् अच्छी तरह जानकर तथा दूसरों को यथार्थ समझा कर संयम में तत्पर होगये। अर्थात् जिस प्रकार का उपदेश दिया, उस को ही आचरण में भी लाए ॥२७॥

गाथा--से वारिया इत्थि सराइभत्तं,
उवहाणवं दुक्खखयट्टयाए।
लोगं विदित्ता आरं परं च,
सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥२८॥

छाया--*स वारयित्वा स्त्रियं सरात्रिभक्तं,*
उपधानवान् दुःखक्षयार्थम्।
लोकं विदित्वाऽऽरं परं च
सर्वं प्रभुर्वारित सर्ववारम् ॥२८॥

अन्वयार्थ—(से) उन **(उवहाणवं)** तपस्वी **(पभू)** भगवान् महावीर ने **(दुक्खखयट्टयाए)** आठ प्रकार के कर्मरूपी दुःखों को

नाश करने के लिये (**सराइभत्तं**) रात्रिभोजन के साथ ही साथ (**इ-त्थी**) स्त्री संभोग-मैथुन आदि पापों को (**वारिया**) त्याग कर (**सव्वं**) तथा समस्त (**आरं**) इस (**लोगं**) लोक को (**च**) और (**परं**) परलोक को (**विदित्ता**) जानकर (**सव्ववारं**) बहुतायत से (**वारिया**) निवारण किया॥

भावार्थ—जो वक्ता जिस प्रवृत्ति का उपदेश देवे उसे उसी प्रकार वर्ताव करना चाहिये। तब ही उपदेश का प्रभाव होता है। भगवान् महावीर ने मोक्ष प्राप्त करने का जो उपदेश किया, वे स्वयं भी उसी मार्ग में प्रवृत्त हुए। इसी लिए कहा गया है कि भगवान ने आठ कर्म रूपी दुःखों को नाश करने के लिये स्त्रीसम्भोग का तथा रात्रि भोजन, प्राणातिपात, मृषावाद आदि समस्त पापों का त्याग किया था। तथा घोर तपस्या करके इस लोक और परलोक को अथवा मनुष्यलोक तथा नरकादि लोक को जानकर सब का त्याग किया था ॥२८॥

गाथा--**सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं,**
समाहितं अट्ठपदोवसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ,
इंदा व देवाहिव आगमिस्संति ॥२९॥

छाया—*श्रुत्वा च धर्ममर्हद्भाषितं,*
समाहितमर्थपदोपशुद्धम् ।
तं श्रद्दधानाश्च जना अनायुष-
इन्द्रा वा देवाधिपा आगमिष्यन्ति ॥२९॥

अन्वयार्थ—(**समाहितं**) सम्यक्प्रकार से कहे हुए (**य**) और (**अट्ठपदोवसुद्धं**) अर्थ और पदों से निर्दोष (**अरहंतभासियं**) अर्हन्त भगवान् द्वारा कहे हुए (**तं**) उस (**धम्मं**) धर्म को (**सोच्चा**) सुनकर (**सद्दहाणा**) श्रद्धा करने वाले (**जणा**) मनुष्य (**देवाहिव**) देवों

स्वामी (**इंदा**) इन्द्र (**व**) तथा (**अणाऊ**) आयुरहित सिद्ध (**आ-**
मिस्संति) होवेंगे ॥

भावार्थ—श्री सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामी से उपसंहार करते हुए क-
हते है कि जो अर्हन्त भगवान् के द्वारा कहे हुए धर्म का श्रद्धान करते हैं
वे आयु कर्म रहित होते अर्थात् मुक्ति प्राप्त करते हैं, अथवा इन्द्रादि
होते है और होते रहेंगे ॥२६॥



महावीरस्तुति का पाठान्तर।

गाथासंख्या	मूलपाठ	पाठान्तर
६	अणुत्तरं	अणुत्तरे
२६	अज्झत्थदोसा	अज्झत्थदोसं
४	अहेयं	अहेया
२३	उत्तम	उत्तिम
१९	एवं	सेट्ठे
७	कासव	कासवे
३	कुसलेमहेसी	कुसलासुपन्ने
३	खेयन्ने	खेयन्नए
३	जसंसिणो	जसस्सिणो
८	जुईमं	उज्जुईमं
१०	णवणवते	णवणवति
६	तमंपगासे	तमंपगासं
२३	दाणाणसेट्ठं	महादाणसेट्ठं
३	धिइंचपेहि	धितितहेच
१५	निसहाऽऽययाणं	निसहोययाणं
१४	पवुच्चई	पवुच्चती
१०	पंडगवेजयंते	पंडगवेजयन्ते
१	पुच्छिंसु	पुच्छिस्सु
८	भिक्खू	मुक्के
१४	महतो	महउ
१९	महाणुभावे	महाणुभागे
८	या	्वा
१६	व	च
२०	य	च
९	विरायए	विरायई
२५	वीरधणांतचक्खू	वीरेणांतचक्खू
२७	सव्ववाय	सव्वायं
	सुगालणवा सि	सुगालणवा धि

१९	सेट्ठं	सेट्ठे
२९	सोच्चाय	सोच्चेव

नोट—क ग च ज त द प य व इन अक्षरों का लोप भी होता है तथा उक्त वर्णों के स्थान में य भी होता है , जैसे ततो-तओ, उदीरइत्ता-उईरइत्ता, दुहिया-दुहिआ जितं-जियं इत्यादि ।
त के स्थान में द भी होता है, जैसे ततो-तदो आदि ।
न के स्थान में ण भी होता है , जैसे किन्नु-किणु आदि ।
अनुस्वार के स्थान में अनुस्वार से अगले वर्ण का पांचवाँ अक्षर भी होता है । खंतिं-खन्ति, इंदत्तं-इन्दत्तं ।
संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व भी होता है, जैसे भोच्चा-भुच्चा आदि ।

नोट—कितने ही स्थलों पर अनेक पद व्याकरण-दृष्टि से अशुद्ध होने पर भी छन्दोभंग के भय से प्राचीन प्रतियों के अनुसार वैसे ही मूल-पाठ रख दिये हैं । जैसे—

गाथा	मूलपाठ	शुद्धपाठ
१	अंगारिणो या	अगारिणोय
११	वेदयतीमहिदा	वेदयन्तिमहिंदा
१२	गिरीवरे	गिरिवरे
२१	हत्थीसु	हत्थिसु
,,	पक्खीसु	पक्खिसु
२८	इत्थी	इत्थि

सेठिया जैनग्रन्थमाला की पुस्तकें:—

तैयार हैं

सामायिक सूत्र-मूलपाठ तथा विधि रु०)॥
प्रतिक्रमण-मूलपाठ और विधि रु० -)
प्रकरण (थोकड़ा) संग्रह-भाग दूसरा पत्राकार
पृष्ठ २५८ पक्की ज़िल्द रु० १)
सामायिक सूत्र--शब्दार्थ, भावार्थ, सहित रु० =)
माङ्गलिक स्तवन संग्रह भाग १ रु० =)॥
माङ्गलिकस्तवन संग्रह भाग २ रु० -॥)
प्रतिक्रमणसूत्र-शब्दार्थ, भावार्थ, विधिसहित रु० ≡)
तैंतीस बोल का थोकड़ा रु० -)
जैन बालोपदेश रु० =)
प्रस्तार रत्नावली (इसमें गांगेय अनगार के भांगे, श्रावक व्रत के भांगे और आनुपूर्वी के भांगे हैं) पत्राकार पृष्ठ २८० पक्की ज़िल्द रु० १।=)
कर्तव्य कौमुदी द्वितीय-भाग हिन्दी सानुवाद रु० ।-)
नंदी सूत्र मूलपाठ संशोधित लेजरपेपर पुठे सहित ।=)
क्रिया कर्म वैराग्य रु० -)॥
श्रावक के बारह व्रत रु० =)॥
गुणविलास (विविध प्रकारस्तवन) रु०।।।)
नमिपवज्जा-अन्वयार्थ भावार्थ संस्कृत छाया सहित रु० ≡)



श्री सेठिया जैन ग्रन्थमाला पुष्प नं० ११३



आत्महित बोध भावना

की

दोहावली

प्रकाशक

भैरोदान जेठमल सेठिया

बीकानेर

वीर संवत् २४७५
विक्रम संवत् २००५
वसन्त पञ्चमी

मूल्य ।) चार आना
(ज्ञान प्रचार मे लगेगा)
डाक खर्च अलग ।

प्रथमावृत्ति
५००

सेठिया जैनग्रन्थमाला की पुस्

तैयार हैं

सामायिक सूत्र-मूलपाठ तथा विधि

प्रतिक्रमण-मूलपाठ और विधि

प्रकरण (थोकड़ा) संग्रह-भाग दूसरा

पृष्ठ २५८ पक्कीजिल्द

सामायिक सूत्र--शब्दार्थ, भावार्थ,

माङ्गलिक स्तवन संग्रह भाग १

माङ्गलिकस्तवन संग्रह भाग २

प्रतिक्रमणसूत्र-शब्दार्थ, भावार्थ,

तेंतीस बोल का थोकड़ा

जैन बालोपदेश

बारह भावना (दोहे)

(१) अनित्य भावना।

(१) काया कञ्चन कामिनी, विषय भोग सब जोय।
क्षणभङ्गुर[१] संसार में, रहि न सके थिर कोय॥
(२) जेती वस्तु जहान[२] में, छिन छिन पलटा खाय।
जो दिखती हैं भोर में, सो संध्या में नाय॥
(३) इस जग में कोई कहीं, वस्तु न ऐसी खास।
जिसमें हरदम के लिए, किया जाय विश्वास॥
(४) लक्ष्मी संध्या की छटा, यौवन जल का फेन।
राजत[३] अक्षिनिमेष[४] तक, जाया भ्रात बहेन॥

(२) अशरण भावना।

(५) मात पिता सुत भामिनी,[५] अरु जेप्रिय परिवार।
काल-व्याघ्र[६] के गाल से, कोउ न राखनहार॥
(६) धर्म एक ही जगत में, शरणागत प्रतिपाल।
तेहि बिन रक्षा को करे, काल चक्र के जाल॥

(३) संसार भावना।

(७) लेकर गर्भारम्भ से, देह त्याग पर्यन्त।
जगत जीव सब दुःख से, पीड़ित हैं हा हन्त[७]॥
(८) कहीं कष्ट अतिवृष्टि से, कहिं वर्षा बिनु हाय।
दुःख भरा इस लोक में, शान्ति नहीं कहिं पाय॥

---

१ क्षणभङ्गुर—नाशवान्। २ जहान—संसार। ३ राजत—ठहरता है। ४ अक्षिनिमेष—क्षणमात्र। ५ भामिनी—स्त्री। ६ काल व्याघ्र—मृत्यु रूपी सिंह। ७ हन्त—खेद

* विषय सूची *

१	बारह भावना	पृष्ठ १ से ५	दोहे ४३
२	चार भावना (मैत्री प्रमोद आदि)	,, ६ से १३	,, ७६
३	आत्म-प्रबोध भावना	,, १४ से ५९	,, ५९
४	माता पिता के प्रति	,, १९	,, ५
५	पत्नी के प्रति	,, १९ से २०	,, १०
६	पुत्र के प्रति	,, २० से २१	,, १२
७	शान्ति-मार्ग	,, २१ से २३	,, २६
८	कल्याण-मार्ग	,, २३ से २४	,, १२
९	आत्म निन्दा	,, २४ से २५	,, १२
१०	आलोचना	,, २५ से २७	,, १२
११	क्षमा याचना	,, २८ से २९	,, १४
१२	कषाय-विजय	,, २९	,, १२
१३	हितोपदेश	,, ३०	
			३०६

पुस्तक मिलने का पताः—

श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था
बीकानेर
Bikaner, Bk. S. Rly.

बारह भावना (दोहे)

(१) अनित्य भावना ।

(१) काया कञ्चन कामिनी, विषय भोग सब जोय ।
क्षणभङ्गुर[१] संसार में, रहि न सके थिर कोय ॥
(२) जेती वस्तु जहान[२] में, छिन छिन पलटा खाय ।
जो दिखती है भोर में, सो संध्या में नाय ॥
(३) इस जग में कोई कहीं, वस्तु न ऐसी खास ।
जिसमें हरदम के लिए, किया जाय विश्वास ॥
(४) लक्ष्मी संध्या की छटा, यौवन जल का फेन ।
राजत[३] अक्षिनिमेष[४] तक, जाया भ्रात बहेन ॥

(२) अशरण भावना ।

(५) मात पिता सुत भामिनी,[५] अरु जेप्रिय परिवार ।
काल-व्याघ्र[६] के गाल से, कोउ न राखनहार ॥
(६) धर्म एक ही जगत में, शरणागत प्रतिपाल ।
तेहि बिन रक्षा को करे, काल चक्र के जाल ॥

(३) संसार भावना ।

(७) लेकर गर्भारम्भ से, देह त्याग पर्यन्त ।
जगत जीव सब दुःख से, पीड़ित हैं हा हन्त[७] ॥
(८) कहीं कष्ट अतिवृष्टि से, कहिं वर्षा बिनु हाय ।
दुःख भरा इस लोक में, शान्ति नहीं कहिं पाय ॥

---

१ क्षणभङ्गुर-नाशवान् । २ जहान-संसार । ३ राजत-ठहरता है । ४ अक्षिनिमेष-क्षणमात्र । ५ भामिनी-स्त्री । ६ काल व्याघ्र-मृत्यु रूपी सिंह । ७ हन्त-खेद

(९) रंगमञ्च[१] यह जगत है, कर्म खिलावन हार।
नाना रूप बनाय के, चेतन खेलन हार॥
(१०) कभी जीव माता बना, पिता पुत्र फिर नार।
भाई भगिनी बन गया, यह विचित्र संसार॥
(११) यह संसार असार है, लेश न इसमें सार।
भटका जीव अनादि से, पाया दुःख अपार॥

[४] एकत्व भावना।

(१२) जीव अकेला जनमता, मरे अकेला होय।
कर्मों का संचय करे, सुख दुख भोगे सोय॥
(१३) सभी कुडुम्बी हर्ष से, धन भोगें मन लाय।
जीव अकेला कर्म का, अपराधी बन जाय॥
(१४) जीव अकेला स्वर्ग सुख, भोगे अति हर्षाय।
नरकादि दुख एकला, भोगत पुनि पछताय॥
(१५) तन त्यागे जग जात जो, रहे न सँग छिन एक।
किया कर्म लेकर चला, पर भव प्राणी एक॥

(५) अन्यत्व (परपत्त) भावना।

(१६) जीव जुदा काया जुदी, काया जीव न एक।
क्षणभङ्गुर यह काय है, जीव नित्य पुनि एक॥
(१७) काया पुद्गल-पिंड है, चेतन ज्ञान सरूप।
यह शरीर पुनि मूर्त्त है, जीव अमूर्त्त अनूप[२]॥
(१८) जीव अनादी काल से, सहता योग वियोग।
कभी किसी से बिछड़ता, कभी किसी से योग॥

---

१ रंगमञ्च—खेलने की जगह। २ अनूप—उपमा रहित।

(१९) जितनी वस्तु जहान में, वे सब हैं परकीय[१]।
इनसे ममता त्याग कर, ध्यावो आत्मस्वकीय[२] ॥

(६) अशुचि भावना।

(२०) घृणित वस्तु संयोग से, हुई काय तैयार।
अशुचि वस्तु से है बढ़ी माता गर्भागार[३] ॥
(२१) उत्तम सुन्दर सरस भी, होय भले आहार।
जाकर अन्दर काय के, अशुचि होत तैयार ॥
(२२) नेत्रादिक नव द्वार से, झरता मैल हमेश।
निर्मल यह नहिं बनि सके, करिये यत्न अशेष[४] ॥
(२३) हाड़ मांस का पींजरा, ढँका चामड़ी माय।
भरी असह दुर्गन्ध से, महाघृणित यह काय ॥

(७) आश्रव भावना।

(२४) मन वच तन के शुभ अशुभ, योगों से जो जोय।
गहे शुभा शुभ कर्म को, आश्रव जानो सोय ॥
(२५) एकेन्द्रिय आधीन हो, मृग खोते निज गात।
पञ्चेन्द्रिय आधीन जो, फिर उनकी क्या बात ॥

(८) संवर भावना।

(२६) जिस व्रत के स्वीकार से, आश्रव की सब आय।
रुक जाती तत्काल ही, वह संवर कहलाय ॥
(२७) डूब बटोही[५] जांय वे, छिद्र तरी[६] चढ़ जांय।
बन्द करें जब छिद्र को, सुख से वे तरि जांय ॥

---

१ परकीय–पराई। २ आत्म स्वकीय–अपनी। ३ गर्भागार–गर्भ में।
४ अशेष–सम्पूर्ण। ५ बटोही–यात्री। ६ तरी–नाव।

चार भावना

(१) जाहि जोति से पा गये, शिवपद अखिल[१] जिनेश।
सोइ जोति मो मन बसे, जग-मग रहे हमेश॥
(२) जो ये चारों भावना, भवतारन की सेतु[२]।
करूँ आतम हित के लिए, अन्य न कोई हेतु॥
(३) मैत्री करुणा मुदित पुनि, उदासीनता धार।
साधक भव-वारिधि तरे, पावे पद अविकार॥
(४) ताते चारों भावना, भावो मन के योग।
जाते भव बन्धन कटें, मिटे सकल भव रोग॥
(५) भावेते नित भावना, चञ्चल मन थिर होय।
मुक्ति मार्ग को पाय के, शिव अधिकारी होय॥

मैत्री भावना

(१) जग के जीवों को सदा, करहु मित्र सम प्यार।
वैर न करिये काहु से, मित्र भाव मन धार॥
(२) वैर भाव उद्वेग की, पुनि भय दुख की खान।
मित्र भावना है सदा, शान्ति सुखों का थान॥

मैत्री भावना के लिए वैर त्याग—

(३) दुःख रूप दावाग्नि को, है जो पवन समान।
चिन्ता रूपी बेल को, सींचें मेघ समान॥
(४) धर्म रूप शुभ कमल को, नाशत बर्फ समान।
महाभयों की खान जो, कर्म बन्ध का थान।
(५) रागद्वेष पहाड़ का, ऊँचा शिखर समान।
ऐसा वैर विपक्ष[३] है, चित्त क्षोभ का थान॥

---
(१) अखिल—सब। (२) सेतु—पुल। (३) विपक्ष—शत्रु।

(६) वैर विपक्षी से रहो, मनुआं ! तूं हुशियार।
त्यागे इसके जीत है, नेह करे ते हार॥
(७) शमभञ्जक[१] दुख मूल जो, चिन्ता का जो भेष[२]।
मैत्री भावों का रहे, जो प्रतिपक्ष हमेश॥
(८) मित्रो ! वह गृह नहिं बसे, करे वैर जहँ वास।
कौरव पाँडव वंश का, किया इसी ने नाश॥
(६) ताते मैत्री भावना, भावो शुद्ध हमेश।
वैर भाव सब दूर हो, रहे न दुख का लेश॥
(१०) मैत्री भाव मनुष्य का, है गुण सहज महान।
वैर भावना जाहि में, वह नर पशू समान।
(११) मैत्री भाव विकासते, आस पास के लोग।
विसर जात हैं वैर को, करहिं उचित सहयोग॥
(१२) निज विकास हित चित्त जो, निर्मल करना होय।
तो तुम मैत्री भाव को, अपनाओ छल खोय॥

सभी जीव भाई हैं—

(१३) भव भव के सम्बन्ध से, जीव मात्र समुदाय।
नहिं कोई ऐसा रहा, जो न हमारा भाय॥
(१४) सबही जीव जहान के, जब हैं मेरे भाय।
करना उनसे वैर भी, अनुचित समझा जाय॥

क्षमापना—

(१५) सभी जीव जब हो चुके, बन्धु किसी भव मांय।
उनका बुरा न सोचना, करना सदा सहाय॥

---

(१) शमभञ्जक—शान्ति को नष्ट करने वाला। (२) भेष—रूप।

(१६) जो तुझसे अज्ञान वश, हुई किसी की हानि।
तो तू शाम सुबह उसे, करो शान्त सनमानि॥

मैत्री क्रम—

(१७) ज्यों ज्यों आतम शक्ति का, होता जाय प्रकाश।
मैत्री रूपी वेल का, त्यों त्यों होत विकाश॥
(१८) जड़ इसकी निज गेह में, जो हो सुन्दर वेष।
स्कन्ध कुटम्बों में रहे, शाखा सारे देश॥
(१९) इहि विधि मैत्री भावना, भावो शुद्ध हमेश।
तो पुनि मैत्री वेलड़ी, बाढ़े सारे देश॥
(२०) अन्य मतों के साथ तूँ, कर नहिं जरा विरोध।
तत्त्व खोज की दृष्टि से, कर तूँ मत का शोध[१]॥
(२१) किसी जाति के लोग से रख नहिं जरा विभेद।
मित्र भाव त्यागो नहीं, जो स्वभाव कुछ भेद॥
(२२) जीव आदि छह द्रव्य का, है स्वभाव में भेद।
तो भी ये जग में रहें, हिलमिल, रखें न भेद॥
(२३) चन्द्र रहे, आकाश में, भू पै रहे चकोर।
मैत्री इनकी नित बढ़े, कभी न होवे थोर[२]॥
(२४) जैसे उक्त पदार्थ मे, देश जाति का भेद।
करे न किञ्चिन्मात्र भी, मित्र भाव का छेद॥
(२५) वैसे तुझको उचित है, कर जीवों से प्रेम।
होने पै कुछ भेद भी, तज मत मैत्री नेम॥
(२६) रे दुर्भाग! जवासिया! वर्षा ऋतु के माय।
जलता क्यों इस भांति से, हरा भरा तूँ नाय॥

---

(१) शोध–खोज। (२) थोर–कम।

(२७) भाई अब मैं क्या कहूँ, अपने दुख की बात।
वनस्पती का उदय लखि, सूख गया मम गात॥
(२८) अरे दुष्ट जवासिया !, तू तो बड़ा नादान।
पर सम्पत्ति लखि व्यर्थ ही, क्यों होता हैरान॥
(२९) थावर जग में जन्म से, जड़तावश[१] मैं नीच।
पर[२] मानव ईर्ष्यालु जो, है वह मुझ से नीच॥

प्रमोद भावना

(१) लखि गुणिजन की पूजना, आदर सह पुनि मान।
हर्षित होना ताहि ते, है प्रमोद शुभ खान॥
(२) वीतराग अरिहंत का, पुनि जे साधु सुजान।
दानी श्रावक वर्ग का, सबका कर गुणगान॥
(३) कर्त्तव्य व्रत पाल कर, जो चाहसि भव पार।
तो ईर्ष्या मन से तजो, रोधक[३] सेवा द्वार॥
(४) धन जन सम्पत्ति अन्य की, देख न मन ललचाव।
अन्य पुरुष सन्मान को, देख हृदय हर्षाव॥
(५) उदित सूर्य को देख कर, जिमि सरोज[४] खुश होत।
ऋतु वसन्त को देखते, जिमि वन विकसित होत॥
(६) सुनत मेघ की गर्जना, नाचत मत्त[५] मयूर।
चातक जिमि जल बिन्दु पा, हो प्रसन्न भरपूर॥
(७) हे मानव ! इहि भांति तूँ, पर उन्नति को देख।
अति प्रसन्न शुभ दृष्टि से, ताहि ओर तूँ पेख[६]॥

---

(१) जड़तावश—अज्ञानतावश। (२) पर—परन्तु।
(३) रोधक—रोकने वाला। (४) सरोज—कमल। (५) मत्त—मस्त-मतवाला। (६) पेख—देख।

(८) करो न ईर्ष्या अन्य से, तेहि उन्नति हर्षाव।
ऐसा करने से सभी, करें तुम्हारा चाव॥
(९) हिलमिल तुम सब से रहो, प्राणी से रख प्रेम।
इहि विधि[१] भव वारिधि[२] तरो, कर जप तप पुनि नेम॥
(१०) चिरकालिक संस्कार से, यह मन ईर्ष्या खान।
पर उन्नति नहिं सहि सके, वृथा जले नादान॥
(११) ईर्ष्या सद्गुणहारिणी, पाप बढ़ावनि हार।
इह भव में दुख दायिनी, पर भव नाशनि हार॥
(१२) ऐसी ईर्ष्या को जरा, दो नहिं मन में थान।
जो चाहसि इस लोक में, या पर भव कल्याण॥
(१३) यह प्रमोद शुभ भावना, करती सदा प्रमोद।
सभी दुःख को दूर कर, मन में रखती मोद॥

करुणा भावना

(१) मन अरु तन के दुःख से, दुखी जीव को जोय।
दुःख नाश की चाह को, जानो करुणा सोय॥
(२) करुणा गुण समदृष्टि का, जैनागम के माँय।
धर्ममूल करुणा कही, अन्य धर्म के माँय॥
(३) साधुपना श्रावकपना, बिन करुणा नहिं होय।
करुणा बिन नहिं जा सके, सेवा पथ पै कोय॥
(४) जीवन प्रिय सब जीव को, सब को सुख की चाह।
तिरस्कार दुख मृत्यु के, नहिं जावे कोइ राह॥
(५) तुम्हें चाह जिस वस्तु की, उसे शीघ्र कर दान।
ताहि वस्तु को हाथ ले, तुम्हें भाग्य दे मान[३]॥

---

(१) इहि विधि–इस प्रकार। (२) भव वारिधि–संसार समुद्र।
(३) मान–आदर।

(६) दुखी जीव जिस द्रव्य से, सुख नहिं पाये होय।
वह धन नहिं कुछ काम का, बकरी गल[1]–थन सोय॥
(७) दुखी जीव जिस काम से, रक्षित हुए न होंय।
दुखी जीव जिस शक्ति से, उद्धृत हुए न होंय॥
(८) मोक्ष मार्ग जिस बुद्धि से, नहिं पहचाना होय।
है नहिं ये कुछ काम के, भार रूप पुनि सोय॥
(९) सुख, हित, विद्या, कीर्ति पुनि, सुत विनीत सब जोय।
पुण्य वृक्ष के फल सभी, जो सुखदायी होय॥
(१०) जो चाहो इस वृक्ष के, हरेभरे हों पात।
करुणा जल से सींचिये, इसकी जड़ दिन रात॥
(११) करुणा जल अभिषेक[2] बिन, पुण्य वृक्ष नशि जाय।
ता बिन सुख सम्पन्नता, क्षण में स्वयं विलाय[3]॥
(१२) दीन, अपंग, दरिद्र नर, रोगी भाग्य विहीन।
विधवा, वृद्ध, अनाथ, शिशु, पर पीड़ित, बलहीन॥
(१३) विकट समय जो मर रहे, बिना अन्न बिन घास।
ये सब करुणा पात्र हैं, रखें तुम्हारी आश॥

मध्यस्थ भावना

(१) जग के जीवों को सदा, करने में अघ[4] दूर।
मध्य भावना का मनन, साथ देय भरपूर॥
(२) मध्य भावना के बिना, सम[5] हो विषम[6] समान।
पर-अघ-मोचन दूर रह, आपुहि गुण विलगान[7]॥

---

(१) बकरी-गल-थन–बकरी के गले में लटकने वाला स्तन।
(२) अभिषेक–सींचना। (३) विलाय–नष्ट हो जाता है।
(४) अघ–पाप। (५) सम–समभाव। (६) विषम–विषम भाव।
(७) विलगान–दूर होना।

(३) जग सेवा जग जीव का, करने में उपकार।
पुनि शुभ धर्म प्रचार में, सहन शीलता धार॥

(४) शत्रु तुम्हें यदि मारने, को भी उद्यत होय।
कोप खेद करना नहीं, जेहि तव कारज होय॥

(५) चेतन इस संसार में, ऐसे हैं कुछ जीव।
जो तेरे प्रतिपक्ष हैं, पाप कर्म के सींव[1]॥

(६) साम, दाम अरु भेद से, दे सुन्दर उपदेश।
पुनि तेहि मीठे वचन से, बोधित करो हमेश॥

(७) सभी उपायों से यदपि, नहिं समझे वह क्रूर।
जरा न तेहि अपमान कर, तेहि से हट तूँ दूर॥

(८) पापी का मत नाश कर, कर पुनि पाप विनाश।
किसी जीव के नाश से, हिंसा आवे पास॥

(९) हिंसा के आगमन से, पाप सृष्टि अधिकाय।
अधः पात हो आत्म का, पुण्य क्षीण हो जाय॥

(१०) छेदन करना वस्त्र का, मल नाशन के हेत।
नीति शास्त्र के मार्ग में, नहिं यह शोभा देत॥

(११) जिमि जल कोमल वस्त्र से, मैल हटाया जाय।
बातों से करि नम्र तिमि, पापी पाप नशाय॥

(१२) देश हितैषी मनुज जो, अधिक होय बलवान।
बदला ले नहिं शत्रु से, करे ताहि सन्मान॥

(१३) सहन शीलता धारना, वीरों का है काम।
धार न सके सहिष्णुता,[2] दुर्बल नर बलखाम[3]॥

---

(१) सींव–हद। (२) सहिष्णुता–सहनशीलता। (३) बलखाम–बलहीन।

(१४) चेतन की बल वृद्धि से, सहन शीलंता होय।
तातै तुम धारण करो, शान्ति खमा[१] शुभ दोय।
(१५) उदासीनता धार लो, जों निज मन के माँय।
तो अरि[२] त्यागे धृष्टता, पुनि सेवक बन जाय॥
(१६) ये सब ही शुभ भावना, भावे भैरवदान।
जो भावे शुभ भावसे, होय परम कल्यान॥

(१) खमा–क्षमा। (२) अरि–शत्रु।



आत्म-प्रबोध भावना।

(१) नमो आदि अरिहंत को, जिन प्रकटा सब ज्ञान।
धर्म सिखाया जगत को, दूर किया अज्ञान॥
(२) सकल चराचर विश्व जस, हस्तामलक[१] समान।
सो प्रभु मति निर्मल करे, विघ्न हरे बलवान॥
(३) लोक हितैषी धर्म रत, मुनि जन ज्ञान समेत।
कीनी बहु सद्भावना, भव नाशन के हेत॥
(४) सोइ अधार कछु पाय के, आतम मनन के हेतु।
करता हूँ सद्भावना, और न कोई हेतु॥
(५) यह शरीर पर्याय जो, नित, नित पलटा खात।
पर मैंने जाना नहीं, दिन दिन निरखत गात[२]॥
(६) अभी देह की यह थिती, निरखत ममता जात।
प्रभु की वाणी सत्य वह, "अथिर विनश्वर[३] गात"॥
(७) परमाणू के मिलन से, बना हुआ यह गात॥
बिखरन से इनके नहीं, चेतन का कुछ जात॥
(८) जिमि अकाश में बादली, घुमड़त बिछुरत आप।
कोई जग कर्त्ता नहीं, होता आपो आप॥
(९) चेतनकाय वियोग से, क्यों तू है घबरात।
रखने से क्या रहि सके, छोड़े से क्या जात॥
(१०) मैं तो चेतन अमर हूँ, दर्शन सुख अरु ज्ञान।
वीर्य आदि जो सहज गुण, सब मेरे पहचान॥
(११) काय रहे या जाय जो, पुद्गल का परिणाम।
मैं अविनाशी एक सा, चिन्ता का क्या काम॥

---

(१) हस्तामलक—हथेली पर रहा हुआ आंवला। (२) गात—शरीर।
(३) विनश्वर—नष्ट होने वाला।

(१२) अब तक था मैं जानता, है यह मेरी देह।
पाली पोसी प्रेम से, कर कर नित नव नेह॥
(१३) पर अब मैंने समझ ली, इस काया की चाल।
अब तक हुई न आपणी, आगे कौन हवाल॥
(१४) मेरी होती काय जो, रहती मम आधीन।
रोग, शोक अरु मृत्यु के, क्यों होती आधीन॥
(१५) एक तुम्हारे देह के, कितने सगे न अन्त।
मोह फाँस में सब बंधे, मूर्ख अरु मतिमन्त॥
(१६) जग का नाता झूठ है, क्यों फँसता इस फंद।
जीव एक अरु नित्य है, सहज सच्चिदानन्द॥
(१७) सम्पति कारण आज तक, बांधे कर्म अपार।
बिन भोगे छूटे नहीं, करो कोटि उपचार॥
(१८) बीती सो बीती सही, अब तो ममता छांड।
नया कर्म बांधो मती, कृत कर्मों को झाड़॥
(१९) मैं हूँ निर्मल गगन सा, रूप हीन चैतन्य।
आदि अन्त से हीन हूँ, महिमा अमित अनन्य॥
(२०) सभी तत्त्व को जान कर, करूँ आत्म जयवन्त।
हरने में समरथ बनूँ, रागद्वेष बलवन्त॥
(२१) हाड़ मांस अरु रक्त जहँ, मल मुत्रादि लखाय।
क्षणभङ्गुर इस काय में, ममता क्यों अधिकाय॥
(२२) स्वर्गादिक फलदान से, मित्र मृत्यु को जान।
हित कारक कोई नहीं, इससे बढ़कर मान॥
(२३) मृत्यु बिना इस बंध से, कौन छुड़ावन हार।
भवसागर में डूबते, गुरु बिन कौन उबार॥
(२४) ढूंढत ढूंढत तूं थका, मन ! शमसुख[१] बहुबार।
पर नहिं मरण समाधि बिन, शम सुख का दातार॥

---

१ शमसुख–मोक्षसुख।

(२५) मृत्युवृत्त की छाँह में, कर विषयों का त्याग।
जो नहिं त्यागो विषय को, तो चौरासी लाग॥
(२६) सात धातुओं से बनी, यह औदारिक देह।
गलते बार न लाग ही, जिमि जल-उपलन-गेह[1]।
(२७) नय उपनय अरु हेतु से, दे दृष्टान्त अनेक।
चेतन को पहचानते, मुनि जन सहित विवेक॥
(२८) चेतन तू इस काय पै, कर नहिं तनिक सनेह।
यह शरीर तेरा नहीं, तू निर्मल निर्लेह[2]॥
(२९) व्याधी कर्माधीन हैं, नहिं औषध आधीन।
ताते औषध छोड़ के, हो शुभ ध्यान विलीन॥
(३०) वैद्यराज जिनराज की, औषध मरण समाधि।
सेवन से आवे नहीं, आधि[3] व्याधि[4] उपाधि[5]॥
(३१) अजर अमर अक्षय सदा, अव्याबाध[6] अनन्त।
सपने जे सुख नहिं मिले, वे आते विकसन्त॥
(३२) तेज ताप से तप यथा, सोना निर्मल होत।
समता से सह वेदना, जीव अमल तिमि होत॥
(३३) 'हायवॉय'[7] तुम ना करो, बढ़ने से दुख जोर।
हाय किये दुख ना घटे, बँधते कर्म कठोर॥
(३४) इससे अच्छा है यही, सह दुख भजि समभाव।
नया कर्म बांधो नहीं, सञ्चित कर्म खपाव॥

---

१ जल उपलन गेह – बर्फ का घर। विलीन–तल्लीन।
२ निर्लेह–निर्लेप–लेप रहित। ३ आधि–मानसिक चिन्ता। ४ व्याधि–शारीरिक रोग। ५ उपाधि–बाहरी झगड़े। ६ अव्याबाध – रोग रहित। ७ हायवॉय–वेदना के न सह सकने से जो कायरता के शब्द ... ते हैं।

(३५) जो तूने नरकादि में, बहु सागर पर्यन्त।
सही विविध विध वेदना, जिस का नहिं कुछ अंत॥
(३६) ताहि वेदना सामने, मनुज वेदना जोय।
क्या है यह दुख दायिनी, अल्प कालिनी सोय॥
(३७) यह तो दुख, सुख मूल है, सार रूप पुनि सोय।
कायर पन को त्याग कर, सह मन दुख दृढ़ होय॥
(३८) यह तो तेरा ही किया, भव भव का ऋण भार।
तीव्र असाता वेदनी, बांधा कर्म अपार॥
(३९) वही असाता वेद कर, उऋण हुआ तू आज।
कर्म भार हलका हुआ, हुआ सकल सुख साज॥
(४०) हो परवश तू नरक में, पीड़ा सही अनन्त।
पर उससे कुछ नहीं सरा, बिन समकित बलवन्त॥
(४१) सहने से भी वेदना, बहु सागर पर्यन्त।
हुई सकाम न निर्जरा, हुआ न भव का अन्त॥
(४२) अमित निर्जरा होयगी, होगा भव का अन्त।
आ चण[1] दुख समभाव से, सहवे जो गुणवन्त॥
(४३) चेतन तू यह जान ले, निश्चय है यह बात।
किये कर्म भोगे बिना, प्राणी मोक्त न जात॥
(४४) प्रबल पुण्य के उदय से, मिला मनुज भव जान।
कहा भगवती सूत्र में, तीर्थङ्कर भगवान॥
(४५) ता में भी बहु पुण्य से, आर्य क्षेत्र में आय।
उत्तम कुल चिर जीविता, रोग हीन तन पाय॥
(४६) पञ्चेन्द्रिय परिपूर्णता, सद्गुरु का संयोग।
ता पै मिलना कठिन है, प्रवचन श्रवण सुयोग॥

---

१ आ क्षण – इस समय।

(४७) आगम सुन कर श्रद्धना, कठिन कहा जिनराय।
उससे भी पचखाण का, करना कठिन कहाय॥

(४८) श्रद्धालू संसार में, करे त्याग पचखाण।
ग्यारह व्रत भी साध ले, कठिन सुपातर दान॥

(४९) ऐसा अवसर पाय के, कर मत तनिक प्रमाद।
नहिं तो फिर पछतायगा, समय चूकने बाद॥

(५०) धर्म काम में मत करो, समय मात्र परमाद।
आनँद सुख शाश्वत सदा, मिले धर्म परसाद॥

(५१) जब तक घट में प्राण है, जपता रह नवकार।
दुख तेरे कट जायेंगे, होगा भव से पार॥

(५२) ले तू अपने साथ में, धर्म-रत्न-भण्डार।
वरना तू फिर जायगा, खाली हाथ पसार॥

(५३) कर प्रमाद मत धर्म में, आयुष बीती जाय।
काल चक्र है घूमता, कुण जाणे कब आय॥

(५४) बिना धर्म सेवन किये, भोगे दुःख अनेक।
चौरासी भमता रहा, अब तो राख विवेक॥

(५५) हाट बगीचा खेत पुनि, सोना चाँदी धाम।
जेती सम्पति जगत की, मृत्यु सके नहिं थाम॥

(५६) ठगिनी सम्पति से सदा, मन तू रह हुशियार।
यह इतनी मायाविनी, जिसका वार न पार॥

(५७) धन्य महाजन है वही, दे धन को शुभ ठाम।
श्रावक व्रत को धार कर, करता आतम काम॥

(५८) जागो प्राणी भोर है, नहिं अब है यह रात।
सोने में तुमने किया, कुम्भकरण को मात॥

(६) आतम हित की भावना, भावे भैरवदान।
पुनि राखे यह कामना, होय जगत कल्याण॥

माता पिता के प्रति—

(१) मात पिता इस देह के, लीजे खूब विचार॥
यह शरीर था आपका, खूब किया था प्यार॥
(२) थी इसकी इतनी थिती, अब न आयु अवशेष।
नेह करे कुछ ना सरे, बाढ़े दुःख विशेष॥
(३) यह तन उतना ही रहे, जितनी वय अवशेष।
है नहिं ऐसी शक्ति जो, रख ले इसे विशेष॥
(४) आतम साधन में मुझे, दीजे अब सहयोग।
गमनागमन विनष्ट हो, मिटे सकल भवरोग॥
(५) काया और कुडुम्ब का, तज कर सब सम्बन्ध।
मेरा चेतन दृढ़ बने, ऐसा करो प्रबन्ध॥

पत्नी के प्रति—

(१) हे सहयोगिनी! हे प्रिये! सुन मम हित की बात।
मेरा तेरा नियत था, इतने दिन का साथ॥
(२) तूने मम इक चित्त से, सेवा की दिन रात।
अब यह तन विनसन लगा, करो धर्म की बात॥
(३) जो सच्ची हितकारिणी, हो पतिभक्ता नार।
इस अवसर ममता तजो, दुर्गति की दातार॥
(४) जाता था परगाँव जब, तुम विवेक की खान।
देती थी मुझको सदा, खाने को पक्वान॥
(५) परभव भाता बांध दो, शुभ परिणाम अथोरि[1]।
अब तू मोह ममत्व कर, अहित करो ना मोरि॥

(१) अथोरि– बहुत।

(६) धर्मसंगिनि ! दो मुझे, अन्त समय में साज।
भव भव का फेरा टले, सीझे आतम काज॥
(७) जिन निगदित[1] शुभ धर्म का, पालन करना रोज।
बन कर सच्ची श्राविका, करना आतम खोज॥
(८) धर्म ध्यान में लीन हो, जिन वाणी अनुसार।
मोह त्याग शुभ कर्म कर, धीरज मन में धार।
(९) अशुभ ध्यान को त्याग कर, करो सदा शुभ ध्यान॥
ज्ञान सहित शुभ कर्म कर, करो आतम कल्याण॥
(१०) ज्ञानादिक शुभ रतन धर, करो नियम पचखाण।
जिन भाषित शुभ धर्म का, निशदिन करना मान॥

पुत्र के प्रतिः—

(१) नीति सहित संसार से, सुत ! रखना व्यवहार।
वंश दिपाना आपना, तज कर मिथ्याचार॥
(२) सद्गुरु की सेवा करो, श्रावक व्रत लो धार।
श्रद्धा रक्खो धर्म में, आगम के अनुसार॥
(३) जूआ सट्टा फाटका, कभी न करना भूल।
लोगों में इज्जत घटे, पुनि चिन्ता का मूल॥
(४) लोक हंसी नृप दंड पुनि, जिन कामों से होय।
उन कामों से दूर रह, जाते हंसी न होय॥
(५) संप किये लक्ष्मी बढ़े, प्रेम रखे सुख होय।
मामलबाजी[2] से सदा, घर का धन छिन[3] होय॥
(६) संगत करना गुणिन की, शिक्षा उनकी मान।
खोटी आदत त्याग कर, जन्म करो फलवान[4]॥

---

१ निगदित—भाषित—कहा हुआ। २ मामलबाजी— मुकदमा बाजी।
३ छिन— क्षीण। ४ फलवान—सफल।

(७) न्याय मार्ग का पथिक बन, कभी न कर अन्याय।
नहिं विरुद्ध कुछ काम कर, ज्ञाति वर्ग के मांय॥
(८) उस मत में शामिल रहो, जिसमें सत्य विचार।
खींचा तानी मत करो, गुरुजन शिक्षा धार॥
(९) अवगुण काढ़ो आपना, दोष न दीजे काहु।
मत कर निन्दा अन्य की, गुण ग्राहक बनि जाहु॥
(१०) शान गुमान करो नहीं, चलो सादगी चाल।
मीठा वचन पुकार कर, हिल मिल सब से हाल॥
(११) तू जौहरि यह कूँजड़ी, क्यों करता तकरार।
इसकी भाजी बिखरसी, तेरे रत्न अपार॥
(१२) बुरी रीति को त्याग कर, सत्यमार्ग को धार।
जैन धर्म पालन करो, आगम के अनुसार॥

शान्ति मार्ग—

(१) कहाँ शान्ति का मूल है, ढूंढ रहा संसार।
कस्तूरी निज नाभि में, पर मृग भ्रमत गँवार॥
(२) मैं ही दुख का मूल हूँ, मैं ही परमानन्द।
स्वामी हूँ मैं दास हूँ, हूँ बँधित स्वच्छन्द॥
(३) राग द्वेष दो पट विकट, चेतन उसमें बन्द।
पराधीनता है जहाँ, वहाँ न है आनन्द॥
(४) क्यों करता तू राग है, तेरा है कह कौन।
संकट में तू देखना, होंगे सारे मौन॥
(५) अरे द्वेष क्यों कर रहा, हैं सब तेरे मीत।
तेरा बोझ बटा रहे, लड़ता उल्टी रीत॥
(६) जैसे चन्दन लेप से, मिटे देह सन्ताप।
तैसे धीरज से मिटे, चेतन के त्रय-ताप[1]॥

---

(१) त्रय-ताप—आधि, व्याधि, उपाधि।

(७) जो देते हैं गालियाँ, या करते तकरार।
वे सुगती को भेजते, तुझको धक्का मार॥
(८) रे अधीर क्यों हो रहा, धीरज का गुण धार।
जो भवसागर विकट का, पाना ही है पार॥
(९) आग आग से ना बुझे, पानी से बुझ जाय।
क्रोध क्रोध से ना मिटे, समता से मिट जाय॥
(१०) जैसे चन्दन लेप से, मिटे दाह ज्वर पीर।
तैसे समता से मिटे, क्रोधी की तासीर॥
(११) सुख में फूला क्यों फिरे, क्यों दुख में घबराय।
जो सुख के दिन ना रहे, तो दुःख क्यों टिक जाय॥
(१२) अनुभव का कर दीप ले, बढ़ आगे हर बार।
तब पहुँचेगा ध्येय[1] को, ए चेतन अविकार।
(१३) पाने से संवेग के, दृढ़ होता वैराग्य।
राग द्वेष को जीतता, होता विकसित[2] भाग्य॥
(१४) बना जीव निर्वेद तो, छोड़ेगा आरम्भ।
करता है वह पथ[3] विमल[4], शिवपुर[5] का आरम्भ॥
(१५) श्रद्धा से ही प्राप्त हों, त्याग और वैराग।
सुर सुख को भी त्यागते, कर शिव सुख अनुराग[6]॥
(१६) सेवा देती विनय को, विनय सभी गुणखान।
गुण का धारक जीव ही, करे मोक्ष प्रस्थान॥
(१७) शत्रु मित्र सुख दुःख में, साम्य भाव को धार।
यह सामायिक सुखद है, रुके पाप आचार॥
(१८) क्षमा याचना से मिटें, क्लेश और संताप।
बढ़े मित्रता भय हटे, विकसित हो गुण आप॥

---

१ ध्येय—लक्ष्य। २ विकसित—विस्तार होना, फैलना। ३ पथ—रास्ता।
४ विमल— निर्मल। ५ शिवपुर—मोक्ष। ६ अनुराग—प्रेम।

९) क्रोध विजय से नाथ क्या, होता है उपकार।
क्षमा शान्ति-प्रद प्राप्त हो, हटे कर्म का भार ॥
१०) मान विजय से नाथ क्या, होता है उपकार।
विनय शील बन जाएगा, छोड़ कर्म का भार ॥
२१) माया जीतन से प्रभो, क्या होता उपकार।
सरल-भाव-सम्पन्न हो, सद्गति का दातार ॥
२२) लोभ विजय से जीव का, क्या होता उपकार।
पायेगा संतोष को, सब सुख का भण्डार ॥
२३) धर्म रूप शुभ वृक्ष का, विनयमूल पहचान।
ताते यश कीरति बढ़े, पावे पद निर्वाण ॥
२४) यदि कोई वन्दन करे, या कर दे अपमान।
राखे समता दोउ में, सो ज्ञानी पहचान ॥
(२५) शस्त्र घाव कुछ काल तक, करता है बेचैन।
वचन घाव लग जाय तो, दुखित करे दिन रैन ॥
(२६) सत्वों से हो मित्रता, गुणिजन का हो चाव।
कृपा क्लिष्ट[1] जन पर रहे, वैरी पर समभाव ॥

कल्याण-मार्ग

(१) 'बूँद बूँद से घट भरे'—यह जानत सब कोय।
गुण का ग्राहक अंत में, गुण-रत्नाकर[2] होय।
(२) जिस गुण की अनुमोदना, करते हैं नर नार।
वह गुण आता साथ है, छाया के अनुसार ॥
(३) पर निन्दक पर दोष को, लेता हाथ पसार।
गुण गाहक गुण को गहे, दुनिया है बाजार ॥

---

१ क्लिष्ट—दुखी। २ गुण-रत्नाकर – गुणों का समुद्र।

(४) कर्मों से इस जीव को, जानो अति बलवंत।
भव भव के सब कर्म का, क्षण में करता अंत॥
(५) मोह कर्म की प्रबलता, करे कर्म बलवान।
मोह कर्म की शिथिलता, करत कर्म की हान॥
(६) देह वृक्ष की छाँह में, बैठे आत्म सफीर[१]।
कौन जानता कब उड़े, जैसे पञ्जर[२] कीर[३]॥
(७) एक आत्म पहचान से, भव भव के सब रोग।
मिट जाते हैं जीव के, यों कहते मुनि लोग॥
(८) जैसे बादल के हटे, सूर्य प्रकट हो जाय।
राग द्वेष पट के हटे, ज्ञान प्रकट हो जाय॥
(९) महारोग इस जगत के, कैसे हैं भगवान।
प्रथम रोग 'आरंभ' है, द्वितय 'परिग्रह' जान॥
(१०) रजकण पड़कर नेत्र में, खटकत जिमि दिनरैन।
समदृष्टी आरम्भ से, रहता तिमि बेचैन॥
(११) ज्ञानी अपनी देह से, करते कर्म विनाश।
अज्ञानी की देह है, केवल उसकी पाश[४]॥
(१२) नर भव आया, है गया, इस भव में रख ध्यान।
निष्फल चला न जाय यह, कर इसमें कल्याण॥

आत्म निन्दा—

(१) जीव अनेकों वध किये, बोला मिथ्यावाद।
चोरी से पर धन हर्या, किया ब्रह्म[५] बरबाद॥
(२) ढेरी की बहु वस्तु की, जिसका नहिं कुछ काम।
पड़ी पड़ी वह सड़ गई, भरी हुई गोदाम॥

---

१ सफीर – मुसाफिर। २ पञ्जर –पींजरा। ३ कीर – तोता।
४ पाश – जाल, बन्धन। ५ ब्रह्म–ब्रह्मचर्य।

(३) हूँ लम्पट हूँ लालची, कर्म किया कई कोड़।
तीन भुवन में है नहीं, मेरी कोई जोड़॥
(४) छिद्र पराया रात दिन, जोता हूँ जगनाथ।
कुगति तणी करणी करूँ, जोड़ूँ उनमे साथ॥
(५) मैं अवगुण की कोटड़ी, नहिं गुण मुझ में कोय।
पर गुण देख सकूँ नहीं, तिरना किस विध होय॥
(६) विन कीधा बिन भोगिया, फोकट कर्म बंधाय।
आर्त्त रौद्र मिटता नहीं, कीजे कौन उपाय॥
(७) झूठ कपट बहु सेविया, किया पाप का संच।
भोलों को ठगिया घणा, करि अनन्त परपंच॥
(८) मन चंचल थिर ना रहा, राचा रमणी रूप।
कर्म विटमना क्या कहूँ, नाँखे दुर्गति कूप॥
(९) अधमों में मैं हूँ अधम, अवगुण भरे अनेक।
किसी हिताहित कर्म का, मुझमें नहीं विवेक॥
(१०) मैं क्रोधी मैं लालची, नहिं छोड़ा अभिमान।
मैं कपटी अविनीत हूँ, पापी भैरवदान॥
(११) हाय न मुझसे हो सका, जनता का उपकार।
यश के कारण ही किया, मैंने सब व्यवहार॥
(१२) नाथ! दिवस कब आयगा, जब होऊँ अनगार।
कर्म बोझ को डाल कर, बनूँ सिद्ध अविकार॥

आलोचना—

(१) अनुपम[१] जिनकी ज्योति से, जग मगात संसार।
सदा हमारे मन बसो, जिनवर जग हितकार॥
(२) करूँ वन्दना वीर को, और जपूँ नवकार।
पापों की आलोचना, करता हूँ इस बार॥

(१) अनुपम—उपमारहित।

(३) प्रथम शरण अरिहंत का, द्वितय सिद्ध का जान।
तृतय सन्त जन का कहा, चौथा धर्म प्रमाण॥
(४) शरण गही प्रभु आपकी, करता आतम विचार।
मैंने भव भव में प्रभो!, सेव्या पाप अठार॥
(५) चौरासी लख योनि को, दुखित किया दिन रात।
लेखा उसका क्या कहूँ, कहते जी घबरात॥
(६) थावर त्रस के प्राण से, मैंने खेले खेल।
पूँजी से देना बढ़ा, मिले न बिल्कुल मेल॥
(७) अष्टादश[1] जो पाप हैं, उनका बोझ अपार।
डगमग नैया कर रही, कैसे पाऊँ पार॥
(८) जाकर भव भव में किये, मैंने अत्याचार।
सोच सोच कर हो रहा, विचलित हृदय अपार॥
(९) मन वच तन के योग से, जो कुछ किय अतिचार।
जैनागम विपरीत जो, भाषण या आचार॥
(१०) कल्प विरोधी काम या, अकरणीय कुछ काम।
आर्त्त रौद्र किय ध्यान जो, धर्मध्यान से वाम[2]॥
(११) मेरे चेतन ने कभी, जो की दुष्ट निगाह।
नियमों का कुछ भंग या, बुरी वस्तु की चाह॥
(१२) श्रावक धर्म विरुद्ध जो, किया कभी कुछ काम।
पुनि दर्शन या ज्ञान के, किया कभी कुछ वाम॥
(१३) देशव्रत आगम तथा, सामायिक अतिचार।
मोह विवश सेवन किया, जो कुछ मिथ्याचार॥
(१४) मन, वच, तन, व्यापार को, वश में रखा न होय।
जो क्रोधादि कषाय का, दमन किया नहिं होय॥

(१) अष्टादश–अठारह। (२) वाम–विपरीत।

(१५) अणुव्रत पहले पांच हैं, गुणव्रत तीन सुजान।
शिक्षा व्रत हैं चार पुनि, ये बारह व्रत जान॥
(१६) एक देश या सर्व से, हुई विराधना कोय॥
सेवें हो अतिचार जो, मिच्छा दुकडं मोय॥
(१७) इस भव पर भव में किया, पनरा कर्मादान।
त्रिविध त्रिविध से वोसिरूँ, जो दुर्गति की खान॥
(१८) यंत्रादिक आरंभ के, मैंने कीने काम।
त्रिविध त्रिविध से वोसिरूँ, फेर नहीं परिणाम॥
(१९) बाग बगीचा खेत घर, जो भी मेरे होंय।
त्रिविध त्रिविध से वोसिरूँ, ममता तहाँ न मोय॥
(२०) मेरे निज के नाम में, घर दुकान जो होहिं।
उन सबको मैं त्यागता, ममता जरा न मोहिं॥
(२१) निन्याणू अतिचार में, जो जो सेव्या होय।
करता हूँ आलोचना, मिच्छा दुकडं मोय॥
(२२) मैं अपराधी जन्म का, सेव्या पाप अठार॥
निज आतम की साख से, बार बार धिक्कार॥
(२३) व्रत नियमादिक में कभी, टंटा लाग्या होय।
अरिहँत सिद्ध की साख से, मिच्छा दुक्कडं मोय॥
(२४) चौरासी लखयोनि में, फिरियो बार अनंत।
पाप अलोऊँ पाछला, अब तारो भगवन्त॥
(२५) जाने अनजाने कभी, सेवे पाप महान।
उन सब की आलोचना, करता

क्षमायाचना।

(१) चौरासी-लख योनि का, क्षमा करूँ सब दोष।
क्षमा करें पुनि वे मुझे, मुझसे रखें न रोष[1]॥

(२) मैत्री भाव सदा मुझे, सब जीवों के साथ।
वैर नहिं मुझको कहीं, किसी जीव के साथ॥

(३) मन, वच, तन, व्यापार से, मैंने किये जो पाप।
वे सब मिथ्या हों सदा, बनूँ सदा निष्पाप॥

(४) पुनि उनसे जो कुछ किया, सह कषाय व्यवहार।
क्षमा चाहता ताहि के, मन, वच, तन, व्यापार॥

(५) पूज्य श्रमण मुनि संघ को, हाथ जोड़ सिर नाऊँ[2]।
उनके दोषों को खमूँ, पुनि निज दोष खमाऊँ॥

(६) भाव सहित सब जीव से, धर्म बुद्धि थिर होय।
खमूँ खमाऊँ दोष को, जो दोनों का होय॥

(७) राग द्वेष अकृतज्ञता[3], या आग्रह[4] वश जोय।
कही बात हर तौर से, क्षमा करें सब कोय॥

(८) सेठ महेता[5] रोकड्या, जो मेरे संग होंय।
या मेरे सम्पर्क में, जो कोइ आये होंय॥

(९) सगे कुटुम्बी बन्धु जन, या गोत्रज जो कोय।
खमूँ खमाऊँ दोष को, हुआ परस्पर जोय[6]॥

(१०) झगड़ा टंटा आदि या, क्रोध विवश व्यवहार।
किया किसी के साथ जो, जो कुछ मिथ्याचार॥

(११) या कोइ ऐसा दोष हो, जिसका नहिं कुछ ज्ञान।
क्षमा करें मम दोष को, मुझको बालक जान॥

---

(१) रोष-द्वेष। (२) नाऊँ-नमाता हूँ। (३) अकृतज्ञता-कृतघ्नता।
(४) आग्रह-हठ। (५) महेता-मुनीम-गुमास्ता। (६) जोय-जो।

(१२) चौरासी लख योनि से, तन, मन, वच से जान।
क्षमा याचना कर रहा, श्रावक भैरवदान॥
(१३) सकल चराचर जगत का, होय सदा कल्यान।
सब प्राणी पर हित रहे, करें धर्म का मान॥
(१४) सब मंगल का मूल जो, सभी शिवों का हेतु।
जिन शासन विजयी रहे, सभी धर्म का केतु॥

॥ इति सुभम् ॥

पुस्तक प्राप्ति स्थानः—

श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया
श्री सेठिया जैन लाइब्रेरी
बीकानेर (राजपूताना)
Bikaner

श्री रामकृष्ण प्रिंटिंग प्रेस, नसीराबाद रोड अजमेर।

कषाय-विजय



१—क्रोध विवश नर और की, सहन करे ना बात।
खोता आत्म विवेक को, करे आप की घात॥

२—क्षमा शील नर क्रोध को, करता है उपशांत।
सहनशीलता गुण बढ़े, गिना जाय वह दान्त[1]॥

३—कायर जन क्या गह सके, क्षमा रूप तलवार।
क्षमा वीर भूषण कहे, गुरु जन बारंबार॥

४—अहंकार के भाव को, मान कहा जिनराय।
अभिमानी का विनय गुण, छिन में जाय विलाय॥

५—मानी अपने मान में, तुच्छ गिने संसार।
करे अहित वह विश्व का, बांध कर्म का भार॥

६—रहा न रावण राजवी, रहे न चक्री[2] राय।
फिर करना अभिमान का, कैसे उचित कहाय॥

७—मृदुता से अभिमान को, बदल दीजिये मित्र।
विनय वन्त का चरित जग, होता परम पवित्र॥

८—मन बच तन की कुटिलता, माया का परिणाम।
पर वञ्चन[3], पर धन हरण, हैं माया के काम॥

९—सरल भाव संसार में, माया का प्रतिकार[4]।
आदर पाता है वही, जिसके सरल विचार॥

१०—द्रव्यादिक की चाहना, लोभ वृत्ति कहलाय।
ममता, मूर्च्छा, गृद्धिता, हैं इसके पर्याय॥

११—लोभ विवश नर नीचता, के करता है काम।
त्यों-त्यों बढ़ती मूर्च्छना[5] ज्यों-ज्यों बढते दाम॥

१२—संतोषामृत के बिना, कभी न हो आनन्द।
सुख चाहो तज लोभ दो, पड़ो न इसके फन्द॥



---

१ दान्त—इन्द्रियादि का दमन करने वाला। २ चक्री राय— चक्रव[र्ती]
३ वञ्चन—ठगाई। ४ प्रतिकार—विरोध। ५ मूर्च्छना—तृष्णा।

हितोपदेश

१—सब के साथ प्रेम रक्खो। दूसरे की निन्दा न करो किन्तु प्रकट करो और प्रिय वचन बोलो।

२—लक्ष्मी चञ्चल है, आयु जल के बुद्बुद् के समान और विजली के चमत्कार के समान अस्थिर है। इस लिए धर्म का सेवन करो

३—सत्संगति परम लाभ, संतोष परम धन, सद्विचार परमज्ञान समता परम सुख है।

४—सत्पुरुषों की संगति करो। नीचों और कुव्यसनियों से सदा दूर

५—धर्म की जड़ दया और पाप की जड़ कुव्यसन है।

६—परस्त्री को माता, बहन या बेटी के समान समझो।

७—क्षमा अमृत है। उद्यम मित्र है। सत्य और शील शरण है। सुख है। अति लोभ पाप का बाप है।

८—जिस धन से दीन दुखी जनों का उद्धार न किया हो, सुपात्र दान न दिया हो और कुटुम्बियों का पोषण न किया हो, वह धन धूल है। हक़ में बरक़त है।

९—परोपकार पुण्य है और दूसरे को पीड़ा देना पाप है। अपनी पार उतरनी। जैसा देना वैसा लेना। इस हाथ दे उस हाथ ले। अन्याय पैसा मूल धन का भी नाश करता है।

१०—संसार के सब जीवों से मित्रता, गुणवान् पुरुषों से प्रेम, जीवों पर दया और शत्रुओं पर माध्यस्थभाव रक्खो।

११—समस्त प्राणियों को अपने समान, पर धन को पत्थर और परस्त्री को माता समान समझो। जो अपना भला चाहो तो ... का भला करो। विद्या आत्म ज्ञान के लिये, धन दान के लिये और ... दूसरों की रक्षा के लिये है।

पुस्तक मिलने का पता —

श्री अगरचंद भैरोदान सेठिया

जैन पारमार्थिक संस्था,

मरोटी सेठियों का मोहल्ला, बीकानेर

... प्रेस, अजमेर

प्रस्तावना.

इस असार संसारमें वीतराग प्रभुका नाम स्मरण कीयासे द्रव्यसे और
ावसे ए दो प्रकारे सुखकी प्राप्ती होती है. द्रव्यसे तो यश कीर्ति तथा
क्ष्मी प्राप्ती करके सुमार्गमें प्रवरतावे. भावे क्रोधादिक षडरिपुको क्षय करे.
ौर मोक्षरूपी सुखकी प्राप्ती करे. इसलिए वीतराग प्रभुका उपदेश नितप्रत्ये
ढनेके लिए मैनें अल्पबुद्धिसे, जुने २ स्तवन संझाय लावणी वगैरे लेकर
् **"श्रावक नित्य स्मरण"** नामकी पुस्तक तैयार करी है. कारण आज
कल अपने जैन बंधुकूं राग रागणी वहोत प्यारी लगती है. इसलीए इस
ुस्तकमें ढुंढकर बहोत रसीक अति सुरस मधुर चटकदार राग रागणी
ाखल करी है. इस पुस्तकमें विधिसहीत समायिक आनुपूर्वी प्रभातीया छंद
स्तवन संझाय लावणी ललीत छंद बारामासीया हालरीया समगतके ६७
बोलका थोकडा वगैरे अनेक २ विषयका समावेश करके जैनबंधुके लिए
छपाकर प्रसिद्ध करी है.

"लेखक"

इस पुस्तकमें नजरचुकसे अक्षर काना मात्रा कम जादा होवे तो
सुज्ञ जनोनें सुधार लेना.



अनुक्रमणिका.

विषय.	पृष्ठ.
: णमोकार महामंत्र.	१
:ना का पाठ.	१
ामायिकसूत्र विधियुक्त.	१
ामायिक पारनेकी विधि.	४
ानुपूर्वी गणवानुं फल.	५
ानुपूर्वी	६-२५
ी चोवीस तीर्थंकर नाम	२६
ी वीस बेहरमान तीर्थकर नाम.	२६
श्री इग्यारे गणधरनाम.	२७
सोळे सत्यारानाम.	२७
रमेष्टि स्तवन.	२८
ार सरणा.	२९
ीन मनोरथ.	३०
ावदे नेमरा नाम.	३२
७ कायना नाम.	३३
ळघुमाधुवंदना.	३४
ड़ीसाधुवंदना.	३५
चिंतामणी पार्श्वप्रभूकू अर्जी	४१
चोवीसी स्तवन.	४२
महावीरस्वामी स्तवन	४३
पंचपरमेष्टी नमन	४५
पंचपरमेष्टी प्रभाती स्तवन	४५
ऋखवनाथजीरो पाळणो	४६

विषय.	पृष्ठ.
पार्श्वनाथजीको स्तवन	४६
शांतिप्रभुको स्तवन	४८
पारसनाथप्रभुको स्तवन	४८
शांतिनाथ प्रभुकी लावणी	४९
शांतिनाथ प्रभुको हालरीयो	५१
नेमजीकी जान	५२
सिद्धपद स्तवन	५३
बीस विहरमानको छंद	५५
सोळेसतीयाको स्तवन	५५
राजीमतीको स्तवन	५६
राजीमती देवरने समझावे संझाए.	५७
दशारणभद्रजीरो स्तवन	५९
भरतचक्रीको स्तवन	६१
श्रीवेलावळराग पद	६२
मुक्ति जाणेकी डिगरी	६३
महावीर प्रभुकु आर्जी	६५
जिनराजकु विनंती	६५
सुमतिनाथ प्रभुकु आर्जी	६६
जिनराजसे विनंति	६६
शीतळनाथप्रभूसे आर्जी	६७
महावीरस्वामीको स्तवन	६७
उपदेशी वंजारा	६८
उपदेशी पद	६८

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	
मराठी भाषेंत जिनराजप्र-भूस विनन्ति	६९	सामायिकलाभकी संझाय	८
मराठी भाषेंत समवसरण	६९	प्रसन्नचंद्र राजर्षीको स्तवन	८
उपदेशी पद	६९	उपदेशी लावणी	८
जीवकायाका सवाल	७१	सीमंधर जीनु स्तवन	९
तत्वपेछाण	७२	मनकु उपदेशी पद	९
उपदेशी बंजारा	७३	मनकू सिखविषे पद	९
उमररूप इंद्रजालकाख्याल	७३	नरभवको पद	९
धन्नामुनीको स्तवन	७४	देव, गुरु, धर्म विषे स्तवन	
पांसठीया यंत्रको छंद	७५	समकितको स्तवन	९
शांतिनाथ प्रभुको छंद	७६	उपदेशी लावणी	९
” ” ”	७८	गुरुचेलाको संवाद	९
मानव डरको स्तवन	७९	उपदेशी मराठी पद	९
गुरु उपदेश स्तवन	८०	चोवीसी	९
रिखभदेवजीको पारणो	८०	आठारे पापस्थानरो स्तवन	९
सोळेसुपनाकी लावणी	८१	सोल सतीयोंका स्तवन	९
सात व्यसनको त्याग	८४	वीस विहरमान स्तवन	१
गुरुदर्शन विनन्ति	८४	इग्यारे गणधरका स्तवन	१
धरमको सरणाको स्तवन	८५	श्रीरत्नरीखजी महामुनिको पद	१
गुरुदर्शन स्तवन	८५	रत्नरीख मुनीकी लावणी	१
छे कायाको स्तवन	८६	दगडुरीखजी मुनिका आगमन	१
मुनिमार्ग कठिण स्तवन	,,		

पुस्तक मिलनेका पत्ताः—उदेचंद रतनचंद डागा.

जि० रायच्चूर, पोस्ट लिंगसुरकी छावनी, लैन

मुकाम लिंगसुरकी छावनी. मु०

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ श्री णमोकार महामंत्र ॥

॥ १ ॥ णमो अरिहंताणं ॥

॥ २ ॥ णमो सिद्धाणं ॥

॥ ३ ॥ णमो आयरियाणं ॥

॥ ४ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥

॥ ५ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

वंदनाका पाठ.

तिक्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं, वंदामि, णमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि.

सुखसाता है जी, महाराजजी साहेब!

॥ सामायिक सूत्र विधियुक्त ॥

[प्रथम नवकार मंत्र पढके फिर "तिक्खुत्तो" के पाठसे वंदणा कर फिर-]

आवसइ इच्छा कारण संदेह सह भगवान् ईरियाव पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ईरियावहीयाए नि

गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसाउ पणगदग, मट्टीमक्कडा, संताणासंक्कमणे, जे मे जीवा, वि एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अ वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिदाविया, उद्दाविया, ठाणाऊ ठाणं संकामिया, जीवियाऊ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

फिर "तस्स उत्तरी" का पाठ कहना.

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोहीकरणेण विसल्लिकरणेण, पावाणं कम्माणं, णिग्घायणठाए, ठामि काउ स्सग्गं, अण्णथ्थ उसीसएण, निसीसएण, खासिएण, जंभाइएण, उड्डुएण, वायणिसग्गेण, भमालिए, पित्तमुच्छ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसं चालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिऊ हुज्ज काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, णमोक्कारेण, ण तावकायं, ठाणेण मोणेण, झाणेण, अप्पाणं वोसरामि. ॥

अब " इरियावहि " और एक " नवकार " का काउस्सग्ग करना और " णमो अरिहंताणं " ऐसा बोलके काउस्सग्ग पारना;

लोगस्सका पाठ करना.

(अनुष्टुप्वृत्तम्.)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतिथ्थयरे जिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं, चऊवीसं पि केवली ॥ १ ॥

(आर्यावृत्तम्.)

उसभमजियं च वंदे । संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥ १ ॥

पउमप्पहं सुपासं । जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फयंतं । शीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥
विमलमणंतं च जिणं । धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं णमिजिणं च ॥
वंदामि रिठ्ठणेमिं । पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथ्थुया । विहुयरयमला, पहीणजरमरणा ॥
चऊवीसं पि जिणवरा । तिथ्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया । जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥
आरुग्गबोहिलाभं । समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु णिम्मलयरा । आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥
सागरवरगंभीरा । सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

अब खडा होकर तिख्खुत्तोका पाठ तीन वार विधिसहित पढके वंदना करके गुरु आदिककी पास सामायिककी आज्ञा मंगना. गुरू आदिक न होनेसे पूर्व और उत्तर दिशाकी तर्फ खडा होकर श्री सीमंधर स्वामिकी आज्ञा मंग सामायिक आदरना.

सामायिक ग्रहण करनेका पाठ.

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जाव णियम पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेण; ण करेमि, ण व कारवेमि, मणसा, वयसा, कायेण, तस्स भंते पडिक्कमामि, णिंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसरामि.

फिर नीचे बेठ डावा गोडा ऊभा रख उसपे दोन हाथ जोडके—

नमोथ्थुणं का पाठ कहना.

॥ नमोथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइयराणं, तिथ्थयराणं, सयसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहथ्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं,

लोगहियाणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चरुखुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दीवोताणं, सरणगइपइट्ठाणं, हयवरनाणं, दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं, जिणाणं, तिण्णाणं, तारयाणं, वुद्धाणं, वोहियाणं, मुत्ताणं, सव्वण्णाणं, सव्वदरिसिणं, सिव-मयल-मुरुय-मणंत-मक्खय वाह-मप्पुणराविति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणंसंपत्ताणं, जिणाणं, जियभयाणं. ॥

विधि:— पीछे स्थिर चित्तसे नामस्मरण, शास्त्रश्रवण, मनन जब सामायक पारणेका वक्त होने तब इरियावही, तस्सउत्तरी, कहना और इरियावहीका काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स कहना. डावा गोडा ऊचा रखके दोनू हाथ जोडकर दो वार नमोथ्थुणं फिर नीचे मुजब पाटी कहना—

सामायिक पारनेकी विधि.

एहवा नवमा सामायिक व्रतका, पंच अइयारा जाणियव्वा न समारियव्वा, तं जहा ते आलोउं, मणदुप्पडिहाणे, वयदुप्पडिहाणे, कायदुप्पडिहाणे, समायस्सइसय अकरणयाए, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणयाए, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥

सामायिकं सम्मकाएण, फासियं, पालियं, सोहियं, तिरियं, किट्टियं, आराहियं, अणुपालियं, आणाए अणुपालिता भवइ, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥

सामायिकमें दश मनका, दश वचनका, वार कायका वत्तीस दोषमेंसे जो कोई दोष लगा होवे तो, मिच्छा मे दुक्कडं

सामायिकमें स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा, राजकथा

ार कथामेंसे जो कोई कथा की गई होवे तो, तस्स मिच्छा दुक्कडं ॥

सामायिकव्रत विधिसें लिया, विधिसें पारा, विधि करनेमें ाविधि हो गइ होवे तो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥

सामायिकमें अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, ाननेमें, अजानतामें, मनसें, वचनसे, कायासे जो कोइ दोष ागा होवे तो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥

सामायिकमें कानो, मात्रा, मींडी, पद, अक्षर कमी, ज्यादे, वेपरीत पढाया होवे तो अनंता सिद्ध केवली भगवंतकी साखे ास्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥



आनुपूर्वी गणवानुं फल.

आनुपूर्वी गणज्यो जोय, छमासी तप नुं फल होय ॥ संदेह नव आणो लगार, निर्मल मने जपो नवकार ॥ १ ॥ शुद्ध वस्त्र धरि विवेक, दिन दिन प्रत्ये गणवी एक ॥ एम आनुपूर्वी जे गणे, ते पांचसें सागरनां पापने हणे ॥ २ ॥ अशुभ कर्मके हरणकूं, मंत्र बडो नवकार ॥ वाणी द्वादश अंगमें, देख लियो तत्त्वसार ॥ ३ ॥ एक अक्षर नवकारनो शुध्द गणे जे सार ॥ ते बांधे शुभ देवनूं, आयुष्य अपरंपार ॥ ४ ॥ उगणीस लाख त्रेशठ हजार, वरसें वासठ पल ॥ त्यांसुधी सुख भोगवे, नवकार मंत्रनुं फल ॥ ५ ॥



अनानुपूर्वी. १

णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५

१ पेले बोले तपशीयाकर नीयाणु नही करे तो जीवने परम कल्याणरो कारण कीगपरे तामली तापसनीपरे साखशास्त्र भगवती सूत्रकी.

अनानुपूर्वी. २

णमो अरिहताण १	णमो सिद्धाण २	णमो उवज्झायाण ४	णमो आयरियाण ३	णमो लेयेसव्वसाहूण ५
णमो सिद्धाण २	णमो अरिहंताणं १	णमो उवज्झायाणं ४	णमो आयरियाण ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो अरिहताणं १	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाण २	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो उवज्झायाणं ४	णमो अरिहंताण १	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्झायाणं ४	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५

२ दुजे बोले सम्कीत नीरमळ पाळे तो जीवने परम कल्याणरो कारण कोणपरे श्रेणीक राजा कृष्णजीपरे साखआख आंतगडसूत्रनी.

अनानुपूर्वी, ३

णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो अरिहंताणं १	णमो उवज्झायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो उवज्झायांणं ४	णमो अरिहताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो आयरियाणं ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो उवज्झायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५

३ तीजे बोले मनबचन कायारा जोग ठाम राखे तो जीवने कल्याणनरोकारण कीणपरे गजसुमालनींपरे साखशाख

अनानुपूर्वी. ४

णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाण ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो अरिहताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्झायाण ४	णमो अरिहताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो सिद्धाण २	णमो उवज्झायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५
णमो आयरियाण ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५
णमो उवज्झायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५

४ चौथे बोले खीमीया करेतो जीवने परम कल्याणरो कारण कीणपरे परदेशी राजानीपरे साखशास्त्र रायपसेणीसूत्रकी.

अनानुपूर्वी. ५

णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४
णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४
णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४
णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४
णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४
णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४

५ पाचमे बोले पंचमहाव्रत चोखा पाळे तो जीवने परम [illegible]
कारण कोणपरे श्रीगोतमस्वामीनीपरे साखशास्त्र भगवतीसूत्रकी.

अननुपूर्वी. ६

णमो अरिहताणं १	णमो सिद्धाण २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३	णमो उवझायाणं ४
णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४
णमो अरिहताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाण २	णमो आयरियाण ३	णमो उवझायाणं ४
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४
णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहताणं १	णमो आयरियाण ३	णमो उवझायाणं ४
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाण ३	णमो उंवझायाण ४

६ छटे बोले अपरा अवगुण देखी मनमे झुरे तो जीवने परम कल्या-णरो कारण कीणपरे सेलकराय ऋखीपरे साखशास्त्र गीनाताजी सूत्रकी.

अननुपूर्वी. ७

णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्ञायाण ४
णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्ञायाणं ४
णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाण ३	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्ञायाण ४
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्ञायाण ४
णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्ञायाणं ४
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो उवज्ञायाण ४

७ सातमे बोले पांच इंद्री पोतें बस करे तो जीवने परम कल्याणो कारण कीणपरे मेघकुंवारनीपरे साखशास्त्र गीनाताजीसूत्रकी.

अननुपूर्वी. ८

णमो सिद्धाण २	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४
णमो आयरियाण ३	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिंहंताणं १	णमो उवझायाणं ४
णमो सिद्धाणं २.	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४
णमो लेयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४
णमो आयरियाण ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४

८ आठमे बोले माया कपटाई न करे तो जीवने परम कल्य
कारण कीणपरे मल्लीनाथ छमीत्रनीपरे साखशास्त्र गीनाताजीसूत्रकी

अनानुपूर्वी. ९

णमो अरिहताण १	णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाण ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३
णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहताण १	णमो उवझायाण ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३
णमो अरिहताणं १	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाण २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३
णमो उवझायाण ४	णमो अरिहंताण १	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३
णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहताण १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाण ३
णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३

९ नवमे बोले धर्मनी खरी प्रतीत राखे तो जीवने परम स्याण
कारण कीणपरे बनागनटवाना मित्रनापरे साखशास्त्र भगवतीसूत्रकी.

अनानुपूर्वी, १०

णमो अरिहताण १	णमो सिद्धाण २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३
णमो सिद्वाण २	णमो अरिहताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाण ४	णमो आयरियाणं ३
णमो अरिहंताण १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	[illegible]
णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहताणं १	[illegible]	[illegible]
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१० दसमे बोले [illegible]
कारण कोणपरे तो [illegible]

अनानुपूर्वी, ११

णमो अरिहंताण १	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाण २	णमो आयरियाण ३
णमो उवझायाण ४	णमो अरिहताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाण २	णमो आयरियाण ३
णमो अरिहंताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाण ३
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहताण १	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाण ३
णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहताण १	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाण ३
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहताणं १	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाण ३

११ इग्यारमे बोले अभयदान देवेतो जीवने परम कल्याणरो कारण कीणपरे मेघकंवारना पुरबभवरा हाती नापरे साख गीनाताजी शास्त्रसूत्रकी

अननुपूर्वी, १२

णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहताणं १	णमो आयरियाण ३
णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताण १	णमो आयरियाणं ३
णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहताणं १	णमो आयरियाणं ३
णमो ले.येसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाण २	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३
णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहताणं १	णमो आयरियाणं ३

१२ बारमे बोले धरमनावीखे दृढता राखे तो जीवने परम कल्याणरो कारण कोणपरे आरणक श्रावकनीपरे साखशास्त्र गीनातृाजीसूत्रकी.

अननुपूर्वी. १३

णमो अरिहंताण १	णमो आयरियाण ३	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाण २
णमो आयरियाण ३	णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २
णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २
णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २
णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २
णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २

१२ तेरमे बोले सीयलव्रत नीरमळ पाळे तो जीवने परम कल्याणो कारण कीणपरे राजमतीनापरे साखशास्त्र दसवैकालिकसूत्रकी.

अनानुपूर्वी. १४

णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २
णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २
णमो अरिहताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २
णमो आयरियाण ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहंताणं १	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २
णमो लोयेसच्वसाहूणं ५	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहताणं १	णमो उवज्झायाणं ४	णमो सिद्धाणं २

१४ चवदमे बोले परिग्रहनो संतोस करे तो जीवने परम कल्याणरो कारण कोणपरे कपीलकेवलोनीपरे साखशाख उत्तराध्ययनजी.

अनन्नुपूर्वी. १५

णमो अरिहंताणं १	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३	णमो सिद्धाण २
णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताण १	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३	णमो सिद्धाणं २
णमो अरिहंताणं १	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहताण १	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाण २
णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहताणं १	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २

१५ पंधरमे बोले सुपातर दान देवे तो जीवने परम कल्याणरो कार कीणपरे रेवंतीगाथा पतणीपरे साखशास्त्र भगवतीजीसूत्रकी.

अननुपूर्वी. १६

णमो आयरियाण ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २
णमो उवज्झायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २
णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवज्झायाणं ४	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाणं ३	णमो उवज्झायाणं ४	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाणं २
णमो उवज्झायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १	णमो सिद्धाण २
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवज्झायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहताणं १	णमो सिद्धाणं २

१६ सोळमे बोले पनृसपडीया सीरने वीखे ळढता राखे तो जी परम कल्याणरो कारण कीणपरे द्रोपदीनापरे साखशास्त्र गीनाताजी

अनानुपूर्वी. १७

णमो सिद्धाण २	णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहंताण १
णमो आयरियाण ३	णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाण ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहताण १
णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाण ४	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहंताण १
णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो अरिहताणं १
णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताण १
णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो अरिहंताणं १

१७ सतरेमे बोले चढते प्रणामे तपशा करे तो जीवने परम कल्याणरो कारण कीणपरे धना अणगारनीपरे साखशास्त्र आणुतरउववाइजीसूत्रकी.

अनानुपूर्वी, १८

णमो सिद्धाण २	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १
णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १
णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १
णमो आयरियाणं ३	णमो ले.येसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहंताणं १
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाण ३	णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	णमो अरिहताणं १

१८ अठारमे बोले आनीतभावना भावे तो जीवने परम याण कारण कोणपरे भरतचक्रवर्तीनापरे साखशास्त्र जंबूदीपपनंती

अनानुपूर्वी. १९

णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १
णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १
णमो सिद्धाणं २	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १
णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १
णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो आयरियाणं ३	णमो अरिहंताणं १

१९ उगवणीसमे बोले विनयभगती करे तो जीवरो परम कल्याणरो कारण कीणपरे पंचकआणगारनी परे साखशास्त्र उत्तराध्ययनजीनी.

अननुपूर्वी, २०

णमो आयरियाण ३	णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १
णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १
णमो आयरियाणं ३	णमो लोयेसव्वसाहूणं ५	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाणं ३	णमो उवझायाणं ४	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १
णमो उवझायाणं ४	णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १
णमो लोयेसव्वसाहूण ५	णमो उवझायाणं ४	णमो आयरियाणं ३	णमो सिद्धाणं २	णमो अरिहंताणं १

२० वीसमे बोले खरा ज्ञाननी प्रतीत राखे तो जीवने परम [illegible]रण कीणपरे आनंदसावकनीपरे सास्र [illegible] [illegible]

श्री चौवीस तीर्थंकर नाम स्मर्णते.

१ श्री ऋखवदेव स्वामी. २ श्री अजितनाथ स्वामी.
३ श्री सम्भवनाथ स्वामी. ४ श्री अभिनंदन स्वामी.
५ श्री सुमतिनाथ स्वामी. ६ श्री पद्मप्रभ स्वामी.
७ श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी. ८ श्री चंद्रप्रभ स्वामी.
९ श्री सुविधिनाथ स्वामी. १० श्री शीतलनाथ स्वामी.
११ श्री श्रेयांसनाथ स्वामी. १२ श्री वासुपूज्य स्वामी.
१३ श्री विमलनाथ स्वामी. १४ श्री अनंतनाथ स्वामी.
१५ श्री धर्मनाथ स्वामी. १६ श्री शांतिनाथ स्वामी.
१७ श्री कुंथुनाथ स्वामी. १८ श्री अरनाथ स्वामी.
१९ श्री मल्लिनाथ स्वामी. २० श्री मुनिसुव्रत स्वामी.
२१ श्री नमिनाथ स्वामी. २२ श्री नेमिनाथ स्वामी.
२३ श्री पार्श्वनाथ स्वामी. २४ श्री महावीर स्वामी.



श्री बीस विहरमान तीर्थंकर नाम.

१ श्री सीमंधर स्वामी. २ श्री युगमंधर स्वामी.
३ श्री बाहु स्वामी. ४ श्री सुबाहु स्वामी.
५ श्री सुजात स्वामी. ६ श्री स्वयंप्रभ स्वामी.
७ श्री ऋषभानन स्वामी. ८ श्री अनंतवीर्य स्वामी.
९ श्री सूरप्रभ स्वामी. १० श्री विशालप्रभ स्वामी.
११ श्री वज्रधर स्वामी. १२ श्री चंद्रानन स्वामी.
१३ श्री चंद्रबाहु स्वामी. १४ श्री भुजंग स्वामी.
१५ श्री ईश्वर स्वामी. १६ श्री नेमिप्रभ स्वामी.
१७ श्री वीरसेन स्वामी. १८ श्री महाभद्र स्वामी.

१९ श्री देवयस स्वामी   २० श्री अजितवीर्य स्वामी.

श्री इग्यारे गणधराका नाम.

१ श्री इंद्रभूतिजी.   २ श्री अग्निभूतिजी.
३ श्री वायुभूतिजी.   ४ श्री विगतभूतिजी.
५ श्री सुधर्मा स्वामीजी.   ६ श्री मंडीपुत्रजी.
७ श्री मोरीपुत्रजी.   ८ श्री अंकपितजी.
९ श्री अचलजी.   १० श्री मेतारजी.
११ श्री प्रभुजी.

श्री सोळे सत्यारा नाम स्मरणता.

१ श्री ब्राह्मीजी सती.   २ श्री सुंदरीजी सती.
३ श्री कौसल्याजी सती.   ४ श्री सीताजी सती.
५ श्री कुंथीजी सती.   ६ श्री द्रौपदीजी सती,
७ श्री राजीमतीजी सती.   ८ श्री चंदनबाळाजी सती.
९ श्री सुभद्राजी सती.   १० श्री चेलणाजी सती.
११ श्री शिवाजी सती.   १२ श्री पद्मावतीजी सती.
१३ श्री मृगावतीजी सती.   १४ श्री सुळसाजी सती.
१५ श्री देवदंताजी सती.   १६ श्री प्रभावतीजी सती.

इति श्री चोवीसी नाम वीस विहरमान इग्यारे गणधर सोळे सत्यारा नाम समाप्त.

अथ श्रीपरमेष्ठी परमानंदस्तवन.

छंद त्रिभंगी.

परणमु सरस्वतीं होय वरमती चीत उलसथी गुण थुणवा, ध्यावें सो सुख पावे एकचित चावे यश सुणवा ॥ जयजय परमेष्ठी श्रेष्ठी दे पद जेष्ठी जगधारं, त्रिजगमझारं नाम उदारं जय सुखकारं ॥ १ ॥ आकडी ॥ वारे गुणवंता श्री अरिहंता गुणगहेरा, धनघा मिथ्याभर्म त्याग अधर्म विपलहेरा, शुकल मन ध्याया केवल पाया आया तीणवार ॥ त्रिजग० नाम० ज० न० ॥ २ ॥ वरप्रखदा हर्ष अपारे सुणि अवधारे जिनवाणी, अमृतसुप्यारी जगहि सुरनरनारी पहिचाणी, केइ संजम धारे केइ व्रत वारे कर्म सिवत्यारी ॥ त्रिजग० ॥ ३ ॥ द्वितीयपद ध्यावो सिद्धगुण गावो नहीं आवो जीहा जाइ, जे आरख निरंजन कर्मके अंजन शि पुदगलका फंदा दुरनीकंदा परमानंदा अविकारं ॥ त्रिजग० ॥ ४ अष्टगुणकूं धारे जगत निंहारे उनताई, जिहा सुख अनंता केवळ गुणउछरंता छेनाइ, नेवासवताइ दो मुजताइ तुमसा नाइ दातारं त्रिजग० ॥ ५ ॥ गणीवरपद त्रीजे नीत्य नमीजे, सेवा कीजे हर्षधा पंचमहाव्रत पाले दुखण टाले गजजीमहाले शूरहारी, पाचे वश पंच उचरते पाचु इहारते दुखकारं ॥ त्रिजंग० ॥ ६ ॥ शीतळजीमचं अचलगिरींदा गणपति इंदा शिरदारं, सागरजी मगहेरा ज्ञानल मिथ्याअंधेरा परिहारं, संपदवसु पावे न्याय बढावे पाळे पळावे आ त्रिजग० ॥ ७ ॥ गुरुसेवा साधी विनय अराधी चित्तसमाधी ज्ञान भ वारे अंगबाणी पेटीसमाणी पुरवनाणी संशयहाणे, निरवद्य सत्य शास्त्रासाखे गुण अभिलाखे निजसारं ॥ त्रिजग० ॥ ८ ॥ उवझाय स्वामी अंतरजामी शिवगतिगामी हितकारी, शीखणने अवे जे सिखावे न्याय बतावे उपकारी, दुरगतिमा पडता कादवगडता चं

रचुडता तीणवारं, त्रिजग० ॥ ९ ॥ कंचुक अहि त्यागे दूरे भागे नीतवैरागे गापहारे, झुटापरचंदा मोहोनीफंदा प्रभुका बंदा जोगधरे, सब मालखजीना त्यागन कीना महाव्रत लीना अणगारं ॥ त्रिजग० ॥ १० ॥ पाले शुद्धकरणी भवजलतरणी आपदहरणी गुणीठाणी जगका प्राणी समलेखें, सिवमारग ध्यावे पाप हटावे धर्म बतावे सत्यसारं ॥ त्रिजग० ॥ ११ ॥ ए प्रणमे भावे विघ्न हटावे अरी हरि जावे दूरसही, जे तपते जारी दुःखबेमारी शोगसत्रारी आतनहीं, गृहपीडा भागे दृष्टी न लागे शत्रु न जागे लीगारं ॥ त्रिजग० ॥ १२ ॥ ए मंत्र जनीको तारक जीको लीजगटीको सुखदाता, ए मंत्र करारी महिमा भारी लहे नरनारी सुखशाता, सरजीवनवेली दे धनठेली भवेभवे केली यह सारं ॥ त्रिजग० ॥ १३ ॥ पद्मासनवाली रंगनीहाली आरती टाली ध्यान धरे, त्रीलोकमयंपे भावशु जंपे ऋद्धीसिद्धीसंपे जेह धरे, ए छंदात्रिभंगी गावे उमंगी भवभवसंगी जयकारं ॥ त्रिजग० ॥ १४ ॥ इति संपूर्णम् ॥

चार सरणा.

अरिहंते सरणं पव्वजामि । सिद्धे सरणं पव्वजामि ॥
साहू सरणं पव्वजामि । केवलीपण्णतं धम्मं सरणं पव्वजामि ॥ १

पहिला सरणा श्रीअरिहंत भगवंतका— ते अरिहंतप्रभु चौतीस अतिशय, पेंतीस वाणी गुण, अष्ट प्रतिहार, अनंत चतुष्टय, बारे गुण करके विराजमान, आठारे दोष करके रहित, चौसष्ट इंद्रके वंदनीक पूजनीक, इत्यादिक अनेक गुणे करी विराजमान है, ऐसे अरिहंत प्रभुका, इणभव परभव भवोभव सरणा होना!

दूजा सरणा श्रीसिद्ध भगवंत— सिद्ध भगवंत अष्ट
वीस अतिशय करी सहित, मोक्षरूपी सुखस्थानमें विराजम

अक्षय, अव्याबाध, अजर, अमर, अविकारी, अनंत सुखमें विराजमान, अष्टकर्मरहित हैं, ऐसे सिद्धप्रभुका इसभव परभव भवोभव सरणा होना!

तीसरा सरणा साधु मुनिराजका— साधूजी सत्तावीस गुणको सहित, कनक कामिनीके त्यागी, सत्तरे भेद संजमके पालणहार, बारे भेदे तपके करणहार, छन्नु दोष टाली आहारपानी वस्त्रपात्र स्थानकके भोगवनहार, निरलोभी, बावीस परीसह समपरिणामे सहे, शांत-दांत-क्षांत, इत्यादिक अनेक गुणसहित, ऐसे निग्रंथ साधूजी महाराजका इणभव परभव भवोभव सदाकाल सरणा होना!

चोथा सरणा केवलीपरूप्या दयाधर्मका— धर्म दो प्रकारका- श्रुतधर्म सो द्वादशांगी जिनागम; चारित्रधर्म सो अगारी, अनगारी, एह धर्म आधिव्याधि उपाधिका विनाशहारे है, मोक्षरूप शाश्वत सुखका दाता है, ए दयाधर्मका इणभव परभव भवोभव सदाकाल सरणा होना!

यह चार सरणा, दुःख हरणा, और न दूजो कोय;
जो भव्यप्राणी आदरे, तो अक्षय अमरपद होय.

तीन मनोरथ.

आरंभ परिग्रह तजीकरी । पंच महाव्रत धार ॥
अंत अवसर आलोयणा । करु संथारो सार ॥ १ ॥

पहिला मनोरथ— समणोपासक श्रावकजी ऐसा चिंतवे की, कब मैं चौद प्रकारके बाह्य और नव प्रकारके अभ्यंतर परिग्रहसे तथा आरंभसे निवरतूंगा? एह आरंभ परिग्रह काम क्रोध मद मोह लोभ विषय कषायका बढानेवाला दुर्गतिका दाता, मोह मत्सर राग द्वेषका मूल, धर्मज्ञान क्रिया क्षमा दया सत्य संतोष समकित संयम तप ब्रह्मचर्य और सुमतीका नाश करानेवाला, आठारे पापका बढानेवाला, अनंत

संसारमें भमानेवाला, अध्रुव अनित्य अशाश्वता असरण अतरण, निग्रं-थोका निंदनीक, ऐसे अपवित्र आरंभ परिग्रहका मै जब त्याग करूंगा सो दिन मेरा परमकल्यांणका होवेगा!

दूसरा मनोरथ— समणोपासक (साधुकी सेवा करनेवाले) श्रावक ऐसा चिंतवे-विचारे की, कब मैं द्रव्ये भावे मुंड होके दश प्रकारका यतिधर्म, नववाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पांच महाव्रत, पांचसमिति, तीन गुप्ति, सतरे भेदे संयम, बारे प्रकारे तप, छे कायाका दयाल, अप्रतिबंध, विहार, सर्व संग रहीत, वीतरागकी आज्ञा मूजब चलने-वाला होउंगा? जिस दिन निग्रंथका मार्ग अंगिकार करूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण होवेगा!

तीसरा मनोरथ— समणोपासक श्रावकजी ऐसा चिंतवे की, किस वक्त मैं सर्व पापस्थानका आलोइ निंदी निःशल्य हो सर्व जीवोंसे खमतखामणा कर त्रिविध २ अठारे पापकों त्याग जिस सरीखो मेंने अति प्रेमसे पाला है ऐसे शरीरसे ममत्व त्याग छेल्ले श्वासोश्वास तकवो सीराके चारही आहारको त्याग के तीन आराधना चार सरणासहित आयुष्य पूरा करूंगा? पंडितमरण मरूंगा सो दिन मेरा परम कल्याण होवेगा!

एह तीन मनोरथका विचार करता हुवा प्राणी महा निर्जरा उपराजे संसारप्रत करे मोक्षके सन्मुख होय अनुक्रमे सर्व दुःखसे छूटे! अनंत अक्षय सुख पावे.

तीन मनोरथ ए कहे। जे ध्यावे नित्य मन॥
सक्ति सार वरते सहू। तो पावे शिव सुख धन॥ १ ॥

॥ चवदे नेमरा नांम कहेछे ॥

१ सचीतते ॥ कांचो पाणी ॥ कोरो दांणो ॥ काची लीलोती ॥ प्रमुख अनेक चीज जाणवी ॥ एनी मरजादा करणी॥

२ द्रव्यते ॥ मुखमें जितनी चीज घाले ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

३ वीगेते ॥ दूध ॥ दही ॥ घृत ॥ तेल ॥ खांड ॥ गुल॥ सरब मीठाईनी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

४ पनीते ॥ पगरखी ॥ तलीया ॥ मोजा ॥ पावडीयां ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

५ तंबोलते ॥ लुंग ॥ इलायची ॥ पान ॥ सोपारी ॥ एनी मरजादा करणी ॥

६ वथते ॥ वस्त्र पेहरणा ओढणा तेनी मरजादा करणी ॥

७ कुसमते ॥ सुंगणेमें आवे जीतनी चीज तेनी मरजादा करणी॥

८ वाहणते ॥ गाडो ॥ रथ ॥ तांगो ॥ वगी ॥ घोडा ॥ जात॥ असवारीमें कांम आवे ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

९ सयणते ॥ गादी ॥ पीलंग, मांचो, खुरसी, अथवा छपर-पीलंग बीछावनेकी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

१० विलेपणते ॥ केशर कुंकु तेल पीठी सरीरने विलेपण हुवे तेनी मरजादा करणी ॥

११ अबंभते ॥ कुसीलनी मरजादा करणी ॥

१२ दिसते ॥ पुरब दिस ॥ पश्चम दिस ॥ दिखण दिस ॥ उत्तर दिस ॥ उंची दिस ॥ नीची दिस ॥ ये छ दिसने जावणेकी सारी मरजादा करणी ॥ अथवा कागद देवणरी मरजादा करणी ॥

१३ नाहावणते ॥ स्नानरी मरजादा करणी ॥

१४ भंतेसुंते ॥ आहार पाणी करणेरी मरजादा करणी ॥

॥ छ कायना नांम कहेछे ॥

थ्वीकायते ॥ मुरद ॥ माटी ॥ खडी ॥ गेरू ॥ इत्यादीक ॥
ायनी ॥ मरजादा करणी ॥
अप्कायते ॥ कुंवानो पाणी ॥ नदीनो पाणी ॥ नलरो
॥ तलावरो पाणी ॥ झरणानो पाणी ॥ अथवा इतना घरको
न पीवणो तेनी मरजादा करणी ॥
तेउकायते ॥ अग्नी ॥ जितना चुलानो आरंभ न लगावणो
मरजादा करणी ॥
वाउकायते ॥ पंखीसुं ॥ कपडासुं ॥ विंजणासुं तथा
ुं ॥ हातसुं ॥ इणांसुं ॥ अथवा अणेंरी चीजसुं हवा खाणेकी
ादा करणी ॥
५ वनस्पतीकायते ॥ हारी लीलोतीनी मरजादा करणी ॥
६ तसकायते ॥ हालतां चालतां जीवांने विन अपराधे मार-
ो त्याग तथा सरवथा तथा तसजीवने मारणरा त्याग करणा ॥
॥ ए ३ असी १ मसी २ खसी ३ ॥ असी केहेता सस्त्र
ो कटारी ढाल तरवार बंदुक चाकु कतरनी सुइ लकडी आडकीता
ो इलो खुरपो कीसंणी मुसल उखल घटी खलवतो इत्या-
ाक आद देईने अनेक जातना सस्त्र छे ईणमांहेसुं जीतना रा-
णा हुवे उतना उपरंतरा त्याग करणा. १ मसी केहतां [illegible]
ागद छापलकागद सीरकारी वीनज वोपार आद देईने अनेक
ातनी वस्तु छे इणमांहेसुं आपने जीतना राखणा [illegible] [illegible]
उपरंतरा त्याग करणा २ खसी केहतां [illegible] काम [illegible]
ांगर खेतपवार कुलव आद देईने अनेक जातना [illegible] [illegible]
खेतीनो काम कर्णो आपने जीतना राखणा [illegible] [illegible]
त्याग करणा ए चवदे नेम छकायना श्रावकने [illegible]

खाइजे ॥ ए करणासु नफो घणो हुवेछे ॥ सारा दीनमे ॥ गां जीतनो पाप लागे ने मेरू जीत ो पाप टल जावेछे ॥ ए वते नेमरी जो मरजादा करसी तो उतकृष्टी रसांण आवेतो तीर्थंकर गोत्र वांधे ॥ नरक तीरजंचनी गतीने वंदकरे ॥ साख सुत सगनी छे ॥ संपुर्ण ॥

लघु साधुवंदना.

साधूजीने वंदणा नितनित कीजे, भह उगमते सूर रे प्राणी नीच गतिमें ते नहीं जावे, पामे रिद्धि भरपूर रे प्राणी साधूजीने वंदणा नितनित कीजे ॥ १ ॥ म्होटां ते पंच महाव्रत पाळे, छ यरा प्रतिपाळ रे प्राणी; भ्रमर भिक्षा मुनी सूझति लेवे, बयालीस टालरे प्राणी. साधूजीने वंदणा० ॥ २ ॥ ऋद्धि मुनि कारमी जाणी, दीधी संसारने पूठ रे प्राणी; यां पुरुषां सेवा करतां, आठू कर्म जावे तूट रे प्राणी. साधूजीने वंदणा ॥ ३ ॥ एक एक मुनीवर रसनारा त्यागी, एक एक ज्ञानरा भंडार रे प्राणी; एक एक मुनीवर व्यावचीया वैरागी, ज्यारा गुणां नाहीं पार रे प्राणी. साधूजीने वंदणा० ॥ ४ ॥ गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परीसा बाइस रे प्राणी; बावन तो अन चारज टाले, ज्यांने नमावूं म्हारो शीष रे प्राणी. साधूजीने वंदणा० ॥ ५ ॥ झाझ समान ते संत ऋषीश्वर, भवी जीव बेठा आय रे प्राणी; पर उपगारी मुनी दाम न मांगे. देवे ते मुक्ती पोंहोचाय रे प्राणी. साधूजीने वंदणा० ॥ ६ ॥ ए सरणे प्राणी साता पावे, पावे ते लीलविलास रे प्राणी; जन्म जरा ने मरन मीटावे, फीर नहीं आवे गर्भवास रे प्राणी; साधूजीने वंदणा० ॥७॥ एक वचन जो सदगुरु केरो, राखे जो मन माहे रे प्राणी;

र्के निगोदमें ते नहीं जावे, इम कहे जीनराज रे प्राणी, साधूजीने वंदणा० ॥ ८ ॥ प्रभातं उटी उत्तम प्राणी, सूणे साधूरो वखाण रे प्राणी; इण पुरुषांरी सेवा करतां, पावे ते अमर वीमाण रे प्राणी. साधूजीनें वंदणा० ॥ ९ ॥ सम्मत अठारे ने वर्ष अठावीसे, चूसी गाम चोमास रे प्राणी; मुनि आश्करणजी इणि परे बोले, हूं उत्तम साधारो दास रे प्राणी. साधूजीने वंदणा० ॥ १० ॥

साधुवंदना.

नमुं अनंत चोवीशी, ऋषभादिक महावीर; आर्य क्षेत्रमां, घाली धर्मनी शीर. ॥ १ ॥ महा अतुल्यवळि नर, शूर वीरने धीर; तीरथ प्रवर्तावी, पहोत्या भवजळ तीर ॥ २ ॥ श्रीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर वीश; छे अढीदीपमां, जयवंता जगदीश. ॥ ३ ॥ एकसो ने सितेर, उत्कृष्ट पदे जगीश; धन्य मोटा प्रभुजी, जेने नमाउं शीश ॥ ४ ॥ केवळी दोय कोडी, उत्कृष्ट नव कोडे; मुनि दो सहस कोडि, उत्कृष्टा नव सहस कोडि ॥ ५ ॥ विचरे विदेहे, म्होटा तपसी घोर; भावे करि वंदुं, टाळे भवनी खोड ॥ ६ ॥ चोवीशे जिनना, सघळा ए गणधार; चौदसेंने बावन, ते प्रणमुं सुखकार. ॥ ७ ॥ जिनशासन नायक, धन्य श्रीवीर जिणंद; गौतमादिक गणधरे, वर्त्ताव्यो आणंद ॥ ८ ॥ श्री ऋषभदेवना, भरतादिक सो पूत; वैराग्य मन आणी, संयम लियो अदभूत ॥ ९ ॥ केवळ उपराज्युं, करी करणी करतूत; जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहुंत ॥ १० ॥ श्री भरतेश्वरना, हुआ पटोधर आठ; आदित्य जशादिक, पहोत्या शिवपुर वाट ॥ ११ ॥ श्रीजिन अंतरना, हुवा पाट असंख्य;

पहोत्या, टालि कर्मना वंक ॥ १२ ॥ .धन्य कपिल मुनिवर, नमि
नमुं अणगार; जेणे तरतज त्याग्यो, सहस्र रमणि परिवार ॥१
मुनिवर हरकेशी, चित्त मुनीश्वर सार; शुद्ध संयम पाळी,
भवनो पार ॥१४॥ वळि इखुकार राजा, घेर कमळावति नार;
ने जशा, तेहना दोय कुमार ॥ १५ ॥ छए छतिरिद्धीछांडीने
लीधो संयम भार; इण अल्पकाळमां, पाम्या मोक्ष दुवार।
॥ १६ ॥ वळि संयति राजा, हरण आहिडे जाय, मुनिव
गद भाळी, आण्यो मारग ठाय ॥ १७ ॥ चारित्र लेईने,
गुरुना पाय; क्षत्रिराज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित्त ला
॥ १८ ॥ वळी दश चक्रवर्ति, राज्य रमणि ऋध्दि छोड;
मुगते पहोत्या, कुळने शोभा चहो ॥ १९ ॥ इण
आठ राम गया मोक्ष; वळभद्र मुनीश्वर, गया पंचम दे
॥ २० ॥ दशार्णभद्र राजा, वीर वांद्या धरि मान; पछी
हठाया, दियो छकाय अभेदान ॥ २१ ॥ करकंडु प्रमुख, चा
प्रत्येक बोध; मुनि मुगते पहोत्या, जीत्या कर्म महा जोध
॥ २२ ॥ धन्य मोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश; मुनिवर
अनाथी, जीत्या राग ने रीश ॥ २३ ॥ वळि समुद्रपाळ मुनि
राजमति रहनेम; केशी ने गौतम, पाम्या शिवपुर क्षेम ॥ २४
धन्य विजयघोषमुनि, जयघोष वळि जाण; श्री गर्गा
चारज, पहोत्या छे निरवाण ॥ २५ ॥ श्रीउत्तराध्ययनमां
जिनवरे कर्या वखाण; शुध्द मनथी ध्यावो, मनमां धीरज
आण ॥ २६ ॥ वळी खंधक सन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह;
महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥ तप कठण
झोंसी आपणि देह; गया अच्युत देवलोके, च्यवि लेशे भवछेह
॥ २८ ॥ वळि ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुदर्शन सार; शिवराज

शुद्धपीश्वर, धन्य गांगेय अणगार ॥ २९ ॥ शुध्द संयम पाळी; पाम्या केवळ सार; ए चारे मुनिवर, पहोत्या मोक्षमझार ॥ ३० ॥ भगवंतनी माता, धन्य सति देवानंदा; वळि सती जयंति, छोड दिया घर फंदा. ॥ ३१ ॥ सति मुगते पहोत्यां, वळी ते वीरनी नंद; महासती सुदर्शना, घणि सतियोना वृंद ॥ ३२ ॥ वळी कार्तिक शेठे, पडिमा वहि शूरवीर; जम्या होरा उपर, तापस वळती खीर ॥ ३३ ॥ पछि चारित्र लीधुं, नी सहस्र आठ सह वीर; मरि हुवा शक्रेन्द्र, च्यवि लेशे भव तीर ३४ ॥ वळि राय उदाइ, दिधो भाणेजने राज; पछि चारित्र लेइने, सार्यां आतम काज ॥३५॥ गंगदत्त मुनि आणंद, तरण तारण जहाज; कुशळ मुनि रुहो, दियो घणाने साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुनक्षत्र मुनिवर सर्वानुभुति अणगार; आराधिक हइने, गया देवलोकमोझार ॥ ३७ ॥ च्यवि मुगते जाशे, सिंह मुनीश्वर नार; बीजा पण मुनिवर, भगवतिमां अधिकार ॥ ३८ ॥ श्रेणिकना बेटा, ह्मोटा मुनिवर मेघ; तजी आठ अंतेउरि, आण्यो मन संवेग ॥ ३९ ॥ वीरपें व्रत लेइने, बांधी तपनी तेग; गया विजय विमाने, च्यावि लेशे शिव वेग ॥४०॥ धन्य थावर्चा पुत्र, तजी बत्रीशे नार; जेनी साथे नीकळ्या, पुरुष एक हजार ॥ ४१ शुकदेव सन्यासी, एक सहस्र शिष्य लार; पंचशयशुं शेलक, लीधो संयम भार ॥ ४२ ॥ सवी सहस्र अढाइ, घणा जीवोने तार; पुंडरगिरी पर कियो, पादोपगमन संथार ॥ ४३ ॥ आराधिक हइने, कीधो खेवो पार; हुवा मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ॥४४॥ धन्य जिनपाळ मुनिवर, दोय धनावा साध; गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जशे आराध ॥ ४५ ॥ मल्लिनाथना महाबळ प्रमुख मुनिराय; सौ मुगते सिधाव्या,

पाय ॥ ४६ ॥ वळि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान;
चारित्र लेइने, पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन्य
मुनिवर, दियो छकायाने अभेदान; पोटिला प्रतिबोध्या,
केवळज्ञान ॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी ना
स्थिवरनी पासे, लीधो संयम भार ॥ ४९ ॥ श्री नेमि वंदनने
एवो अभिग्रह कीध; मास मासखमण तप, शत्रुंजय जाइ
॥ ५० ॥ धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार; की
करुणा, आणी दया अपार ॥ ५१ ॥ कडवा तुंबानो,
सघळो आहार; सर्वार्थसिद्ध पहोत्या, च्यवि लेशे भव पार॥
वळि पुंडरिक राजा, कुंडरिक डागियो जाण, पोते चारित्र ले
न घाली धर्ममां हाण ॥ ५३ ॥ सर्वार्थसिद्ध पहोत्या, च्यवि
निरवाण; श्री ज्ञातासूत्रमां, जिनवरे कर्यां वखाण ॥ ५४
गौतमादिक कुंवरो, सगा अढारे भ्रात; सर्व अंधकवि
धारणि जेनी मात ॥ ५५ ॥ तजी आठ अंतेउरी,
दीक्षानी वात; चारित्र लेइने, कीधो मुक्तिनो साथ ॥ ५६
श्री अणिकसेनादिक, छये सहोदर भ्रात; वसुदेवना नंदन,
जेनी मात ॥ ५७ ॥ भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावइ जाण;
घर वधिया, सांभळी नेमिनी वाण ॥ ५८ ॥ तजी बत्रीस अंते
नीकळिया छटकाय; नळ कुबेर सरीखा; भेटया नेमिना
॥ ५९ ॥ करि छठ छठ पारणां, मनमें वैराग्य लाय; एक
संथारे, मुगति बिराज्या जाय ॥ ६० ॥ वळि दारुक
सुमुख दुमुख मुनिराय; वळि कुमर अनादृष्टि, गया मुगति
मांय ॥ ६१ ॥ वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य गजसुकमाळ;
अति सुंदर, कलावंत वय बाळ ॥ ६२ ॥ श्री नेमि समीपे, छोड
मोह जंजाळ; भिक्षुनी पडिमा, गया मसाण महाकाळ ॥ ६३

ो सोमिल कोप्यो, मस्तके बांधी पाळ; खेरतणा खीरा, शिर
ाया असराळ ॥ ६४ ॥ मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी जाळ;
ासह सहिने, मुगति गया ततकाळ ॥ ६५ ॥ धन्य जाळी
ाळी, उवयालादिक साध; सांब प्रद्युमन, अनिरुद्ध साधु
ागाध ॥ ६६ ॥ वळि सद्धनेमि द्रढनेमि, करणी कीधी वाद;
शे मुगते पहोत्या, जिनवर बचन आराध ॥ ६७ ॥ धन्य
र्जुनमाळि, कियो कदाग्रह दूर; वीरपेंव्रत लेइने, सत्यवादि
वा शूर ॥ ६८ ॥ करि छठ छठ पारणां, क्षमा करी भरपूर;
मासनी मांही, कर्म किगां चकचुर. ॥ ६९ ॥ कुंवर अइमुत्ते,
ठा गौतमस्वाम; सुणि वीरनी वाणि, कीधो उत्तम काम
७० ॥ चारित्र लेइने, पहोत्या शिवपुर ठाम; धुर आदि म-
ाइ, अंत अलक्ष मुनि नाम. ॥ ७१ ॥ वळि कृष्णरायनी, अग्र
हिषी आठ; पुत्र वहु दोये, संच्या पुण्यना ठाठ ॥ ७२ ॥
ादवकुळ सतियां, टाळ्यो दुःख उचाट; पहोत्यां शिवपुरमें, ए
सूत्रनो पाठ ॥ ७३ ॥ श्रेणिकनी राणी, काळिआदिक दश
ाण; दशे पुत्र वियोगे, सांभळी वीरनी वाण ॥ ७४ ॥ चंदन-
ाळापें, संयम लेइ हुवां जाण; तप करी देह झोंसी, पोहत्यां छे
निरवाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरे, श्रेणिक नृपनी नार;
चंदनबाळापें, लीयो संयम भार ॥ ७६ ॥ एक मास संथारे, पहोत्यां
मुक्ति मोझार; ए नवूं जणानो, अंतगडमां अधिकार ॥ ७७ ॥ श्रेणि-
कना बेटा, जाळियादिक तेवीश; वीरपें व्रत लेइने, पाळ्यो विश्वा
वीश ॥ ७८ ॥ तप कठण करीने, पूर्गी मन जगीश; देवलोके
पहोत्या, मोक्ष जासे तजी रीस ॥ ७९ ॥ काकंदीनो धन्नो
बत्रीशे नार, महावीर समीपें, लीयो संयम भार ॥ ८० ॥
छठ छठ पारणां, आयंबिल उच्छिष्ट आहार; श्री वीरे वखा
॥

धन धन्नो अणगार ॥ ८१ ॥ एक मास संथारे,
पहुंत; महाविदेह क्षेत्रमां, करशे भवनो अंत ॥ ८२ ॥
रीते, हुवा नवे इ संत; श्री अनुतरोववाइमां, भाखी गया
॥ ८३ ॥ सुबाहु प्रमुख, पांच पांचशे नार; तजी वीरपें
पंच महाव्रत सार ॥ ८४ ॥ चारित्र लेइने, पाळ्यो निरतिचा
देवलोके पहोत्या, सुखविपाके अधिकार ॥ ८५ ॥
पौता, पौत्रादिक हुवा दश; वीरपें व्रत लेइने, काढयो
कस ॥ ८६ ॥ संयम आराधी, देवलोकमां जइ वश;
क्षेत्रमां, मोक्ष जाशे लेइ जश ॥ ८७ ॥ बळभद्रना नंदन,
दिक हुवा बार; तजी पचास अंतेउरि, त्याग दियो
॥ ८८ ॥ सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध;
पहोत्या, होशे विदेहे सिद्ध ॥ ८९ ॥ धन्नो ने शालिभद्र,
श्वरोनी जोड; नारीनां बंधन. ततक्षण नांख्यां त्रोड ॥ ९०
घर कुटुंब कबीला, धन कंचननी कोड; मास मासखमण
टाळशे भवनी खोड ॥ ९१ ॥ सुधर्मस्वामीना, शिष्य धन्य धन्य
स्वाम; तजी आठ अंतेउरी, मातपिता धन धाम ॥ ९२
प्रभवादिक तारी, पहोत्या शिवपुर ठाम; सुत्र प्रवर्त्तावी,
राख्युं नाम ॥ ९३ ॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद
शुद्धअभिग्रह पाळी, टाळि दियो भव फंद ॥ ९४ ॥ वळि
ऋषिनी, देह उतारी खाल; परीसह सहीने, भव फेरा
टाळ ॥ ९५ ॥ वळि खंधक ऋषिना, हुवा पांचशे शिष्य; घाणीमां
पील्या, मुगति गया तजी रीश ॥ ९६ ॥ संभूतिविजय शिष्य,
भद्रबाहु मुनिराय; चौद पूरवधारी, चंद्रगुप्त आण्यो
॥ ९७ ॥ मुनी आर्द्रकुमार ने, थुळिभद्र नंदिषेण; अरणिक
अइमुतो, मुनीश्वरोनी शेण ॥ ९८ ॥ चोवीशजिन मुनिवर, संख्या

अठ्ठावीश लाख; ने सहस अडताळीश, सूत्र परंपरा भाख ॥९९॥ कोइ उत्तम वांचो, मोढे जयणा राख; उघाडे मुख बोल्यां, पाप लागे विपाक ॥ १०० ॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मळ ध्यान; गज होदे पायो, निर्मळ केवळज्ञान ॥ १०१ ॥ धन्य आदिश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुंदरि दोय; चारित्र लइने, मुगति गयां सिद्ध होय ॥ १०२ ॥ चोवीशे जिननी, बडी शिष्यणी चोवीश, सती मुगते पहोत्यां, पूरी मन जगीश ॥ १०३ ॥ चोवीशे जिननां, सर्व साधवी सार; अडताळीश लाख ने, आठशे सित्तेर हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी पुत्री, राखी धर्मशुं प्रीत; राजीमति विजया, मृगावती सुविनीत ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयंती सीत; इत्यादिक सतीयो, गइ जन्मारो जीत ॥ १०६ ॥ चोवीशे जीननां, साधु साधवी सार; गयां मोक्ष देवलोके, हृदये राख्यो धार ॥ १०७ ॥ इण अढी द्वीपमां, घरडा तपसी बाळ; शुध्ध पंच महा व्रत धारी, नमो नमो त्रणेकाळ ॥ १०८ ॥ ए जतियो सतियोनां, लीजे नित्यप्रते नाम; शुद्धे मने ध्यावो, एह तरवानुं ठाम ॥ १०९ ॥ ए जती–सतीशुं राखो उज्वळ भाव; एम कहे ऋषि जयमल, एह तरवानो दाव ॥ ११० ॥ संवत अढार ने, वर्ष साते मन धार; शेहेर झालोर मांही, एह कह्यो अधिकार ॥ १११ ॥

चिंतामणी पार्श्वप्रभुकू अर्जी.

(राग माढ)

मेरी आरजी लेना चीतमें देना सुनीयो श्रीमहाराज । दस दीलमें धरणा भवदुखहरणा चीतमे देना सुनीयो श्री ॥ १ ॥ आकडी ॥ मोहे आनादी नींद मेंे सोहोत हुं

खानापीनामे मगन होके कीया कछु न वीचार । मोय लोभ वतां
फंदफसाना चीतमे देना मुनीयो श्रीमहाराज ॥ द० ॥ व० ॥ ची०॥
सु० ॥ २ ॥ सुमतीवचतमानकेरे आयो तेरे द्वार । उ
आंतरजामी मेरी सुणीयां पुकार । मोह मवलवळ तीनकु हाराणा
॥ ची० ॥ सु० ॥ द० ॥ व० ॥ ची० ॥ सु० ॥ ३ ॥ श्रीचिंता
मणपासजीरें चिंता दुरनीवार । केसरीचंद कहे लाज मोरी
करीयो वीचार । जैनप्रकाशक तोरेरे सरणं चीतमें देना मुनीयो
श्रीमहाराज ॥ दया० व० ॥ ची० सु० ॥ ४ ॥ इति संपूर्ण.

चोवीसी स्तवन,

पंच तीर्थका स्तवनकी देशी.

सिरि आदीनाथ अजित संभव; समरू तो आभीनंदनं
चरण जीनके, सिस धरधर ॥ करत पलपल वंदनं ॥ प्रभू क०
पलपल वंदणं ॥ १ ॥ सिरि सुमतिनाथ, सो पद्मप्रभु ॥
पारस गाइए ॥ सिरि चंदाप्रभुजीके, चरण वंदत; निश्चल
सिवपुर जाइए ॥ प्र० ॥ नि० ॥ २ ॥ सिरि सुवध सितल
हंसजीको; ध्यान निज हीरदे धरूं ॥ सिरि वासपुज्यजीके;
चरण वंदत ॥ फेर चौउऱ्यांसि नही रूलुं ॥ प्र० ॥ फे० ॥ ३
सिरि विमल आनंत ॥ धर्मजीको ॥ ग्यान निज हीयडे धरूं ॥
सिरि शांतिप्रभुजीके; पाय पडता ॥ आवा गमण निवारणं
॥ प्र० ॥ आ० ॥ ४ ॥ श्रीकुंथुनाथ सो अरिनाथ ॥ मल्लि शरण
शरण है ॥ मुनिसुव्रतजीके ॥ चरण वंदत ॥ हारत ज्यामन
मरण है ॥ प्र० हा० ॥ ५ ॥ सिरि नेमीनाथ, सो रठनेमी, पारस
पारस ॥ ध्याइए ॥ सिरि महावीर स्वामीजीके, चरण वंदत ॥
निश्चल सिवपुर जाइए ॥ प्र० ॥ नि० ॥ ६ ॥ छांड सब मिथ्या

मतकु, निज धर्मको परीचय कियो ॥ नाभदेव, अरिहंत जप जप
सुख पवरीया पग धरूं ॥ प्र० ॥ मु० ॥ ७ ॥ सदा ते मंगल, होए
जपता ॥ ए च्योविसी नाम है ॥ कहत रीखजी, ग्यानने हछे ॥
अतुल सुखनी खान है ॥ निश्चे पद निरवाण है ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ श्रीमहावीरस्वामीस्तवन.

मे नमुरे जैन शास्त्रकू करम कट जावे । वीघन टळ जावे । पाप झड जावे ॥ महावीर चरणकू शीस नम्या दुख जावे ॥ वृधमान चरणकू शीस नम्या दुख जावे ॥ ए देशी ॥ कुंडलपुर नगरी पीता शिधारत राया ॥ माजी त्रसळादेवी कूखें कुंवर आया ॥ माजी त्रसळादेवी एसो नंदन जायो ॥ वीजो नही अवतार मुलख मन भायो ॥ जीनजीका नामसे सरीर सांता पावे ॥ महावीर ॥ वृधमान ॥ १ ॥ इंद्र इंद्राणी मील मोछवने आवे । जीनजीकू लेकर मेरू शीखर नवरावे ॥ वडी धार देखी इंदर शंका लावे ॥ ये लघु वालक रखे इनें दुख थावे ॥ इतरी शंका इंदर मनमें आवे ॥ माहावीर ॥ वृधमान ॥ २ ॥ इंद्रकी संका श्रीजीनराज मिटावे ॥ प्रभु चरन आंगुठें मेरू चूल हलावे ॥ जदी इंद्रमहाराजा मनमें वहु खुशी थावे ॥ ए जगतारण है अपार इनुकी माये ॥ श्रीजीनराजका वलको पार नही पावे ॥ महावीर ॥ वृधमान ॥ ३ ॥ इंद्रमहाराजा माजीरे पास पोढावे ॥ जीनजीकु देखके तीन लोक सुख पावे ॥ देवी देवता मिल दरसणकु आवे ॥ धन्य घडी धन भाग भलो दिन पावे ॥ छपन कुमारी मीलकर मंगल गावे ॥ महावीर ॥ वृधमान ॥ ४ ॥ राजा सीधारत जाचक दानज दीधो ॥ कंचन घोडा गजराज उलट मन कीधो ॥ राजा सीधारत वहुवीध न्यान जीमाव्या ॥ सकल किया प

नही पावे ॥ राजाजीका गुखें गुखें दीन जावे ॥ महावीर ॥ बृध-
मान ॥ ५ ॥ प्रभु मात पीतानें रती दुख नही दीधो ॥ पछे मात
पीताजी आउखो पूरण कीधो ॥ राज रीद्ध छिटकायने संजम
लीधो ॥ हुवा चरम तीर्थंकर चोखो कारज कीधो ॥ संजम लेने
करमारी खाक उडावे ॥ महावीर ॥ बृधमान ॥ ६ ॥ प्रभु अती
हारकसे बहुविध तप निपजावें ॥ खटमारी पारणो चंदन हाथे
पावे ॥ अती हारकसे महासतीया आहार वेरावे ॥ जाथें महा स-
त्याजी करमारी कोड खपावे ॥ इणविद महासतीया जो प्रभुजीने
पारणो वेरावे ॥ महावीर ॥ बृधमान ॥ ७ ॥ द्वादस अंगरो ग्या-
श्रीजी फुरमावे ॥ ज्यारी वाणी मीठी खीर सुण्या दुख जावे
ज्या बारे जातकी प्रखदा सुणवा आवे ॥ ज्या वाणी सुण भग-
तकु सीस नमावे ॥ केइ वरत करे वैरागज मनमें लावे ॥ महावी
॥ बृधमान ॥ ८ ॥ गोतम गणधर हुवा प्रभुजिका चेला ॥
ज्यां तुरत लीयोहे संजम सगळा पेला ॥ चारसेने चार हाजार
संजम लीनो ॥ एकदीनमें कारज दीक्षाको सब कीनो ॥ चवदे
हजार चेला प्रभुजीकनें पावे ॥ महावीर ॥ बृधमान ॥ ९ ॥
आरज अनारज देस गया जीनराया ॥ अनंत कीयो उपगार
पावापुरी आया ॥ भवी जीव सुणके मनमें अती हारकाया ॥
कातीवद आमावस सीवपुर पाया ॥ आव सिद्ध भगवंतको जक्त
सीस नमावे ॥ महावीर ॥ बृधमान ॥ १० ॥ चरणाको चाकर
आरज करेहो स्वामी ॥ नंदरामकु तारो प्रभुजी आंतरजामी ॥ आव
मेहर करीनें भवसागरसे तारो ॥ तुम मेहर करीनें जल्दी पार उ-
तारो ॥ सुखराम चरणको दास सदा इम गावे ॥ ११ ॥ महावीर
चरणकूं सीस नम्या दुख जावे ॥ बृधमान चरणकूं शीश नम्या
दुख जावे ॥

॥ अथ पंचपरमेष्ठी नमन ॥

(राग—गजल)

प्रभात उठ पंचपरमेष्ठी नमोस्वरी, आप नामथी संसार जाय में तरी ॥ प्रभात ॥ १ ॥ आकडी ॥ अरिहंतदेव गुण अती दोगीरी। सुनी वाणी आपकी हमारा चीत लीया हरी ॥ त ॥ २ ॥ सकलकार्य सीद्ध अष्टगुण तो धरी, शत्रुकर्म तोड प शीव तो वरी ॥ प्रभात ॥ ३ ॥ आचार्य उपाध्याय परम- य तो श्री। छत्तीस ओर पचीस गुणज्ञानकी झरी ॥ प्रभात ॥ ४ ॥ सतावीस साधुगुण गंगनीर तो भरी। गुण एकसो नें ठ जाय पाप तो डरी ॥ प्रभात ॥ ५ ॥ प्राणीनाथ पंचप्रभु ीये अरी। दो ज्ञान करू पार दयाधर्म आदरी। प्रभात ॥६॥ ोड करे आरज चंपालालजी अती ॥ मुज भवपार उतारों एह वीनती ॥ प्रभात ॥ ७ ॥

॥ श्री पंचपरमेष्ठी प्रभातीस्तवन ॥

(राजा हूं मे कोमका, और इंद्र मेरा नाम ए देशी)

पेहे उठी मे सदा नमु प्रभु पंचपरमेष्ठी नाम। इण करमोकें लीयें ी मुजे आराम। पेहे उठी में ॥ १ ॥ आ० दील लगाहे पतें प्रभु नही औरोसे काम। अरजी तो मेरी लीजीयें लगे ी कछु दाम। पेहे ॥ २ ॥ लख चोराशी ज्योनका प्रभु वडा रूट हे टाम। फीरतेफीरते मे थका मीला नही आराम। पेहे ी ॥ ३ ॥ अष्टकरमकु तोडके प्रभु आयो हु सर्णे शाम, मनके दर आपकु बोहोत करू प्रणाम। पेहे ॥ ४ ॥ आप तीरे सारसे प्रभु तुमे चढी हे धाम। ज्ञान तो मुजकु दीजीये पांच नीरवाण। पेहे ॥ ५ ॥ मुख देवो दुःख मेटवो प्रभु

तुमारी वाण । मोय गरीबकी वीनती सुणीजो कृपानाथ
पेहे ॥ ६ ॥ इतिसंपूर्ण ॥

श्री ऋखबनाथजीरो पाळणो.

मा मोरा देवी गावेरे हालरीयो, झुले ह्मारा रीखबजी पथरीयो । टेर । रतन जडत लड लुंबारण कंता, इंद्रसुधरमा आगे धरीयो । मा मोरा देवी ॥ १ ॥ झुलेने झुलावे माता गावे, नीरख नीरख नेणा हीवडोजी ठरीयो । मा मोरा ॥ रीम झीम रीम झीम फीरत आंगणीये, झणणणकार वाजेरे रीयो । मा मोरा ॥ ३ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षण वीराजे, नही कोइ एसोरे नानडीयो । मा मोरा ॥ ४ ॥ नगरी अ दशीरे भरतमें, नाम वनीता माधवजी धरीयो । मा मोरा ॥ रमत रमाइ जुगरीत वताइ, तीन लोकमाहे जस वीसत मा मोरा ॥ ६ ॥ कहे हिरालाल जीनंदपद मोटो, एक जी गुण कीम जाय करीयो । मा मोरादेवी गावेरे हालरीये

श्री पार्श्वनाथजीको स्तवन.

श्रीपार्श्वप्रभूजी ॥ थांका दरसणकी ह्माने चायना ॥ टेर
आश्वसेण कुल कीरत धारी । भामा राणी सुत जाया । पे
वदी दीन दशमी जाणो । काशी देशमें आया जी । श्रीपा
प्रभूजी० ॥ १ ॥ बनारसी नगरीमें जनम लियो जब ।
कुमारी आइ । गावे वजावे ताल लगावे । नृत्य करे उमाइ जी
श्री० ॥ २ ॥ चौसष्ट इंद्र मिल मोहच्छवरने । मेरू शिखर न्हव
राये । पार्श्वनाम स्थापन करीने । माताजी पासे लाए जी
श्री० ॥ ३ ॥ बालपणामें रमता रमता । माताजीके लार । गंगा

ार आये चालके। तापसके दरवार जी । श्री० ॥ ४ ॥
। नागणी जलता देख कर। तापसको बोलाया। क्या आ
ाज करता जोगी। जरा दया नही लाया जी। श्री० ॥ ५ ॥
कारमंत्रका पद संभला कर। स्वर्गगती पहुंचाया। धरणिंदर
ावती प्रगटे। प्रभुजीका गुण गाया जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जोबन
ां परण्या प्रभूजी। श्रीपरभावती नार । राज पाटको छोड
या फीर। संजम पदको धारजी। श्री० ॥ ७ ॥ कमठ मरकर
ा मेघमाली। प्रभूजी हुवा आणगार । पिछला भवको वेर
नको। तुरत हुवा तैयार जी। श्री० ॥ ८ ॥ जलदी जलदी
कार उसने । मूसल जल वरसाया । नाक बराबर आया
ी। प्रभूजी नही घबराया जी। श्री० ॥ ९ ॥ संकटमें सिंहासन
पा। इंद्र इंद्राणी आया । पद्मावतीजीने लिये सीर पर ।
करत हे छाया जी । श्री० ॥ १० ॥ तुरत आया अपराध
ा कर। चरणे सीस नमाया । हग्र कुमठ और हात जोड-
। देवलोक सिधाया जी। श्री० ॥ ११ ॥ कर्म काट केवली
तर। पाम्या पद नीरवाण। शेहेर मुंवइमें गुण गाया। केवल
त हीत आण जी। श्री० ॥ १२ ॥ चिचपोकलीसे ममादेवी।
तुमान गली आया। मंगलदासकी वाडीमांहे। चोमासे सुख
या जी। श्री० ॥ १३ ॥ समत उगणीसे इगसठ कातिक। वद
स शनीवार । चार ठाणासे कियो चोमासो । आमोलख
खकी लार जी। श्री० ॥ १४ ॥ पुज्य साहेब कहानजी ऋषी-
की। संप्रदाय पेछाण। चारूं मांहेसु मोतीरिखजी। कर गाया
ल्याणजी। श्री० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ श्रीशांतिप्रभुको स्तवन ॥

सिरी शांति जीनेश्वर । साता वरते जी आपरा नाम मनमोहन गारा । जपता हुवे मंगलाच्यारने । या टेर। सेन नृप अचलाजी अंगज । जन्म्या शांतिकुमार । साता सब देसमे जी कांइ । मिरगी मार निवार हो । सिरी जीनेश्वर० ॥ १ ॥ धु धु धप मप मादल वाजे । नाटकरे कार । सुगुण गुज्यान सुगुण सु महीमा । बोल रया नर हो ॥ सिरी० ॥ २ ॥ टामन डुमन तोड गारुरे । खास ग्गार । ताव तेजरो नेडो नही आवे । तुठ्ठे शांतिकुमार हो सीरी० ॥ ३ ॥ इखप्याला अमृत होजावे । जाशि होवे छार वेरी दुसमन चोरटासरे । नहि आवे घर द्वार हो । सिरी० ॥ ४ शांति नामतो वसे हीये विच । भवदुख भंजन हार । शांति वरते निशदीन । शांति उतारो पार हो । सिरी० ॥ ५ दान शीयल तप भावना सेरे । सिवपुर मारग चार । म्हारी विनती सकाइ । वरते मंगळ चार हो । सिरी० ॥ ६ ॥ इति

पारसनाथ प्रभुको स्तवन.

वंदु पारस जीणंद । वंदु पारस जीणंद ॥ आसुसेन वामा देवीरा नंद ॥ टेर ॥ दसमा सरग थकी चव्या जीनराज जनम लियो सुख काशीरे माय । वंदु० ॥ १ ॥ जनम मो करताजी इंद । नाम दीयो ज्यारो पारसजीणंद । वंदु० ॥ २ कुमर पदेरामे पारस कुमार । मातपीता मन हारख आपार वंदु० ॥ ३ ॥ मात तात कहे चालो जोगीरे द्वार । देख जोगीको मान दीयो गार । वंदु० ॥ ४ ॥ मान गळ्योने लज्या आइ आग । निकाल वताया नेना गनी नाग । वंदु० ॥ ५ ॥

नायो हुवा महोटाजी सुर। आइने वंद्या श्री पारस हाजुर। दु० ॥ ६ ॥ तीस वरस प्रभु रह्या घरवास। तज संसार लियो जम उल्हास। वंदु० ॥ ७ ॥ त्रिंयासि दीवस प्रभु छदमस्त ाण। प्रगट हुवो पिछे केवल ग्यान। वंदु० ॥ ८ ॥ केवल होछव करताजी देव। द्वादश प्रख दासा रे नीत मेव। वंदु० ९ ॥ चोतीसे अतिसे करी सोभे जिनराज। वानी पेतीस ह्या घन जीमं गाज। वंदु० ॥ १० ॥ मुख सोभे ज्यारो पुनम ंद। नाम लिया मन हारख आनंद। वंदु० ॥ ११ ॥ सितर रस लगदी पायो धरम। ते पण पोच्या प्रभू सीवपुर खेम। दु० ॥ १२ ॥ गुरु हीरालालजी मोटा मुनिराज। चोथमल ोड्यो मंगलिक काज। वंदु० ॥ १३ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष च्यो- न साल। रामपुरामे वन्यो स्तवन रसाल। वंदु० ॥१४॥ इति ॥

शांतिनाथ प्रभूकी लावणी.

शांतिनाथ प्रभु शांतिके दाता। विघन हारन आंतरज्यामी। ुख संपतने लीला लक्षुमी। मन वंछित पुरण स्वामी। या टेर। ाजपुर नगरी नीरुपम उत्तम। आस्वसेन राया गुणवंता। गज ामनी रमणी अचला देवी। रूप कला गुण शोभंता। शांतिनाथ ्भू० ॥ १ ॥ सुख सेज्यामे सोवत सुंदर। चउदे सुपना उत्तम ह्या। कर जोडी राजासुं विनवे। राजाजी मन आनंद भया। ांति० ॥ २ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमान थकी प्रभु। चविने कुख जन्म लीया। सकल देशमें शांति करी प्रभु। रोग सोग सब दुर किया। शांति० ॥ ३ ॥ जेठ वद तेरसनी राते। हुवा ... लोकमें आनंदो। जनम महोछव करे देवता। जय २ ध... ... शांति० ॥ ४ ॥ चोसट इंद्र मील प्रभुकुं। मेरु

जाइ न्हवरावे ॥ इंद्राणी मील नृत्य करत है । जिनगुण स्वर गावे । शांति० ॥ ५ ॥ रीम झीम रीम झीम वाजे घुं रण रण तो पाय रणके । तत्ता थइ तत्ता थइ तानन झणण झणण झांझर झणके । शांति० ॥ ६ ॥ ताल मृदंग विणा वाजता । देव दुदुंभी आकाशे ॥ लेत वारणा ... इंद्र इंद्राणी उल्हासे । शांति० ॥ ७ ॥ इण विध जन्म कीयो । भाव भक्ती कर उत्कृष्टी । फिर मुक्या माताजी पासे कुसम तणी करता वृष्टी । शांति० ॥ ८ ॥ राजाजी पीन ... मांड्यो । दान दालीदर दुर कापे । सकल देशमें शांतिकरी गुण निष्पन्न नाम स्थापे । शांति० ॥ ९ ॥ चालिस धनुष्ये प्रमाण । मृग लांछन सोवन वरणा । रूप आनुपम अधिक ... देखंता ए चित्त ठरणा । शांति० ॥ १० ॥ पचीस सेहेस वर्ष प्रभुजी । रह्या कवर आणंदपणे । सहेस पचिस मंडलिक राजा सहेस पचीसचक्रवर्ति पणे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ छउ खंडमें ... चलाया । चउदे रत्न नउनीध धरे । सोळे सहस्र हुकमी चाकर बतिस सहस्र राय सेवा करे । शांति० ॥१२॥ हयवर गयवर । दीपंता । लक्ष ज्यारे है चौऱ्यांसि । छीन्नु कोड पायदल शोभतो सेवा करे धर उल्हासी । शांति० ॥१३॥ एक लाख ब्याणुं ... अंतेउरी । रूप ज्योबनमे आधिकाइ । या रिद्धी सब जानी कारमी छीनमे दीवी छीट काइ । शांति० ॥ १४ ॥ वरसी दान देइ संजम लिनो । सहस्र जणाके परीवारा । दीक्षा महोछव करे देवता जीनजीसे आधीक प्यारा । शांति० ॥ १५ ॥ एक मास ... रह्या । छद्मस्थः ॥ पछे ध्यायो सुभ ध्यानो । पौस सुदी नवमी दीवसे । प्रभु पाम्या केवल ज्ञाणो ॥ शांती० ॥ १६ ॥ इंद्र इंद्राणी देवी देवना । नर नारीना बहुवृंदा । दे उपदेश शांति जिनेश्वर । ...

ेक जीवाके आणंदो ॥ शांति० ॥ १७ ॥ सेहेस पचीस वरस
ः प्रभुजी । उतम केवळ प्रज्या पाळी । कर्म खपावी मुगते
तां । जिन सासनने उज्वाली ॥ शांति० ॥ १८ ॥ शांतिनाथ-
को सुमरण करता । दुःखीयाका सब दुःख कटे । मोक्ष महेलमें
य विराज्या । शांतिनाथ जिन जे ह रटे ॥ शांति० ॥ १९ ॥
यण सायण भूत पिसाच । जित्या झोंटीग विकराले । विकट
ट ने संकट ने बंधन । नाम लेत दुरा टाले ॥ शांति० ॥ २० ॥
ात चोखे मन सुमरण करतां । मन वंछीत आसा फळे । सिंह
ी ने चोर आगन भए । रोग सोग दुरा टाळे ॥ शांति० ॥२१॥
आनंदजीके शिष्य हीरानंदजी । नित समरण करे जिनवरका ।
म कृष्ण कर जोड विनवे । पाप हारो प्रभु भवभवका ॥ शांति०
२२ ॥ सवत आठारे वरस चौसटे । पोस सुदी दसमी गुरवारे ।
ातिनाथका गुण वरणव्या । सहेर नीमचके मझारे ॥ शांति०
२३ ॥ इति ॥

॥ श्री शांतिनाथ प्रभुको हालरीयो ॥

शांति कुवर हुलरावे । अचला देवी, शांतिकुवर हुलरावे ।
टेर । सर्वार्थसिध्धथकी चवी आया । शांति शांति वरतावे ।
ट वद तेरसानि हो राते । आनंद हारख वधावे । अचलादेवी,
ांतिकुवर हुलरावे ॥ १ ॥ चौसष्ट इंदर मीलकर प्रभुकुं । मेरू
खर न्हवरावे । ताळ मृदंगने पापल वाजे । इंद्रान्या मंगल
वे । अचला० ॥ २ ॥ आनंत वन्दी त्रिभुवनके नायक । लेइ
र गोद खलावे । मस्तक मुगट कानाकुं [illegible] । इंदरमे अधि[illegible]
ावे । अचला० ॥ ३ ॥ वदन [illegible] मोहन [illegible]
[illegible] लक्षण धरावे । निरख[illegible] [illegible] अति[illegible]

विग्न सहु टलजावे। अचला० ॥ ४ ॥ कहे चोथमल परसादे। हीवडे हारख नमावे। शांतिकुवरजी को गावे रीयो। मनवंछित सुख पावे। अचला० ॥ ५ ॥

नेमजीकी जान.

नेमजीकी जान बनी भारी। देखनकु आवे नर नारी। अनंत घोडा और हाथी। मनुष्याकी गीनती नही आती। पर धजा जोफर राती। गमकसे फीरती फर राती। दुहा समुद्रविजयजीका लाडला। नेम उनोका नाम। राजुल आये परणवा। उग्रसेन घर ठाम। प्रसन्न भई नगरी सब। नेमजीकी० ॥ १ ॥ कसुंबल वागा आतिभारी। काने छत्र न्यारी। किलंगी तुरा सुखकारी। माल गले मोती डोरी। दुहा। काने कुंडल झगमगे। सीस खुप झलका कोडी भानुकी करूं ओपमा। सोभा आधीक अपार। रह्या वाजा टरू सारी। नेमजीकी० ॥ २ ॥ छुट रही बरराइ। व्याव्हनगें आये वडे भाई। झरूखे राजुल दे आइ जानकु देखी सुख पाइ। दुहा। उग्रसेनजी देखके। मन करे बिचार। बहोत जीव करी एकठा। वाडो भऱ्यो तिण करी सब भोजनकी त्यारी। नेमजीकी० ॥ ३ ॥ नेमजी आये। पशुजीव सबही कुर लाये। नेमजी वचन फुरमाये। पशु जीव काहेकु लाए। दुहा। याको भोजन होवसी। जान वास्ते एह। एह वचन सुन नेमजी। थरहार कांपी देह। भावसे चढ गये गिरनारी। नेमजीकी० ॥ ४ ॥ पीछेसुं राजुलदे आइ। हात जय पकड्यो छिनमांही। काहा तुं जावे मोरी जाइ। और वर ई तुज मोकलाई। दुहा। मेरे तो वर एकही। हो गया नेम

र और भुवनमें वर नही। कोड करो विचार। दीक्षा जद
लने धारी। नेम० ॥ ५ ॥ सहेल्या सबही संमजावे। हिये
लके नही आवे। जगत सब झुटो दरसावे। मेरे मन नेमकुमर
॥ दुहा। तोड्या कंकण डोरला। तोड्यो नवसर हार।
ल टीकी पानसुपारी। त्याग्यो सब सिणगार। सहेल्या
ही वील खाणी। नेमजी० ॥ ६ ॥ तज्या सब सोले सिण-
ा। आभूषण रत्न जडीत सारा। लगे मोहे सबही सुख खारा।
ड कर चलि निरधारा। दुहा। मातपीतापरीवारकुं। तजता
लागी वार। विजोग कर चली आपनुं। जाय चढी गीरनार।
ती छेडी मा प्यारी। नेम० ॥ ७ ॥ दया दील पशु अनकी
ई। त्याग जब कीनो छिनमांही। नेमजिन गीरनारे जाइ।
के बंधन छुडवाई। दुहा। नेम राजुल गिरनारपे। लीनो
म जान। नवलमल करी लावनी। उपज्यो केवल ज्ञान।
तोकी कीरीया बुधसारी। नेमजी० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ सिद्धपदस्तवन ॥

श्री गौतम स्वामी पूछा करे। विनय करी सीस नमाए।
जी। अविचल थानक हो सुण्यो। कृपा करी मोय बतावो।
जी। शिवपुर नगर सुहामणो। या टेर ॥ १ ॥ आठ करम
लग किया। सार्‍या आतम काज। प्रभूजी। छुटा संसारना
धकी। ज्याने रहेवानो कोन ठांम ॥ प्र० ॥ शी० ॥ २ ॥
कहे ऊर्द्ध लोकमां। सिध्ध सिला तणो टाम हो। गौतम।
पुरीका उपरे। तेहना बारे नामहो ॥ गौ० ॥ शिव० ॥ ३ ॥
ऐतालीस योजन लांबी पोहली जाणहो ॥ गौ० ॥ अ
जन आठी बीचे। छेहडे माखी पंस ज्यूं जाणहो ॥ गौ

शि ० ॥ ४ ॥ उज्वल हार मोत्या तणो । गौ दुध संख
हो ॥ गौ ० ॥ ते थकी उजली अति घणी । उजले
संठाणहो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ५ ॥ अरजण स्वर्णसम दीपती
घठारी मठारी जाणहो ॥ गौ० ॥ फटक रतनथकी निरम
सुवाली अत्यंत वखाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ६ ॥
उल्लंघी गया । अधर रह्या सिध्धराज हो ॥ गौ० ॥ अले
जाई आव्या । सार्‍या आतमकाज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥
जनम नही मरण नहीं । नही जरा नही रोग हो ॥ गौ० ॥ शि
भूख नही तिरखा नही । नही हारख नही सोग हो ॥ गौ
करम नही काया नही । विषय रस नही योग हो ॥ गौ० ।
॥ ९ ॥ शब्दरूप रस गंध नही । नही फरस नही वेद हो ।
॥ बोले नही चाले नही । मौनपणुं नही खेद हो ॥ गौ० ।
॥ १० ॥ गाम नगर एक नही । वस्ती नही उजाड हो ॥
काल तिहा वरते नही । नही रात दीवस तीथी वार हो
॥ शि०॥११॥ राजा नही परज्यां नही । नही ठाकुर नही
॥ गौ० ॥ मुक्तिमां गुरु चेला नही । नही लघु वडाइको
॥ गा० ॥ शि० ॥ १२ ॥ अनंत सुखमा झीली रह्या ।
ज्योत प्रकास हो ॥ गौ० ॥ सहु कोइने सुख सारीखा । स
अविचल राज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १३ ॥ अनंत सि
गया । वलि अनंता जाय हो ॥ गौ० ॥ अवर जग्या रूंधे
जोतमें जोत समाय हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १४ ॥ केव
सहित छे । केवल दर्शन खास हो ॥ गौ० ॥ क्षायिक
दीपता । कदेही न होवे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ।
सिध्ध स्वरूप जे ओलखे । आनी मन वैराग हो ॥
शिव रमणी वेगीवरे । कवि कहे सुख आथा गहो ॥
शि० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ वीस विहरमानको छंद ॥

। श्री सिरिमंदर स्वामी । थांरो ध्यान धरूं सिर नामी । जुगमंदर आंतरज्यामी हो । जिणंद जसधारी जसधारी ॥२॥ बलिहारी हो ॥ १ ॥ या टेर । बाहु सुवाहुजीकी करूं । हुतो च्यांहु नित मेवा जी । धन २ थे देवाधी थे देवा । जी० ॥ २ ॥ सुज्यात स्वामी प्रभु ध्यांवु । रीखभानंदनजी गांऊ । अनंत वीरजी सीस नमाउं हो । जी० ॥ ३ ॥ सुर जी सब कंता । विसलधरजी विख्याता । दीजो मुज भव में सुख साता हो । जी० ॥ ४ ॥ वालेसर वज्रधरजी । सुणो नंदन आरजी । ह्मांरो जलम मरण द्यो वरजी हो । जी० ५ ॥ चंद्रवाहु भुजंग दयाला । छे काया जीवारा प्रतिपाला । रोक दीया आश्रवनाळा हो । जी० ॥ ६ ॥ ईश्वर नेमीश्वर रा । वीरसेन सदा सुखदाया । महाभद्रजी सर्व करम हटाया । जी० ॥ ७ ॥ देवजसजी हे जसवंता । अनंतवीरजी सुख- ता । दुःख जावे ध्यान धरंता हो । जी० ॥ ८ ॥ विचरे महा- देह क्षेत्रके माया । प्रभुजीरी पांनसे धुनुष्ये निकाया जुगमे गाया हो । जी० ॥ ९ ॥ प्रभुजीकी कंचन वरणी काया । वे जीवाके मन भाया । तिलोकरीख गुण गाया हो । जी० १० ॥ इति ॥

सोळे सतीयाको स्तवन.

ब्राम्ही सुंदरी दोनु वेन । नाम लियासु पावे चैन । सीलवंती आकन कुवार । समरू सती सोळे सिणगार ॥ १ ॥ टेर ॥ न आण्यो काम न भोग । भर ज्योवनमा लीधो जोग । [illegible] पार्श्वनाथ प्रभुजी दीनी तार । समरूं० ॥ २ ॥ [illegible]

दीनो दान । लाभ लीयो चंदन आरामान । देवतां किया
सफल सिणगार । समरूं ॥ ३ ॥ सेरा अतिसारी गुरणी
केवळ ले सती मुगते गइ । आत्रा गमण दीया दुःख नी
समरूं० ॥ ४ ॥ राजुल गइ जपारो जीत । नेमीसरजीसु
भीत । मनकर कियो नही ओर भरतार । समरूं० ॥ ५ ॥
पांडवनी द्रौपदा नार । सील तणी नही लोपी कार । गी
मूतरमे विस्तार । समरूं० ॥ ६ ॥ सीता लहु अंकुसरी
सीले देवतां कीधी साहाय । अग्नि कीधो पावक नीर ।
॥ ७ ॥ काचे ताते काढ्यो नीर । सीले आयो देवता
सुभद्रा उघाडी चंपाद्वार । समरूं० ॥ ८ ॥ कौसल्या वंदु प्रभा
मृगावती साची सती । पद्मावती दधी भाय न नार । समरूं०
सेवा कुंता सूळसा जान । फुफचुला दमयंती नार । नलराजा
गुनवंति नार । सीमरूं० ॥ १० ॥ सोळे सतिया सीळसु
सतीया मांड्यो करमासु जंग । सतीया हुइ कोइ रतन समा
समरूं० ॥ ११ ॥ इति॰

राजीमतीको स्तवन॰

आज रंग वरसे रे । आज रंग वरसे । ह्यारा नेमकुमर वि
राजुल तरसे रेक । आजरंग० । या टेर । विस लाख घुडलां
ऊपर । झीण बनाती करशारे । तिस लाख हास्त्यारे ऊपर ।
हौदो धरशारेक ॥ आज रंग वर० ॥ १ ॥ सेस गोपीया मील
मनसोबो । करे नेमजीसु आरजीरे । करे नेमजीसु आरजीरे ।
हुकारो भर लीयो नेमजी । ब्यावज करशारेक । आज० ॥ २ ॥
छप्पन क्रोड जादुरे जानीया । दे नगारा चढग्यारे । आज्यव
रंगीला जानीया । केसरीया वागारेक । आज० ॥ ३ ॥ द्वारकारा

थ नेमजी । सगळाइ देवत चढग्यारे । छत्तिस वाजा
जेरे जानसे । महोछव करशारेक । आज० ॥ ४ ॥ इंदर
ाय सवाल सुनायो । देखो जानकी त्यारीरे । नेमकुमर पर-
जे नाही । वाल ब्रह्मचारीरेक ॥ आज० ॥ ५ ॥ आज्जव
जसे जान वनाइ । जुनागढपर चढग्यारे । तोरणसे रथ फेर
ायो । जीनावर मरसीरेक । आज० ॥ ६ ॥ कीसन महाराजा
ाडा फिरने । करे नेमजीसु आरजीरे । जाधु जानले जाइए
मजी । काइ थाकी मरजीरेक । आज० ॥ ७ ॥ राजुल झुरणा
र रही । सहेल्या मील समजावेरे । विन ओगण पीउ छांड
ल्या । थाने कुन भुरमायोरेक । आज० ॥ ८ ॥ सावळी
रत भीना मन मोहे । चांद पुनमजीम चमकेरे । तोरणसुं
थ फेर दीयो । झारे हीरदे खटकेरे । आज० ॥ ९ ॥ सवाइ
ागे सवागन्याने । घर घर मंगलाचारोरे । समुद्राविजयजी-
ा लाडला । गीरनारे चढग्यारेक । आज० ॥ १० ॥ नेमकु-
रजी संजम लियो । पुरष एक हाजारीरे । तीन लोकमें महिमा
ारी । पर उपकारीरेक । आज० ॥ ११ ॥ इति ॥

राजीमती देवरने समझावे संझाए.

राजुल इणपरे विनवे हो । मुनिवर । थारो चित्त चळीयो
ुंघेर । थोडा सुखारे कारने हो । मुनिवर । कीउं पड्यो अंध
ंदेर । सुगुणा साधुजीहो । मुनिवर । थारो मन चळीयो तुंघेर
॥ १ ॥ या टेर । पंच महाव्रत आदर्या हो ॥ मुनिवर । मेरू
ेवडो भार । वमीयारी वांछा करो हो । मुनिवर । धीग थारो
मचार । सुगणा साधुजीहो । मुनिवर थारो चित चळीयो
ुंघेर ॥ २ ॥ वेरागे मन वाळनेहो । मु० । लीधो संजम भार

। अब कायर भाव कीसो करो हो । मु० । देख पराइ नार।
सु० । मु० । था० ॥३॥ राजपंथने छोडने हो । मु० । उजडमा भ
जाय । अमृत भोजन चाखनेहो । मु० । कुकसखाए वलाए।
सु० ॥ ४ ॥ गज आसवारी छोडने हो ॥ मु० ॥ खर ऊप
मत बेस । सरग तणा सुख छोडने हो । मु० । पाताळे मत पे
। सु० ॥ ५ ॥ चंदणवाळ कोयला करोहो । मु० । आंबा काट
बंबुळ । कुण बाहेर घर आंगणेहो । मु० । तिमथारो काइमुळ।
सु० ॥ ६ ॥ घर घर फीरनो गोचरी हो । मु० । देखशो सुंदर
नार । हाडनामा वृक्षनी परेहो । मु० । मोटो उपाड्यो भार।
सु० ॥ ७ ॥ वमीयारी वांछा करो हो । मु० । गंधन कुलमांहि
होए । रतन चिंतामणि पायनेहो । मु० । कीचडमें मत खोय।
सु० ॥ ८ ॥ थे तो अंधक विष्णुरा पोत राहो । मु० । समुद्र
विजयजीरा नंद । हुं भोजगविष्णुरी पोतरीहो । मु० । उग्रसेन
जीरी धीय । सु० ॥ ९ ॥ कुल मोटो आपा तणो हो । मु० ।
जीण सामो तुं जोय । काम भोगने वांछता हो । मु० । भलो
न कहेसी कोय । सु० ॥ १० ॥ गोल भंडारी सारीखो हो । मु० ।
हम्माल उठायो भार । बोज मजुरी आरथीयो हो । मु० । नही
माल सिरदार । सु० ॥ ११ ॥ घणो रूप नारी तणो हो । मु० ।
वस्तरने सिणगार । देख देख सिधावसी हो । मु० । कुण केसी
अनगार । सु० । मन गमतो इंद्रिय तणो हो । मु० । सुख विलस्यों
घर मांय । ज्यांसुं तो न्यारा रह्या हो । मु० । त्याग की
जिनराय । सु० । सु० । था० ॥ १२ ॥ आवे वैश्रवण इंद्रदेवताह
। सु० । नल कुबेरनी जगत । सुपनामें वांछु नहीहो । मु० । थारी
कीतनीक वात । सु० । सु० । था० ॥ १४ ॥ जिहां जिहां तुमे
विचरस्यो हो । सु० । नगरी नेवली गांम । नारी देख चित्त
डोलस्यो हो । सु० । नारी नरकनो ठाम । सु० ॥ १५ ॥ सहु

रीका नर नही हो । मु० । नही सरीखी नार । केइ मुंडाने केइ मला हो । मु० । चन्यो जाय संसार । मु० ॥ १६ ॥ ब्राह्मी मुंदरी बेनडी हो । मु० । सतीयामें सिरदार । करणी कर मुगते इ हो । मु० । नाम लिया निस्तार । मु० ॥ १७ ॥ तीर्थंकर चावीसमा हो । मु० । जगमे मोटी सोभ । वालपणे तज निसऱ्या हो । मु० । वंध वसामो जोय । मु० ॥ १८ ॥ नारी दुखनी वेलडी हो । मु० । नारी दुखनी खान । करणी करो चित्त निरमलि हो । मु० । कह्यो हामारो मान । मु० ॥ १९ ॥ वचन सुण्या राजुल तणा हो । मु० ॥ मन दीयो ठीकाने आय । धन धन तुं मोटी सती हो । मु० । माता थे राख्यो ह्मारो मान । मु० ॥ २० ॥ ए दोनु उत्तम कह्या हो । मु० । पाम्या केवल ध्यान । करम खपाइ मुगते गया हो । मु० । कीजे जिनरो ध्यान । मु० ॥ २१ ॥ समत आठारे बावने हो । मु० । सावण मास मझार । रीख चोथमलजी इम भणे हो । मु० । सुद पंचमी मंगळ वार । मु० । ॥ २२ ॥ इति ॥

॥ दशारणभद्रजीरो स्तवन ॥

वीरजिन वंदनकु आया ॥ दशारणभद्र वडे राया ॥ टेर ॥ पधाऱ्या वीरजिणंद भारी । दशारण नगरीके बारी । मुनिवर च-उदासहे सलारी । आरज्या छतिससे ससारी ॥ दुहा ॥ समोस-रण देवा रच्यो । वेठा त्रिभुवननाथ । इंद्र इंद्राणी सेवा करे । पाम्या हरख उलहास ॥ वीरजिन० ॥ १ ॥ खबर राजेंद्र भणी लागी । वीरजिन आय उतऱ्या वागी । जावणो दरसणके काजे । करे सजाइ बहु छाजे । दुहा । हाथी घोडा रथ पालखी । पाय-दळेर परीवार । भाई बेटा उमराव अंतेउर । सनहू लीधा लार ।

वीराजिन० ॥ २ ॥ अठार सहेस गज छाजे । घुडला लखचावे
गाजे । एकविस सहेस रथ ज्योती । पालखी एक सहेस सोहंती।
दुहा । हाथी घुमे घुडला हिसे । रथ्थ करे झणकार । पायदल
झुखरे आगले । वोले जयजयकार । वीराजिन० ॥ ३ ॥ पांचसे
अंतेउर लारे । करतहे नवा नवा सिणगारे । पहेरीया रत्न
जडीत गहेणा । वाजता वाजंत्री वयणा । दुहा । चामर छ
डुलावता । चाल्या मध्य वजार । राय अपरो आडम्बर देखी।
गर्भ कीयो तिणवार । वीराजिन० ॥ ४ ॥ स्वर्गसे इंदरभी आया
भेटीया श्री जिनवरका पाया । ग्यानसे सर्व वात जाणी
दशारणभद्र वडो मानी । दुहा । मान उतारण कारणे । इंद्र दीये
आदेश । एक ऐरावत ऐसो लावो । ज्युं गरभ गळे विशेष । वी
जिन० ॥ ५ ॥ चौसट सहेस गज छाजे । गगनविच उभ
गाजे । एकको ऐसो रुप आयो । सुणता आश्चर्यही पायो । दुह
एक एकके मुख पांचसे । मुख मुखके आठ दंत । दंत
आठ वावडी । ज्या मांहे कमल महंत । वीराजिन० ॥ ६
पाखडी लाख लाख ज्याके । नाटक पडे वत्तिससे तापे । इं
इंद्रासन सोवे । करणका ऊपर मन मोहे । दुहा । ज्यापर
वीराजीया । लारे बहु परिवार । दशारणभद्रजी देखने । गर्भ
गळ्युं तीण वार । वीराजिन० ॥ ७ ॥ चिंतवत आपने दील
माही । बडाइ कीस वीद रे भाइ । इंद्रसे जीतुं हुं नाइ । करुं
उपाय कठाताइं । दुहा । अवसर देखी संजम लिनो । दशारणभद्र
नरेंद्र । तुरत आइ उतावळो । पगे लाग्यो शक्रे इंद्र । वीर-
जिन० ॥ ८ ॥ इंद्र जद मुनिवरसे वोले । नही कोइ आपतणे
तूले । ओर तो शक्ती घनी ह्मारे । वेकेकूं दीक्षा नही धारे ।
दुहा । धन धन हे मुनिरायजी । तुमे राख्यो मान अखंड

ार गुन्हेगार हुं । इंद्र गयो गगनके मंद । वीरजिन० ॥ ९ ॥
र संजम सुद्ध पाळे । दोष सहु आतमना टाळे । मिटाया
मरण फेरा । आतमा आटल हुवा तेरा । दुहा । गुरु देव
ासे । सुणियो भविजन लोक । जो करणी साची करे ।
ेलशी सगळा थोक । वीरजिन० ॥१०॥ समत उगणीसे का
। साल तेतीसा मन मोहे । आसोज सुध्द पंचमी
गो । हारखसे हीरालाल गाणो । दुहा । देश हाडोती विषे ।
टो मोटो सहेर । चोमासो कियो रामपुरामा । चार संतकी
। वीरजिन० ॥ ११ ॥

भरतचक्रीको स्तवन.

अमरपद पाया हो । भरतेश्वर मोहटा राजवी । मुगति पद
ायाहो । भरतेश्वर मोहटा राजवी । या टेर । सर्वार्थसिद्ध थकी
वि आया । नगरी विनीता माय । रिखभदेवजी तात तुह्मारा ।
मंगळादे माय । अमर० । भरते० । मुगति० । भरते० ॥ १ ॥ लाख
स पूरव तांइ । कंवर पद महाराज । खटल खलाखपूर
तांइ । राजपदवी भोगवी श्रीकार । अमर० । भरते० । मुगति० ।
रेन० ॥ २ ॥ साठ सहेस वरसा लगतांइ । दिग्विजय
अधिकार । अष्ट भगत त्रीदस आराधी । वस किधा भूपाल । अमर०
भरते० । मुगति० । भरते० ॥ ३ ॥ रतन चतुर दस वनीद
ायक । राणी चौसट हजार । महेल बयाळीस भोमीयासरे ।
करो धुंकार । अमर० । भरते० मुगति० । भरते० ॥ ४ ॥
ोड देवता कह्यांसरे । तन्नतना रखवाल । लख चौऱ्यांसि
हय गयवर । छोन्नुं क्रोड झुंझार । अमर० । भरते० । मुगति०
भरते० ॥ ५ ॥ आरीसारा भुवनमा सजी । आयो उज्वल ध्यान ।

वीराजिन० ॥ २ ॥ अटार सहेस गज छाजे । घुडला ... गाजे । एकविस सहेस रथ ज्योती । पालखी एक सहेस ... दुहा । हाथी घुमे घुडला हिंसे । रथ्थ करे झणकार । पायद सुखरे आगले । बोले जयजयकार । वीराजिन० ॥ ३ ॥ पांच अंतेउर लारे । करतहे नवा नवा सिणगारे । पहेरीया रत्न जडीत गहेणा । वाजता वाजंती वयणा । दुहा । चामर ... डुलावता । चाल्या मध्य वजार । राय अपरो आडम्बर देखी । गर्भ कीयो तिणवार । वीराजिन० ॥ ४ ॥ स्वर्गसे इंदरभी आया । भेटीया श्री जिनवरका पाया । ग्यानसे सर्व वात जाणी । दशारणभद्र वडो मानी । दुहा । मान उतारण कारणे । इंद्र दीयो आदेश । एक ऐरावत ऐसो लावो । ज्युं गरभ गळे विशेष । वीर-जिन० ॥ ५ ॥ चौसट सहेस गज छाजे । गगनविच उभा ... गाजे । एकको ऐसो रुप आयो । सुणता आश्चर्यही पायो । दुहा । एक एकके मुख पांचसे । मुख मुखके आठ दंत । दंत दं... आठ वावडी । ज्या मांहे कमल महंत । वीराजिन० ॥ ६ ... पाखडी लाख लाख ज्याके । नाटक पडे वत्तिससे तापे । इंद्र... इंद्रासन सोवे । करणका ऊपर मन मोहे । दुहा । ज्यापर इंद्र... वीराजीया । लारे बहु परिवार । दशारणभद्रजी देखने । गर्भ ... गळ्युं तीण वार । वीराजिन० ॥ ७ ॥ चिंतवत आपने दील-माही । वडाइ कीस वीद रे भाइ । इंद्रसे जीतुं हुं नाइ । करुं ... उपाय कठाताइं । दुहा । अवसर देखी संजम लिनो । दशारणभद्र नरेंद्र । तुरत आइ उतावळो । पगे लाग्यो शक्रे इंद्र । वीर-जिन० ॥ ८ ॥ इंद्र जद मुनिवरसे बोले । नही कोइ आपतणे तूले । ओर तो शक्ती घनी म्हारे । वेकेकूं दीक्षा नही धारे । दुहा । धन धन हे मुनिरायजी । तुमे राख्यो मान अखंड

र बार गुन्हेगार हुं । इंद्र गयो गगनके मंद । वीरजिन० ॥ ९ ॥ निवर संजम सुद्ध पाळे । दोष सहु आतमना टाळे । मिटाया न्म मरण फेरा । आतमा आटल हुवा तेरा । दुहा । गुरु देव ादसे । सुणियो भविजन लोक । जो करणी साची करे । मिलशी सगळा थोक । वीरजिन० ॥१०॥ समत उगणीसे का वि । साल तेतीसा मन मोहे । आसोज सुध्द पंचमी णो । हारखसे हीरालाल गाणो । दुहा । देश हाडोती विषे । टो मोटो सहेर । चोमासो कियो रामपुरामा । चार संतकी र । वीरजिन० ॥ ११ ॥

भरतचक्रीको स्तवन.

अमरपद पाया हो । भरतेश्वर मोहटा राजवी । मुगति पद ायाहो । भरतेश्वर मोहटा राजवी । या टेर । सर्वार्थसिद्ध थकी वि आया । नगरी विनीता माय । रिखभदेवजी तात तुह्मारा । मंगळादे माय । अमर० । भरते० । मुगति० । भरते० ॥ १ ॥ लाख स पूरब तांइ । कंवर पद महाराज । खटल खलाखपूर तांइ । राजपदवी भोगवी श्रीकार । अमर० । भरते० । मुगति० । रते० ॥ २ ॥ साठ सहेस वरसा लगतांइ । दिग्विजय धिकार । अष्ट भगत त्रीदस आराधी । वस किधा भूपाल । अमर० भरते० । मुगति० । भरते० ॥ ३ ॥ रतन चतुर दस वनीद ायक । राणी चौसट हजार । महेल बयाळीस भोमीयासरे । टकरो धुंकार । अमर० । भरते० मुगति० । भरते० ॥ ४ ॥ ेय क्रोड देवता कह्यांसरे । तन्नतना रखवाल । लख चौऱ्यांसि थ हय गयवर । छीन्नुं क्रोड झुंझार । अमर० । भरते० । मुगति० भरते० ॥ ५ ॥ आरीसारा भुवनमा सजी । आयो उज्वल

अनित्य भाव तासजी । पाया केवल ग्यान । अमर० । भर
मुगति० । भरते० ॥ ६ ॥ संजम ले पधारीया सजी ।
सभाके मांय । दससहेस सझाए नरपत । मुगति पंथ १
अमर० । भरते० । मुगति० । भरते० ॥ ७ ॥ तिजा अंगके
सजी । चोथानो अधिकार । उगी उगीने उगीयो स
पुन्य तणो जयकार । अमर० । भरते० मुगति० । भरते० ।
भरत खंडको चक्रवर्ती । पहेलो भरतेश्वरजी नाम । ऐसा ध
ध्यान ध्यावता । पावे सुख आराम । अमर० । भर
मुगति० । भरते० ॥ ९ ॥ लाख पुरव लगपाळीयो. सजी ।
पद अनगार । अनशनकरी अष्टापद उपरे सजी । पाया
पार । अमर० । भरते० । मुगति० । भरते० ॥ १० ॥ उ
पिचताळीस वरसे । रतनपुर चोमास । हीरालाल कहे
प्रसादे । पुरे मतकी आस । अमर० । भरते० । मुग
भरते० ॥ ११ ॥ इति ॥

श्रीवेलावलराग पद.

रे जीव जिनधर्म कीजीये । धर्मना चार प्रकार । दान
तप भावना । जगमांहे ए तत्त्वसार । रे जीव० १ ॥
दीवसने पारणे । श्री आदीश्वर आहार । इक्षुरस प्रति ला
श्री श्रेयांसकुमार । रे जीव० ॥ २ ॥ प्रज भव सशीलो रा
कीधी करुणा सार । श्रेणिक नृप घर आवतस्यो ।
मेघकुमार । रे जीव० ॥ ३ ॥ चंपा पोळ उघाडवा । च
काढ्यो नीर । सतीए सुभद्र जस थयो । तीणरो सीयल
। रे जीव० ॥ ४ ॥ तप करी काया सोकवी । अरस विर
आहार । वीराजिणंद वखाणीयो । धन्य धन्य अन

० ॥ ५ ॥ अनंत भावना भावतां । धरता निरमल ध्यान ।
ारिसा भवनमें । पाम्या केवल ग्यान । रे जीव० ॥ ६ ॥
सुरतरुसमो । एहनी सीतल छाय । समय सुंदर कहे
। मोक्षतणा फळ पाय ॥ ७ ॥ इति ॥

मुक्ति जाणेकी डिगरी.

(हीर रंझेंका ख्यालकी, देशी.)

ो आदालत प्रभुजी कीजिये । जिनशासन नायक मुगती
ो डिगरी दीजीये । या टेर । खुद चेतन मुदई बना है । आठुं
मुद्दाला । दावा रसता मुगती मारगका । धोखा दे जाय
जी । जिन० ॥१॥ तव कागद इष्टाम लिया । तलवाणा खिमा
री । सझाय ध्यान मजमून बनाकर । आरजी आन गुजारीजी ।
० ॥ २ ॥ मैं जाता था मुगती मारगमें । करमोने आ घेरा ।
ा देकर राहा भुलाया । लूट लिया सब डेराजी । जिन०
॥ बहोत खराब किया करमोने । चौऱ्यासिके मांही ।
। अनंत पाया मैने । अंतपार कछु नाहींजी । जिन० ॥ ४ ॥
मिले वकिल कानूनी । पंच महाव्रतधारी । सूत्र देख मए
ा कीना । तव मैं आरजी डारीजी । जिन० ॥ ५ ॥ पांचे
ंति तीनुं गुप्तीए । आठुं गवाह बुलावो । शील असेसर बडा
धरी । उसकुं पूछकर मंगावोजी । जिन० ॥ ६ ॥ आरजी
ारी चेतन तेरी । हुवा सफीना जारी । हाजर आवो जवाव
खावो । लावो साबूति सारीजी । जिन० ॥ ७ ॥ आठूं मुदा
हाजर आए । मोह मुगत्यार बुलाए । च्यार कषायरु अठे
रकुं । साथ गवाइमें लायाजी ॥ ८ ॥ जिनशासन नायक
ा दावा है चेतन जीवका । (या टेर) जि० मु०

हामने नहिं भखाया इस्कुं। यह मेरे घर आया। करजा लेक
हामसे खाया। ऐसा फरेब मचायाजी ॥ जिन० ॥ झुटा० ॥९
विषय भोगमें रमियो चेतन। घाटा नफा नही जाना। करजदा
जब लारे लागा। तब लागा पिस्तानाजी। जिन०॥ झुटा० ॥१०
हाजर खडे गवा हमारे। पुछिये हाल ज्युं सारा। बिनालि
करजा चेतनसे। कैसे करै किनाराजी। जिन० ॥ झुटा० ॥११
चेतन कहै सत्ता वी मांहीं। सुनो शासन सिरदार। इमानदार
गवा हामारे। जाणे सब संसारजी। जिन० ॥ मुगती० ॥ १२
में चेतन अनाथ प्रभुजी। करम फिरे वी भारी। जीव अ
राहा चलतकुं। लुट चौरासीमें डारीजी। जिन० ॥ १३
बडे बडे पंडित इण लुंटे। ऐसा दम बतलाया। धरम कहा और
कराया। ऐसा करज चढायाजी। जिन० ॥ १४ ॥ हिंसाम
धरम बताया। तपशासे तिडीगाया। इंद्रिया सुखमें मगन करीं
झुटा जाल फैलायाजि। जिन० ॥ १५ ॥ ऐसा करो इनस
प्रभुजी। आपील होने नही पावे। हा करसी चेतनकी हो
जनम मरण मीट जावेजी। जिन० ॥ १६ ॥ ज्ञान दर्शन
मुनसफी। दोनो को समझाया। चेतनकी डिगरी करदीनी।
मोका करजा बताया जी। जिन० ॥ १७ ॥ असल करज जो
कर्मोका। चेतनसे ती दिलाया। सुद संजम जद करी जमान
आगेका दुःख मिटाया जी। जिन० ॥ १८ ॥ आश्रव छोड
रको धारो। तपस्यासे चित्त लावो। जलदी करज आदा
चेतन। सिधा मुगतीको जावो जी। जिन० ॥ १९ ॥ सुध स
जद करी जमानत। चेतन डिगरी पाइ। फागुण सुद दशमी
मंगल। सन उगणीसै आठोइजी। जिन० ॥ २० ॥ इति ॥

महावीर प्रभुकु आर्जी.

(राग माढ)

महावीर स्वामी, आंतरज्यामी, शिवगत गामी, पुरो हमारी आस । प्रणमु सिर नामी, कुमती वमी, सुमती स्वामी, पुरो हमारी आस ॥ या टेर ॥ साखी परम करम संच्या खरा म्हें । सेव्या विषय विकार । आतम दोष नवी अवधार्‍यो । गर्वसहीत गमार । बांध्या कर्म अपारी, विनंति म्हारी, चित्तमें धारी, पुरो हमारी आस ॥ पु० ॥ महावीर० ॥१॥ साखी ॥ आयो हूं आपने आसरे रे । बाह्य गृह्यानी लाज । भमतां भवजल पार उतारो । गीरवा गरीब निवाज । ए छे आर्जी हमारी, लिजो स्वीकारी, छो उपकारी, पुरो हमारी आस । पु० महावीर० ॥ २ ॥ साखी ॥ वीर प्रभु मुज हार हीयाना । आतमना आधार । तुम चरणांबुज वासना करी । अंतर हूंस अपार । छो विश्वाधारी, सुरत प्यारी, लिजो उगारी, पुरो हमारी आस ॥ पु० ॥ महावीर० ॥ ३ ॥ जन्मो जनम हुं दास तुमारो । वाहाला प्रभु विसवास । चंपालालजी मुनी परतापे । आरजी कालीदास । कीधी क्रोड आपारी, चित्त विचारी, ल्यो आवधारी, पुरो हमारी आस ॥ महावीर० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ जिनराजकु विनंती ॥

(राग धनाश्री)

विनंती धरज्यो ध्यान । जिनपती । विनंती धरज्यो ध्यान । टेर । भवसागर भुलो भमीयो । नथी सुधके सान । जिनपती विनं० ॥ १ ॥ मोह मायाए हमपर कीधुं । दुःख रछे कद वाण जिन० ॥ २ ॥ हाय हजारो, किधां कुकर्मो । तेथी हाल

॥ जिन० ॥ ३ ॥ शांतपणे नथी, कीधुं कदापि । भक्ति रसनु पान ॥ जिन० ॥ ४ ॥ कर ग्रहो हवे, कृपा करीने । भक्तवत्सल भगवान ॥ जिन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ सुमतिनाथ प्रभुकु, आर्जी ॥

(ललीत छंद)

सुमतिनाथजी, अर्ज उच्चरूं । तुम पसायथी, पापने हरुं । शरण एक छे, नाथ ताहरूं । जिनपती तने वंदना करूं ॥ या टेर ॥ १ ॥ नरक वेदना, मे लही घणी । भव अनंतमां, जीवने हणी । जनम मरणनी, वाल सीकरूं ॥ जिनपती० ॥ २ अनपराधिने, दुःख में दिधां । कपट आचरी, द्रव्यने लिधां तुजविना हवे, युत किहां करूं ॥ जिन० ॥ ३ ॥ अचल देव रे, दर्शन आपज्यो । निबड पापना, ओघ कापज्यो । कर जोडी सदा, अर्ज उच्चरूं ॥ जिन० ॥ ४ इति ॥

॥ जिनराजसे विनंति ॥

(राग कल्याण)

जय जय जिनेश्वरा, तुज ईश्वरा । नम्र थइने नमु, सद धराधरा ॥ या टेर ॥ विनती मांगु छुं हुं स्वामी । भवजल ... काज । हु अपराधी पापी पुरो । माफ करो महाराज ॥ ज जय० ॥ १ ॥ सद्बुद्धी आपो सेवकने । छो स्वामी सुखकार कुड कपट दिलमां नवी धारूं । निराधार आधार ॥ जय० ॥ २ एक आसरो अंतरज्यामी । आवर नथी कोइ आस । सरणे सेवक हुं थारो । प्रीते राखो पास ॥ जय० ॥ ३ ॥ संसा कमाया बंधनमां । वळग्यो छुं हुं दीन । कहे पानाचंद तु सरणे । सुख दुःख कर्माधीन ॥ जय० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ शीतलनाथप्रभुसे आर्जी ॥

(राग धनाश्री)

तारो जगताधार । शीतल जिन तारो, जगताधार ॥ टेर ॥
ानव पायो पुण्य उदये । जरि यनसे व्योसार ॥ शीतल० ॥
॥ कामी क्रोधी, लोभी निवड्यो । जननी वेठ्यो भार ॥ शी०
। २ ॥ मोहरूपी, मायामा पडियो । थयो जुगारी ज्यार ॥ शी०
। ३ ॥ तुम वीना जीनजी, आ कालकनी । कहो कोन लेशे सार
। शी० ॥ ४ माठा करमी, थयो मतिमंद । प्यार किधो परनार
। शी० ॥ ५ ॥ पूरण पापी बनीयो म्हें आज । धिक् धिक् मुज
ावतार ॥ शी० ॥ ६ ॥ बगनी पेरे, म्हे बहु ठगीया । नाखे
केधा नरनार ॥ शी० ॥ ७ ॥ ए सहु पापो, माफी आपो । क्षमा
करी आवार ॥ शी० ॥ ८ ॥ नंदा माता, जिनका जाया । दृढ-
रथ राजकुमार ॥ शी० ॥ ९ ॥ भद्दलपुरमा, जन्मे प्रभूजी । शिव-
ुभ लंछन सार ॥ शी० ॥ १० ॥ दोय कर जोडी, सेवक विनवे
कर करुणा किरतार ॥ शी० ॥ ११ ॥ परम दयालूं, देव तुं
ाचो । कृपा करो इणवार ॥ शी० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ महावीर स्वामीको स्तवन ॥

मनडो मोह्योजी । महावीर स्वामी ह्मांने दरसन देइदोजीक ।
मनडो मो० ॥ या टेर ॥ दसमा स्वर्गथकी चवि आव्या । च-
ैत्र वरस तिथी पायाजी । पूरवला पुन्यारा जोगे नाथ केवा-
याजीक । मनडो० ॥ १ ॥ सिद्धारथ राजाजीरा नंदन । त्रसला-
देवी जायाजी । तीन लोकमें रूप आनुपम । अधिको पायाजीक
। मनडो० ॥ २ ॥ तीर्थंकर पदवीसुं आया । ग्यान घनेरो ला-
याजी । भवी जीवाका काज सुधार्‍यां । फेर मुगत सिधायाजीक

। मनडो० ॥ ३ ॥ मनमे जो नर ध्यांवे । ओ नर सुख आनंता पावेजी । जनम जराने मरण मिटावे । फेर गरभ नहि आवेजीक । मनडो० ॥ ४ ॥ गुरु हामारा रामरतनजी । दीयो पाप छोट-काइजी । चोट लगी निजनाम धनीकी । झारा हीरदामे ... जीक । मनडो० ॥ ५ ॥ इति ॥

उपदेशी वंजारा.

यो माया जाल डमेरो; इणमे नही सुखनो खेरो । टेर । क चढीये हाथी घोडो । क्यौ दुःखसे माया जोडो । क्यौ फो तडफा तोडो ॥ चाल वदल ॥ इनमें नही सार । जावोला हा पडेला मार । जमारो घेरो ॥ इनमे० ॥ १ ॥ झुटा क्यौ झग मारो । क्यौ परधन देख विच्यारो । क्यौ परस्त्रीपर चि निहारो ॥ चाल वदल ॥ थारी नही चीज ॥ व्यर्थ मत रीझ देख तजवीज । पछे नही सारो ॥ इनमे० ॥ २ ॥ या का दीसे काची । इणमे काइ जाणो थे साची । देखोनी थोडी पा ॥ चाल वदल ॥ दया मन धार । छोडो संसार । मिले अ कार । टळे नरकनो फेरो ॥ इनमे० ॥ ३ ॥ संसार जेहर प्य लो । इणमे नही कोइ जीवेलो । कुच करणा होयसो कर ॥ चाल वदल ॥ करो मत देर । सिराने सेर । काळरो घेर ऊभो तैयारो ॥ इनमे० ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

उपदेशी पद.

एहि दुनियामें कछु नही बावा । क्यों तुं दिवाना वनता है वकरी माफक हरघडी मेरा २ क्यों तुं करतां है ॥ महेल खजा कछु नही तेरा । कबुना कबु व्हां जाना है ॥ लख चौऱ्यां गोते खाकर । ए तुज नर तनु पाया है । ए नही गमाना खा

ने। सावध होना आछा है । जाया जनीता पुत भतीजा ।
तो सब कुच तीत रहै। दास गणु कहे राम दयाघन। आराम
नेवाला दाता है ॥ इति ॥

मराठीभाषेंत जिनराजप्रभूस विनंति.

(राग धनाश्री)

विनंती परिसावी। जिनपती विनंती, परिसावी ॥ धृपद ॥
वसागरीं या भुललों भ्रमतों। चक्र रथा जेंवी ॥ जिन० ॥१ ॥
या ममता लोभ अहंता। विलया प्रति नेई ॥ जिन० ॥ २ ॥
य हजारों पापें केलीं। पार न त्या कांहीं ॥ जिन० ॥ ३ ॥
त मनें नच, ध्यान तुझे। कधीं केलें नाहीं ॥ जिन० ॥ ४ ॥
क्तवत्सल, हेंच मागतसे। जन्ममरण चुकवी ॥ जिनपती ॥
५ ॥ इति ॥

मराठी भाषेंत समवसरण.

चाल (लग्नाला जातों मी द्वारकापुरी)

ऐकियले नाम तुझें वंद्य भूवरी। समवसरण पाहुं चला,
तिं ती वरी ॥ धृ० ॥ उत्सव वहु थोर होत, सुरनर मुनि
र्वे येत, शोभिवंत वहुत दिसत, विपुल तो गिरी। ऐकियले०
१ ॥ सकल जनानंद कंद, तोडि जन्ममरण बंध, शांत कांत
क्तिकांत। पाहिल्यावरी। ऐकियलें ॥ २ ॥ भवजलनिधि
ारण्यास, विनवी प्रभु वालदास, हेची आस तोडि फास,
कल झडकरी। ऐकियले० ॥ ३ ॥ इति ॥

उपदेशी पद.

(भाभी कैसे पकाये ए देशी.)

भैया कैसे गमाते उत्तम जनम। टेर। पीर भवानी पत्थ

पूजो, करते हिंसा अजाण। संत ज्ञानी धरमी
करते द्वेष गुमान । भ० । कंद मूल अभक्षको खावे
पीवे अनगल पाणी । खोटा धंदा गुणिकी निंदा,
चित ठाणी । भ० ॥ २ ॥ नाटक जूंवा वेश्या कुसंगे,
रात गमाते । दया समाई मुनि दरशन गुण, करता
शरमाते । भ० ॥ ३ ॥ गाल्या गांवे खावे खेले, फाग
हो स्वार । मात तात गुरु जातल जावे, लाजे नही गीवार।
भ० ॥ ४ ॥ धन ज्योवनके मदमे फसके, अमोल सीख
माने । तो फिर रोवे उरशिर कुटी, पेली समजावूं थाने।
॥ ५ ॥ इति ॥

उपदेशी पद.

(वता दे सखी) ए देशी.

वता दे भया, इस जगमें तेरा कोण । टेर । देहसे
करे क्यौ व्यर्थ । नर हे कीया जादू टोन । व० ॥ १ ॥
दौलत कुछ काम न आता । पुण्य खूटे जावे ज्यूं पोन । व०
२ ॥ स्वजन सवी स्वार्थके हे । जी जी करे धन होन । व०
३ ॥ क्षमा दया दान, ए धर्म तेरा । ले ले अमोल
जोन । व० ॥ ४ ॥ इति ॥

पद– (कर ले मली जिनका ध्यान) ए देशी.

चेतन तूं तो हुवा बैमान । न राहा तेरा तुझे कुछ भान
टेर । गर्भवासमे कोल कीया था । दो सुख मुज भगवान । वा
आके फसा मायामें । लेन देन खान पान । चे० ॥ २ ॥
वेगारी धन जोरूका । धंधेमें हुवा हेरान । मेरा २ करता फी
जर जोरू जमी मकान । चे० ॥ २ ॥ जिस प्रतापसे तूं

।। न करे उस्की पेछान । हरामखोर खजाना पूनका । ां नाहाक खूरदान । चे० ॥ ३ ॥ जाते २ भजले साहेबकूं । सुकृत धर्मदान । तो आगेकूं सुख पायगा । अमोलख रिख न । चे० ॥ ४ ॥ इति

पद- (देशी येही.)

चेतन तूं तो हुवा नादान, करतां नही जरा पैछान । टेर । ळपना हस खेल गमाया, ज्यो बने खान पान ॥ बूढा हुवा त घटी तनकी, पडा खाटके स्यान । चे० ॥ १ ॥ कुटुंब ला धन लेवनकों, बोले मीठी जबान । माल खोस तुज । बनाके, जला देवे स्मशान । चे० ॥ २ ॥ आतिउत्तम ए तन पायां, कर ले धर्म पैछान । निरलोभी गुरूके चरण ो, ज्यों मिले आत्मज्ञान । चे० ॥ ३ ॥ छोड नादानि जा इमानी, ज्यों चहीये सुख निधान । छोडदे दुकृत, करले त, मान आमोलकी बान । चे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ जीव कायाका सवाल. ॥

(चाल विनजारा)

यो काया कहे कर जोडी । मत जावो नाथ मुज छोडी । टेर । प्रीत करी मुज पाली । माल खवाइ चढाई लालीजी । तुम थे सेजपे पोडी । मत० ॥ १ ॥ करी प्राणथकी मुज प्यारी । नही रही क्षणभर न्यारीजी । बणी खुप मजेकी जोडी । ० ॥ २ ॥ तुम प्रीतम मे तुह्मारी प्यारी । तुम फुल मै गुल ारीजी । कदी आज्ञा तुमारी नही मोडी । मत० ॥ ३ ॥ कुछ ा मेरेमे बतावो । विना गुन्हे छोड क्यौं जावोजी । या भावे दातोडी । मत० ॥ ४ ॥ तुम गया मुजे दुःख

सब सज्जन मीलके रोसेजी। मुज लेजासे ओडा पछोडी। .
॥ ५ ॥ अग्निके माय जलासे। न जाणे काग कुत्ता खासेजी
हो जासे छीनमे राखोडी। मत० ॥ ६ ॥ चेतन इणपरे ...
एह अनादी रीत चली आवेजी। जुनी रीत न जावे तो
मत० ॥ ७ ॥ तूं वदल गइ मुजसे व्यांइ। एह कांहांसे कु
लाइजी। रोग सोग करी घणी खोडी। मत० ॥ ८ ॥
मीले अविचल काया। हामे तैसाही करसा उपाया जी।
आमोलिकरिखकी हे होडी। मत० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ लावणी तत्व पेछाण. ॥

जैनधर्म जीस मीला हे प्यारे, और धर्मकूं क्या कर
श्रावक कर्म पैछान लीया फिर, और कर्मकू क्या करणा ॥
देव तीर्थंकर जानालिया फिर, और देवकों क्या करणा। ।
गुरूकी सेव मीली फीर, और सेवकों क्या करणा। निरव
पेछान लिया फिर, और पेछानकों क्या करणा। ज्योतीस
जान लीया फीर, और जानके क्या करणा। दील जी
नर्म हुवा फिर, और नर्मकों क्या करना ॥ श्रा० ॥ १ ॥
साधन जीनने किया फिर, और साधनकों क्या करणा।
वचन आराध लिया फिर, और आराधन क्या करणा।
सागरकों पायगये फिर, डाबर डोयके क्या करणा। हो
सो हो गुजरी, फिर उस्कूं रोयके क्या करणा। शिवमंदि
परम मीला फिर, और परमकों क्या करणा ॥ श्रा०।
अनुभव अमृत भोजन मीला फिर, भोग जहेरकों क्या कर
ज्ञान लहेरमे चित्त लगा फिर, विषय लहेरकों क्या कर
जोगाश्रम जिन धारण फिर, रसना स्वादकों क्या करणा।

कबिला छोड दीया फिर, उन्की यादकों क्या करणा। सिरपेर जिन नंगे किये फिर, लोक शरमकों क्या करणा ॥ आ० ॥ ३ ॥ पुण्य संचके जो लाया फिर, धन संचके क्या करणा। पक्षपात जब छोड दीया, तब बात खेचकें क्या करणा। वैभव अशाश्वत जाण लिया फिर, उसमें राचकर क्या करणा। रिख अमोलक श्रम सफल किया फिर, और श्रमकों क्या करणा ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ उपदेशी बंजारा ॥

करो धरम तपशा भारी। जीउं लागे करमने कारी ॥ टेर ॥ थारो बरस बरस इंउ जावे। थारो दीन दीन नेडो आवेजी। कोइ काल करेगा पुकारी ॥ जीउं० ॥ १ ॥ कोइ मनमें निश्चय राखो। कोइ लोभ परोथे न्हाकोजी। जीनीसु भली होयगा थारी। जीउं० ॥ २ ॥ ए मातपीता सुत भाइ। थारे संग नही चलसी कोइजी। तुं करणी जासी थारी। जीउं० ॥ ३ ॥ तुं मत गुथेना खोटा। तने जम मारेला सोटाजी। तने देसे महादुःख भारी। जीउं० ॥ ४ ॥ ब्राह्मण रामकिसनका कहेना। कोइ झुटा लेनादेना जी। परनार महा दुःखकारी। जीउं० ॥ ५ ॥

उमर (आयुष्य) रूप इंद्रजालका ख्याल.

(रागबंजारा.)

तूं देख तमाशा थारा। जग इंद्रजाल पसारा। टेर। बालपणे खेले बजारा। रमतके केइ प्रकारा जी। फीकर न कछु लगारा। तूं० ॥ १ ॥ जोबन वय जद आइ। तुज लार [illegible] लगाजी। तूं राच्यो विषय मझारा। तूं० ॥ २ ॥ फिर [illegible] दाय न आवे। जा दूजानी पेठ खावे जी। यों भ्रष्ट [illegible]

तूं० ॥ ३ ॥ नित रंग्यो चंग्यो रेवे । केनी सीख हीरदे देवे जी । फिर वदीयो वहु परिवारा । तूं० ॥ ४ ॥ अव प्रपंचके मांही । करे केइकी व्याव सगाई जी । वण्यो सकल ति तिणवारा । तूं० ॥ ५ ॥ इम ढळवा लागी जवानी । जीउं सीताको पाणी जी । फिर वाजण लगा अतारा । तूं० ॥ ६ सिरपे सपेती छाइ । दांतनकी गइ दृढताइ जी । छुटी नेत्र नाकथी धारा । तूं० ॥ ७ ॥ अंग रंगी वेरंगी थावे । चाल्यो वेळ्यो नहि जावे जी । जब कालका वज्यां नगारा । तूं० ॥ ८ ॥ कुटुंब मीली तिहां आवे । रोवत समशानज लावे जी । गया हंस एकीज विचारा । तूं० ॥ ९ ॥ इम जगकी रचना जाइ । साच कह्यो होइ जी । पेठ मीरजगांव मझारा । तूं० ॥ १० ॥ उगणीसे सतावन साले । जेठ दुवादशी वुधवारे जी । रिखअमोलक गावनहारा । तूं० ॥ ११ ॥ इति ।

धन्ना मुनीको स्तवन.

श्रेणीक पुछे विरजी भाखे, उत्तम मुनिवर सारा; रजमें तज है तरतम जोगे, अधिक धन्नो अनगारा । धना मुनि धन मानव भव पायो, श्री मुख यूं फुरमायो । टेर ॥ १ ॥ श्रेणिक राजा आतमहित काजा । धन्ना मुनिपे आवे, शीश नमावे मुख गुण गावे; जोता तृप्ती न थावे, । ध० ॥ १ ॥ नार वत्तिसे अप्सरा सरखी, धन्न वत्तिसे क्रोडो । संसारने पुठ दीवी मुनिवरजी, शिवपुरसामा दोडो । ध० ॥ ३ ॥ निरंतर तप बेले बेले, पारणो उज्झित आहारो । वणि मगकाग स्वान नही वछै, किम तुम कंठ उतारो । ध० ॥ ४ ॥ वारई कीस जल मांही धोई; ते अन्न खाइ जल पीयो; ऐसो तप सुणी उर कंपे, धन्य धन्य थांरो जीयो । ध० ॥ ५ ॥ चवदे हाजार मुनिसर माहे, आपनें

र वखाण्यां ; दर्शन आपको पुण्यवन्त पावे, मै पीण आज
छण्यां । ध० ॥ ६ ॥ नवमांसे सुद्ध संजम पाळी, सर्वार्थसिद्धि
वे; रामचन्द्र कहे ऐसे मुनिवरजी, क्यूं नहीं मुक्ति सिधावे ।
॥ ७ ॥ इति.

पांसठीया यंत्रको छंद.

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

श्री नेमीश्वर संभव शाम, सुवीधी धर्म शांति अभिराम ॥ अनंत सुव्रत नमिनाथ सुजाण । श्रीजिनवर मुज करो कल्याण ॥ १ ॥ टेर । अजितनाथ चंद्रप्रभ धीर, आदीश्वर सुपार्श्व गंभीर । विमलनाथ विमल जगभाण ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ मल्लिनाथ जिन मंगलरूप, पंचविश धनुष सुंदर स्वरूप । श्रीअरनाथ नमू वर्द्धमान । श्रीजिन० ॥ ३ ॥ सुमति पद्मप्रभ अवतंस, वासुपुज्य शीतल श्रेयांस । कुंथु पार्श्व अभिनंदन भाण । श्रीजिन० ॥ ४ ॥ ईणि परें जिनवर संभारीयें, दुःख दारिद्र्य विघ्न निवारीये । पंचवीशें पांसठ परिमाण । श्रीजिन० ॥५॥ इम

दुःख न आवे कदा, नित पारो जो राखो सदा । धरिये पंचतणुं मन ध्यान । श्रीजिन० ॥ ६ ॥ श्रीजिनवर नामे वंछित मळे। मनवंछित सहु आशा फळे । धर्मसिंह मुनि नाम निधान । श्री-जिन० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्रीशांतिनाथप्रभुको छंद. ॥

सारद माय नमुं शिर नामी, हुं गुण गाउ त्रिभुवनके स्वामी शांति शांति जपे सब कोइ । ते घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपीने कीजे काम । सोही काम होवे अभिराम । शांति परदेश सिधावे । ते कुसळे कमळा लेइ आवे । ते कुसळे कमळा लेई आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी । शांतिजी नाम दीयो हितकारी । जे नर शांति तणा गुण गावे । ऋद्धि अचिंत ते नर पावे ॥ ३ ॥ जे नरकूं प्रभु शांति सहाइ । ते नरकूं क्या आरती भाइ । जे कछुं वंछे सोही पुरे । दुःख दारिद्र मिथ्य मत चुरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घ आंतरके प्रभुवासी । स्वामि सरूप कह्यो नही जावे, कहेता मु मन आश्चर्यज थावे ॥ ५ ॥ डाल दीया सबही हाथियारा, जीत मोह तणा दल सारा । नारी तजी शीव सुरंग राच्यो, राज ज्यो पीण साहेब साचो ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजे देवा, क यरकूं थुन एक हाणेवा । ऋद्धि सबळ प्रभुपास लहीजे । भि आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजककुं समभायक । प सेवककु सदा सुखदायक । त्यजी परिग्रह हुवा जगनायक, न अतिथि सबे सिद्धिलायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र समचित्त गणीजे नाम देव अरिहंत भणीजे । सकल जीव हितवंत कहीजे, सेव जानि माहापद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गंभीरा, दू

माहे शरीरा, मेरु अचळ जिम अंतरजामी, पण न रहे
रुण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिनजी सब देखे, पण
र कबहु न पेखे। रीसबिना बावीस परीसा; सेना
ते जगदीसा ॥ ११ ॥ मान विना जग आ नमनाइ।
विना शिवसुं लंए लाइ। लोभ विना गुण राशि गृहीजे,
भये त्रिगडोसे बिजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणे शिर छत्र धरावे,
पति पण चमर ढळावे। अभयदान दाता सुख कारण,
कचक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाळ भ-
कर्म सर्वको मूळ खणीजे। चउविह संघ तिरथ थापे,
घणी देखै नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे,
कीसीकु सीस नमावे। अकंचनको बिरुद धरावे, पण
न पद्पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नही पण सेवक तारे, द्वेष
निर्गुणा संग वारे, तजी आरंभ निज आतम ध्यावे। शिव-
णीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहिये,
हारो पार न लहीये । तुं प्रभु समरथ साहेब मेरा, हुं
ाहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुं रे त्रिलोकतणा प्रति पाला, हुं
अनाथ मे तूं छे दयाला। तुं शरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु ता-
छे वडवीरा ॥ १८ ॥ तूं ही समोवड भाग जपायो, तो मेरो
ाग चडीयो सवायो। कर जोडी प्रभु विनउं तोसुं, करो कृपा
िनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना भय निवारो, भवसाग-
थी पार उतारो। श्री हस्तिनापुर मंडण साहे, त्यां श्रीशांति
दा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुण
ागर कहे मन भाया । जे नरनारी एकचित्त गावे, ते मन
ंछित निश्चय पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

श्री शांतिनाथ स्वामीको छंद.

शांतिनाथको किजे जाप, क्रोड भवारा काटे पाप ।
नाथजी मोटा देव, सुरनर सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥ दुःख
दर ज.वे दूर, सुख संपति पावे भरपूर । ठग फांसीगर
भाग, वळती सीतळ होवे आग ॥ २ ॥ राजलोकमां महेमा
शांति जिनेश्वर माथे धणी । जो ध्यावे प्रभुजीरो ध्यान,
देवे अधिको मान ॥ ३ ॥ गड गुंवड पीडा मिट जाय,
दुशमन लागे पाय । सवळो भाग्यो मनको भरम, पाम्या
काव्या करम ॥ ४ ॥ सुणो प्रभु मोरी आरदास, हुं सेवक
पूरो आस । मुज मनचिंतित कारज करो, चिंता अरति
हारो ॥ ५ ॥ मेटो ह्मारा आळ जंजाळ, प्रभु मुजने तुं
निहाळ । आपनी किर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभू ह्मारा
॥ ६ ॥ जो प्रभुजीने नित नित रटे, मोती बंधा फूला
चेप लावण दोनु जळ जाय, विन औषध कट जावे छाय ॥ ७
शांति नामसे आखा निर्मळ थाय, जाळो तुट पडळ कट जाय
कमळो पीळो झडझड झरे, शांति जिनेश्वर साता करें ॥ ८
गरमी व्याधी मिटावे रोग, सयण मित्रको मिळ्यो संजोग
एहवो देव न दीसे ओर, नाहि चाले दुश्मनको जोर ॥ ९
लूंटारा सब जावे नास, दुर्जन फीटी होवे दास। शांतिनाथनी की
घणी, कृपा करो तुमे त्रिभवनके धणी ॥ १० ॥ आरज करुं
जोडी हाथ, आपशुं नहि कोई छानी वात । देखि रह्या छो
आप, काटो प्रभुजी ह्मारां पाप ॥ ११ ॥ मुज मनचिंतित करि
काज, राखो प्रभुजी ह्मारी लाज । तुमसम जगमांहि नहि कोय
तुम भजवाथी साता होय ॥ १२ ॥ तुम पास चले नहि मरकी
रोग, ताव तेजरो न्हाको तोड । मारि मिटाइ कीधी प्रभु संव

गुणाको नहि आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने समरे साधु सती,
। समरे जोगी जती । काटो संकट राखो मान, अविचलपदनूं
थान ॥ १४ ॥ सवत आठारे चोराणु जाण, देश माळवो
वखाण । शहेर जावरो चैत्र मास, हुं प्रभु तुम चरणाको
॥ १५ ॥ ऋषि रूगनाथजी कीधो छंद, काटो प्रभुजी
फंद । हुं जोउ प्रभुजीकी वाट, मुज अरति चिंता सवी
॥ १६ ॥ इति ॥

मानव डरको स्तवन.

ानव डर रे २ । लख चौऱ्यांसिमे घरहे रे । मानव डर रे ।
। तुं तो लख चोऱ्यांसिमे भमीयोरे । तुं तो जनम जनम करी
यो रे । तेरो कारज कछुं नही सरीयो रे ॥ मान० ॥ १ ॥
मास उदरमांही रह्यो रे । मलमूत्र तणो दुःख सह्यो रे ।
के हाथ हुलरायो रे ॥ मा० ॥ २ ॥ जिहां नव नवा
गाया रे । तिहां वाजा वहोत वजाया रे । सहुंके मन
उमाह्या रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ पुत्र जतन करीने पाळ्यो रे ।
णी काढण लागो गाळी रे ॥ दुनिया हासी हासी दे दे टाळी
॥ मा० ४ ॥ कंवर मोडीने मारग चाले रे । मुछा मरोडीनें
वळ घाले रे । पिण काळसुं जोर नही चाले रे ॥ मा० ॥ ५ ॥
रे ज्योवनमें मद मातो रे । मुह काळ नही ज्याने वातो रे ।
यां रंगरस मांहे रातो रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ सिरे दोय २ तुरर
के रे । थारी देह अनुपम ओप रे । पीण थारापर जम कोपे रे
॥ मा० ॥ ७ ॥ उंचा मेहेल चुनाया अतभारी रे
कारी छव न्यारी रे । आई काळ तनी आसवारी रे
८ ॥ हीवे यो करीयो ने यो करशुं रे । मंडार रे

भरशु रे । मूढ शुं नही जाने आत्र मरशु रे ॥ मा० ॥ ९
मेहल पिलंगपर पोढे रे । तिहं दोय दोग दीपक जोया रे । रम
रंग मांही मोह्यो रे ॥ मा० ॥ १० ॥ तुं जांने घर हारो रे । तिण
संग नही चालसी थारे रे । थारी वारीने करदेसी छार
मा० ॥ ११ ॥ इम जाणीने सुकृत करीए रे । संस
तरीए रे । इस आतम कारज करीए रे ॥ मा० १
रायचंदजी इम वोले रे । दया धर्मसमो नही तोले रे
लोकमांही आमोले रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति ॥

गुरु उपदेश स्तवन.

गुरूजीने ग्यान दीयो भारी रे । महाराजजीने ग्या
भारी । यो संसार असार छांडने, संजम सुखकारी
ओछो रे आउखो घटतो घटलो । छीन छीनमें जावे ।
मनुष्य जमारो, फेर नही पावे । गु० । म० ॥ १ ॥ क
काया काची माया, काचो संसारो । आल्प सुखारे
काइ, जनम मतिहारो । गु० ॥ २ ॥ चार दीनाको चटक
देखी मत भुलो । तन धन ज्योवन कारमोस काइ
मत फुलो । गु० ॥ ३ ॥ चमत्कार हे विजलि जैसो,
कांचो । चेतना होय तो चेतजो सकाइ । धरम ब
गु० ॥ ४ ॥ समत उगणीसे साल छतीसे, काहान
श्रीरत्नचंदजी महाराज प्रसादे, हीरालाल गाया हो

रिखभदेवजीको पारणो.

घडा एकसो आठ सवीमन, रस भरीया छे नि
भावसुं दान वेहरायो, मांड दीयो पोखो ॥ १ ॥ प मा

ी, आदिजिनेश्वर किनो पारणो। टेर। देव दुंदुभी वाज सोनइ यारी बिरखा। बारे मांससु कियो पारणो, गइ तिरखा। ए मारी ॥ २ ॥ ऋद्धिवृद्धिने मनोकामना, मंगलाचार । दुनिया हारख वधामणो ज कांई, आख ोवार। ए मा० ॥ ३ ॥ चिंता चुरण विघ्न निवारण, पूरो आस, सेवक कहे ह्मारी आरज सुण जो, ऋषभदेव न। ए मा० ॥ ४ ॥ दान शीयल तप भावना ज कांइ, मारग च्यार। कर्म खपायने मुक्ति गया सकांइ, पछे जयजयकार। ए मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

सोळे सुपनाकी लावणी.

आगडदम २ बाजे चोवडा. ए देशी.

वृक्षकी साखा तुटी, अर्थ सुणो एह सुपनेका। अब जो विगा कोइ। संजम वो नही लेनेका। दुजे अस्त भया सूर्य , भेद सुणो अब इस्का सही । पंचम आरे जन्म लिया कुं केवल ग्यान नही। नहीं मनपर जब अवधी पुरण, ए र भयारी। भद्रवाहु मुनि कहे भूपसुं, पंचम आरो दुःख- । टेर ॥ १ ॥ चांद देखा तुम चालणी जैसा, तिसरे सुपनाके । अलग अलग समाचारी होयगी, वोल फरक कछु दरसाइ । भूतणी नाचत हीलमील, देखा चौथे सुपने मांही । देव र्म खोटा जीनकुं, लोक मानेगा अधिकाइ । दया धरमपर जलेंगे, थोडे जैन धरम धारी प० ॥ २ ॥ पांचमे देखा र, बारे फणकर फूंकारे। कितेक साल पिछें काल रसलग भयंकारे। उत्तम साधु कर संथारा, अ... ोरेगा, कायर साधु सो ढीले पडेंगे, हिंसा धर्म ...

राजिंद, ऐसि रीत कर जावेगा । आरथ मुणी रोले स्त्रप राजा भया दृढ व्रत धारी । भ० ॥ १४ ॥ सम्वत उग सालसें तिसका, फागण वदी इग्यारस आइ । तिलोकरीख स्वम्र लावनी, गाम कडामें वनाइ ॥ पंच आरो दुःख ज दुःख है इणगे अधिकांइ । धर्मध्यान और समता राखे, सुख समजो भाइ । ऐसो जानके कर सुकृत, उतरोगे भ पारी भ० ॥ १५ ॥ इति ॥

सात व्यसनको त्याग.

(ख्यालकी देसी)

संसारी लोको, सातु व्यसन छोडो भावसुं । सं० ॥ जूवा खेलण मांस मद्य और, वेश्या व्यसन शिकार; चोर रमणीको रमवो, सातूं व्यसन निवार हो । सं० ॥ १ ॥ खेलिया पांडवा सरे, मंस भख्यो बकराय; मदीरा पीवी सरे, जद्यां कुलसें जाय हो । स० ॥ २ ॥ चारुदत्त सेवी, ब्रह्मदत्त आखेट; सत्यघोष परधनके कारण, नरकां थेट हो । स० ॥ ३ ॥ रावण राजा वडो अभि तीन खंडको स्वामी, रामचंद्रकी सीता हारतां, भयो न गामी हो । सं० ॥ ४ ॥ सात व्यसन ए छोडदो सरे, है दुखकार; रामचंद्रकी आही सीख है, सातूं व्यसन हो । सं० ॥ ५ ॥ इति ॥

गुरुदर्शण विनंति.

भुल मत जावोजी गुरू म्हाने; बिछड मत जाजोजी म्हाने । म्हे आरज कराछा थांने । भुल मत जा० । टेर । प्रेम हीयासे जडीया, प्रगट कहुं क्या छाने । जो मुजमें

करम दोष गुरुं ह्याने । भु० ॥ १ ॥ भवसागर जलसे
। जीव तीरण नही जांने । जीरण नाव जोजरी डुबे ।
ो गुरु ह्यांने । श्रु० ॥ २ ॥ मे चाकरमे चूक पडी तो ।
वगुण नही माने । मे वालक गुना किया बहु तेरा, पिता
इम जाने । श्रु० ॥ ३ ॥ मेरी दोड जिहांलग सद्गुरूजी,
र चरणामे । भेरूलाल कर जोड विनवे । धन धन हे
। श्रु० ॥ ४ ॥ इति

धरमको सरणाको स्तवन.

ाजिनराज सरणो धरमको । आहो जिनराज, सरणो
ो । सरणो धरमकोने चालणो मुगतको । टेर । संसार
ात्रस्था, निरतरसना भम्योरे भरमको । श्री० । आ० ॥१॥
प दोय मगर मोटका । पाने पडीया गल जावे रे उननको ।
आ० ॥ ३ ॥ भवजीव प्राणी वेठारे आनी । सद्गुरुं
या नाव खेवणको । श्री० । आ० ॥ ४ ॥ कहे हीरालाल
भवप्राणी । चालो रे मुगतमें ठाम आनंदको । सि० । आ० ५

गुरुदर्शन स्तवन.

देशी ख्यालकी.

गुरु देव हामारा, थाका दर्शनकी म्हारे भावना; सुणो
री सहेल्या, तन धन वारूरे करसु वधावणा ॥ टेर ॥ तीन
कको द्रव्य ही । सारो, करूं भेट तो थोडा । दर्शन करने कह
ति, क्यूं दीयो दर्शन मोडा ॥ गु० ॥ १ ॥ मात पीता कुटु
स्वासि, खडे खडे सब झांके; समरथ नही कोइ नरके
ा, वांह पकड गुरू राखेजी ॥ गु० ॥ २ ॥ अंधत्व

नेत्र दीये और, अपूज्यकूं पूज्य बनाए; पशुत्त्व टारी जन्म सुध
नरपंक्तिमें लाये जी ॥ गु० ॥ ३ ॥ भवभवमें मुझ सद्गुरू से
दीजो वर प्रभु मांगुं; मुनिराम कहे गुरु दर्शन दीजो, लुल
चरणे लागुजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

छे कायाको स्तवन.

पृथ्वी एक कणुं कणामे, जीव कह्या जिनराज। पारेवा
काया करे तो, जंबूद्वीप न मांय ॥ १ ॥ चतुर नर
विच्यारोरेक। ग्यानी जतन करो छेकाए। टेर। डाभ
जलबुंदमें रे, जीव कह्या जिनराज; भमरासम काया करे
जंबूद्वीप न माय ॥ चतुर० ॥ २ ॥ तेउ एक तिउं
जीव कह्या जिनराज; सरसुसमकाया करे तो, जंबूद्वीप न
च० ॥ ३ ॥ वायु एक झबुकडामे, जीव कह्या जिनराज; च
समकाया करे तो, जंबुद्वीप न मांय । च० ॥ ४ ॥
तिमे जानजो, तीन भेद कह्या जीनराज; कंद मूलमें अनं
कांइ अनंता अनंता कहेवाय । च० ॥ ५ ॥ तरस थावर
करे, साधु श्रावक नाम धराए; राजा लुटे रे तने तो,
पुकारू जाय। च० ॥ ६ ॥ अमृतसुं जीतबघटेने, जलसुं
लाए, साधु होइने जीव हाणेतो, चोडे भुल्यो जाय।
७ ॥ सुत आपनो वेचे पितां, मामारे जेहर खीलाए,
भके जीम कागडी, तिनकूं कोन उपाय। च० ॥ ८ ॥
धसे पातालमे रे, समुंदर कार लोपाय; झाज डुबोवे जिन
साद हाने छे काय। च० ॥ ९ ॥ पणवणा कह्यो, जिन
गम साख सुनाय, वहु सुत्री दृष्टांतमें कांइ, कूंसिल्यो कह्यो
जाय। च० ॥ १० ॥ इति ॥

उपदेशी पद.

(वता दे सखी) ए देशी.

दे भया, इस जगतमें तेरा कोन। या टेर ॥ देह सनेह
ों व्यर्थ। न रहे किया जादू टोन। व० ॥ १ ॥ धन
कुछ काम न आता, पुण्य खुटे जावे जूंपोन। व० ॥ २
सबी स्वार्थके है। जीं जी करे धन होन। व० ॥
क्षमा दया दान ए धर्म तेरा। ले ले आमोल सुख जोन।
४ ॥ इति ॥

मुनिमार्ग कठिन, स्तवन,

ारा साध तणो आचार। योतो चालनो खांडाधार।
रुगिरि उठानो मस्तक, पीनी आगनकि झाला। मेणका
चणा चावना, सेज नही तीण वार ॥ कवरा० ॥ १ ॥
करीने सायर तिरनो, जानो पेले पार। सनमुख उपर
दुकर गंगा धार ॥ क० ॥ २ ॥ दोदस उपर दोए
सहेना दुकर कार। भमर भीक्षाके कारणेस कांइ,
उंच निच घर द्वार ॥ क० ॥ ३ ॥ सित उसण विरखा
सहेना, करणो उग्र विहार। वालु कवलमुख मांही मेल्यो,
नही लिगार ॥ क० ॥ ४ ॥ हेतु द्रष्टांत अनेक लगाया,
नही कुमार। हीरालाल कहे रस संजमको, चढीयो हीरदे
॥ क० ॥ इति ॥

सामायिक लाभकी संझाय.

र पडिकमणो भावसुं, दोय घडी शुभ ध्यान।
भव जातां जीवनें, संवल साचुं जाण ॥

कर पडिक्कमणुं भावशुं ॥ टेर ॥ श्रीवीर मुख इम उचरे, श्रे
राय प्रते जाण ॥ ला० ॥ लाख खांडी सोनातणी, दीये
प्रते दान ॥ ला० ॥ क० ॥ २ ॥ लाख वरस लगें ते
एम दीये द्रव्य अपार ॥ लाल रे ॥ एक सामायिकना तोले
आवे तेह लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविस
भळे वंदन दोएवार ॥ ला० ॥ व्रत संभाळोरे आपणो, ते
कर्म निवार ॥ ला० ॥ क० ॥ ४ ॥ कर काउस्सग्ग सुभ
नथी, पच्चखाण शुध्ध विचार ॥ ला० ॥ दोए सझायते
टाळो टाळो अतीचार ॥ ला० ॥ क० ॥ ५ ॥ श्रीसामायिक
थी, लहिये अमर विमान ॥ ला० ॥ धर्मसिंहमुनि एम भणे,
छे मुक्ति निधान ॥ ला० ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

प्रसन्नचंद्र राजऋषीको स्तवन.

प्रणमुं तुमारा पाय । तुमे मोटा रीखराय । प्रसन्नचंद्र ।
तुमारा पाय । टेर । राज छोडी रळीयामणुंरे, जानी
संसार । वैरागे मन वाळीयोरे, लीधो संजम भार । प्रसन्न० ।
स्मशाने काउस्सग्ग रहीरे, पग उपर पग चढाय । बाहा
करीरे, सुरजसामी द्रष्टि लगाय । प्र० ॥ २ ॥ दुर्मुख दूत
सुणीरे, कोप चढ्यो ततकाळ । मनशुं संग्राम मांडीयोरे,
[illegible] । प्र० ॥ ३ ॥ श्रेणीक प्रश्न पुछे तदारे, [illegible]
[illegible]
[illegible] । प्र० ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] पाम्यां । केवल ज्ञान ।
॥ ५ ॥ प्रसन्नचंद्रऋषी मुगते गयारे, श्रीमहावीरना शी
वि[illegible] कहे धन्यधन्य, दीठा हे आज प्रत्यक्ष । प्र० ॥ ६

उपदेशी लावणी.

रुकी शीख हिय धरनारे ॥ सु० ॥ अमरापुरको पंथ
श्रीजैनधर्म करना ॥ टेर ॥ परम परमारथ थे टाळ्योरे ॥
॥ सार जगतमें जैनधर्म, जुगतिसें नही पाळ्यो।
नाम नही लीनो रे ॥ प्र० ॥ महा हलाहल विषय विकट,
मतसें भीनो। चेतन युं वहुविध दुःख पावे रे ॥ चे० ॥
लालचके मांये, पांच इंद्रीयके सुख चावे। जीव अब
री हारनारे ॥ जी० ॥ अमरा० ॥ १ ॥ दया चेतनकु
ारी रे ॥ द० ॥ श्रीजिनराज परूप्यो जैसी केसरकी क्यारी
तमें तीरथ है च्यारी रे ॥ ज० ॥ साधु साधवी श्रावक
का, हुआं व्रतधारी। इनूंकूं कहीए ब्रह्मचारीरे ॥ इ० ॥
संयम सार करीने, कर्म हाण्या भारी। इनोने मेव्या
मरणारे ॥ इ० ॥ अम० ॥ २ ॥ पंच इंद्रीयसें लपटायोरे ॥
दुःख अनंता सह्यारे वहुलां, प्राणी पस्तायो। वहु
में भमी आयोरे ॥ व० ॥ शुभ मंत्र नवकार सार, दुर्लभ
पायो। मेरो मन जिनवरसु भायो रे ॥ मे० ॥ कुगुरूको
संग अशुभ, मिथ्यामत छीटकायो। इणाविध भवजळसे
रे ॥ इ० ॥ अ० ॥ ३ ॥ रहो जिनवाणीमें रातांरे ॥
अनंत सुखकी खाण, सदा शिव मंगलके दाता। सदा
र भक्ति करजो रे ॥ स० ॥ चित्त धारी हीयामें भवि तुम,
रीहारजो। अल्प जिनवरका गुण गाया रे ॥ अ० कर
जिनदास कहे, जिनभक्तिसे न्हाया। सदा मे चाहुं
वरणारे ॥ स० ॥ अम० ॥ ४ ॥ इति ॥

सीमंधरजीनु स्तवन.

सुणो चंदाजी. सीमंधर परमातम पासे जायजो, विनतडी. प्रेमधरीने इणपरे तुमे संभळावजो । टेर । जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसट इंदर पायक छे, नाण दरसण जेहने खायक छे । सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे, पुंडरगीरि नगरीनो राया छे । सुणो० ॥ २ ॥ वार पर्षदामांहि विराजे छे, जस चोत्रीश अतिशय छाजे छे, गुण पांत्रीश वाणीये गाजे छे । सुणो० ॥ ३ ॥ भवि जनने ते प्रति बोधे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे, रूप देखी भविजन मोन्हे छे । सु० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो छु, पण भरत क्षेत्रमें वसीयो छुं, महा मोहराय कर फसियो छु, । सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिव चित्तमां धरीयो छे, तुम आण खडगकर ग्रहीयो छे, पण काइक मुजथी डरीयो छे । सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं सूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो । सुणो०

मनकु उपदेशी पद.

मनवा नाहा बिचारी रे । लोभीडा नाहा बिचारी रे । थारी म्हारी करतां उमर बितगइ सारीरे । मनवा नाहा बिचारी रे । टेर । गरभवासमें करुणा कीनी, सरब पियारी रे ॥ अब तो नाथ बाहेर काढो, भगती करशुं थारीरे । मनवा० ॥ १ ॥ आवे मन मायासु लागो, जोडे सवाइरे । कोडी रे कोडी सब लेतो, राड उद्धारीरे । मानवा० ॥ २ ॥ बालपणामें लाड लडावे माता थारीरे । भरजवानी तीरीया, जोबन लागे प्यारी रे । मनवा० ॥ ३ ॥ रूखगये बार दसु दरवाजे, लग रही घेरीरे । अ

चौऱ्यांसि भुगते, करणी थारीरे। मन० ॥ ४ ॥ काळु-
। सिख मोहे दीनी, मानी सारीरे। आव तो नाथ पार
ो, सरण तुह्मारो रे मन० ॥ ५ ॥ इति।

मनकूं सिखविषे पद.

मना तोकुं किसविध कर समजाउं, चेतन तोकुं किसविध समजाउं। तोकुं वारंवार चेताउं। मना० ॥ टेर ॥ हस्ती तो पकड मंगाउ, पायमे जंजिर डलाउं। मावत होयके, उपर तो, अंकुस देके चलाउं रे। मना० ॥ १ ॥ लोहो होयतो ण धमाउं, दोए दोए एरण रोपाउं। ले घनसे घनघोर उं, पाणी करणे चलाउं। मना० ॥ २ ॥ सोनो होयतो ी मंगाउं, करडा ताव देवाउं; ले फुकीने फुकनने बैठु तो, मे तार खेचाउं। मना० ॥ ३ ॥ गायन होयतो गाय रेंझाउं, र वैएण बजाउं; जिनदासकी याही आरज है, ज्योतीमें जोत उंरे। मना० ॥ ४ ॥ इति।

नरभवको पद.

नरभव तारोरे तारो, संसार समुंदर खारो। नरभव तारोरे ो। वेराग लगे मुज लगे मुज प्यारो। न० ॥ टेर ॥ बोलजों सकेरो मिलियो, आलसमें मत हारो। नर० ॥ १ ॥ माया ामें उलज रह्यो है, नित करे ह्मारो ह्मारो। बेटा पोता व कबिला, कोइ नही दीसे थारो। न० ॥ २ ॥ सुंदर ी मन गमती, तन धनसु परीवारो। काल आयो डी, उठ चल्यो निरधारो। न० ॥ ३ ॥ इम जाणीने ी, छोडो पापनो भारो। देव गुरु धर्म दृढकर

फंदोजी ॥ स० ॥ ११ ॥ समकितक्रियाविन जगनमें, नही तारणहारोजी । तिलोकरीख कहे इम सरदजो, जो सु नरनारीजी ॥ स० ॥ १२ ॥ दान शीयल तप भावना, जुगमें तत्त्वसारोजी । भावे आराधो भावसुं, होजासी पारोजी ॥ स० ॥ १३ ॥ इति ॥

उपदेशी लावणी.

करो करो आछाजी करो करो; भलाजी करो करो । जरा सुविचार। देखो देखो जरा सु० । टेर। करो रात दीन घरको यो थारो यो म्हारो । इनमें थोडो भजन करोतो । काइ विग थाो ॥ क० ॥ १ ॥ भाइ भतिजा कुटुंब कविला, नितमत ता तान । साधुजीने थे वंदो तो, कांइ होसी नुकसान ॥ क० ॥ घणा कुशल थे लेखे चोखे, विद्या सीख्या जादा । धरम स धसो नही थे, किंउं छोडी मरजादा ॥ क० ॥ ३ ॥ घना पु मनुष्य जमारो, बडा घराने पाया । जो चालोला धरम री होसी मनका चाया ॥ स० ॥ ४ ॥ नाटक चेटक ख्याल त देखनमे चित्त जावें । वखाणमांहे आवन सारूं, जीव दुख पावे ॥ क० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रतधारी साधु, मिलिया प्रकासो । यो अवसर जो निकल गयो तो, फेर घना पस्ता क० ॥ ६ ॥ संगीत पद फागनकी गाळ्या, गावनमें सोरो । सामायिक पडिकमणो सिकनो, किंउं लागे छे दो क० ॥ ७ ॥ सट्टा करना तोटा भरना, थांने आछा ल दान दयारो काम पडे तो, खोजामे काटो भागे ॥ क० ॥ पातरीया प्यारी, देख देख आनंदसुं ॥ सिळ पा उणके, डरो नही जन धनसु ॥ क० ॥ ९ ॥

भोज उडावन, नंबर थारो पेहलो । तपशा करता ताव
ढोंग आणुथा लेलो । क० ॥ १० ॥ कपटदंभ पाखंडसे
, नख चखसु हाद नाम । पीण हीरदामें प्रेमभाव राखतां
ळागे छे दाम । क० ॥ ११ ॥ धरम सरीखी चीज जगतमें
कछुं नही जानो । मुनिवरजी उपदेश करे छे, पके हीरदे
। क० ॥ १२ ॥ कहे विप्र चुनिलाल निहारो, दुर्लभ
र जमारो । आखर काळ कीने नही छोड्यो, खोलो पट
ारो । क० ॥ १३ ॥ इति ॥

गुरु चेलाको संवाद.

रु— देख्यो रे चेला विन रूख छाया, देख्यो रे चेला
धन आया । देख्यो रे चेला विन पास बंधन, देख्यो रे
विन चोरी दंडण ॥ १ ॥

ला— देख्या गुराजी विन रूख छाया, देख्या गुरांजी
धन आया । देख्या गुराजी विन पास बंधन, देख्या
ी विन चोरी दंडन ॥ २ ॥

— कहोनी चेला विन रूख छाया, कहोनी चेला विन
ा । कहोनी चेला विन पास बंधन । कहोनी चेला
ोरी दंडन ॥ ३ ॥

— बादल गुरूंजी विनरूख छाया, विद्या गुरूंजी विन
॥ मोह गुरूंजी विन पास बंधन, चुगली गुरांजी
ोरी दंडन ॥ ४ ॥

— देख्यो रे चेला विन रोग गळतां, देख्योरे चेला
अग्नि जळतां ॥ देख्योरे चेला विन प्यार प्यारा, देख्यो
विन खारे खारा ॥ १ ॥

— देख्या गुरांजी विन रोग गळतां, देख्या

विन अग्नि जलतां ॥ देख्या गुरांजी विन प्यार प्यारा, गुरांजी विन खारे खारा ॥ २ ॥

गुरू— कहोनी चेला विन रोग गळता, कहोनी चेला अग्नि जलतां ॥ कहोनी चेला विन प्यार प्यारा ॥ कहोनी विन खारे खारा ॥ ३ ॥

चेला— चिंता गुरांजी विन रोग गळतां, क्रोध गुरांजी अग्नि जलतां ॥ साधु गुरांजी विन प्यारे प्यारा, हिंसा गु विन खार खारा ॥ ४ ॥

गुरू— देख्यो रे चेला विन पाळ सरवर, देख्यो रे विन पान तरुवर ॥ देख्यो रे चेला विन पांख सुवा, देख चेला विन मोत मुवा ॥ १ ॥

चेला— देख्यो गुरांजी विन पाळ सरवर, देख्यो गु विन पान तरवर ॥ देख्यो गुरांजी विन पांख सुवो, दे गुरांजी विन मोत मुवो ॥ २ ॥

गुरू— कहोनी चेला विन पाळ सरवर, कहोनी पान तरवर ॥ कहोनी चेला विन पाख सुवा, विन मोत मुवा ॥ ३ ॥

चेला— तृष्णा गुराजी विन पाळ स पान तरवर ॥ मन गुरांजी विन पांख मोत मुवा ॥ ४ ॥ इति ॥

गेलें ॥ कांहींतरी उपाय वरा, जैनमार्ग खरा, तो दावि
। कशास० ॥ १ ॥ हिंसा पासुनी दूर राहावे, जल गाळु-
स्वच्छची घ्यावें, परस्त्रीविषयीं अंध असावें ॥ विचार
। होय जरा, उपदेश खरा, मज मनीं ठसला ॥ कशास०
॥ अरिहंताचे चरणा ध्यावें, निग्रंथासी शरण रिघावें, तत्व
ही अवलोकावें, कधीं न मी विसरीन तुला, जैन धर्म मला,
ाज दिसला ॥ कशास० ॥ ३ ॥ इति ॥

चोवीसी.

(गोपीचंदकी देशी.)

। उठ गुण गावो; एक चित्त चोवीसी जिनंदका. (टेर)
में अजित संभव अभिनंदन, सुमत पदम सुखदाय;
रस चंदाप्रभूके प्रणमू लुल लुल पायजी. नित्य० १
धि शितल श्रेयांस वासपूज्य, विमल अनंत अविकार;
ाथ, श्रीशांतिजिनेश्वर, शांति तणा करनारजी. नित्य २
अरह मल्ली मुनिसुव्रतजी, नमे रिष्टनेमी देव;
महावीर प्रभूजीकी, हितकर कीजे सेवजी. नि० ३
.५ दया कर मूजपे, सुख संप मुज दीजें;
—व्याधि—उपाधि निवारी, शांतस्वरूपी कीजेंजी. नि० ४
उगणीसे वासठको, इगतपुरी चौमास;
ऋपिकी अरजी मानी, दीजो शिवपुर वासजी. ५

आठारे पापस्थानरो

देवनो देव तुं खरो ।

विन अग्नि जलतां ॥ देख्या गुरांजी विन प्यार प्यारा, दे
गुरांजी विन खारे खारा ॥ २ ॥

गुरू— कहोनी चेला विन रोग गळता, कहोनी चेला
अग्नि जलतां ॥ कहोनी चेला विन प्यार प्यारा ॥ कहोनी
विन खारे खारा ॥ ३ ॥

चेला— चिंता गुरांजी विन रोग गळतां, क्रोध गुरांजी
अग्नि जलतां ॥ साधु गुरांजी विन प्यारे प्यारा, हिंसा गु
विन खार खारा ॥ ४ ॥

गुरु— देख्यो रे चेला विन पाळ सरवर, देख्यो रे
विन पान तरुवर ॥ देख्यो रे चेला विन पांख सुवा, देख्य
चेला विन मोत मुवा ॥ १ ॥

चेला— देख्यो गुरांजी विन पाळ सरवर, देख्यो गु
विन पान तरवर ॥ देख्यो गुरांजी विन पांख सुवो, दे
गुरांजी विन मोत मुवो ॥ २ ॥

गुरू— कहोनी चेला विन पाळ सरवर, कहोनी चेल
पान तरवर ॥ कहोनी चेला विन पाख सुवा, कहोनी
विन मोत मुवा ॥ ३ ॥

चेला— तृष्णा गुराजी विन पाळ सरुवर, नेत्र गुरांजी
पान तरवर ॥ मन गुरांजी विन पांख सुवा, निद्रा गुराजी
मोत मुवा ॥ ४ ॥ इति ॥

उपदेशी मराठी पद.

धिक् तुह्मां सकलांस असो, जैन धर्म तुह्मांला व्यर्थ आ
कशास जैन कुलास आला, जैन धर्म तुह्मांला व्यर्थ आला
अभक्ष्य तुह्मीं सेवन केलें, कुदेवाचे बनला चेले, आयुष्य

र गेलें ॥ कांहींतरी उपाय वरा, जैनमार्ग खरा, तो दावि
॥ कशास० ॥ १ ॥ हिंसा पासुनी दूर राहावे, जल गाळु-
स्वच्छची घ्यावें, परस्त्रीविषयीं अंध असावें ॥ विचार
ा होय जरा, उपदेश खरा, मज मनीं ठसला ॥ कशास०
॥ अरिहंताचे चरणा ध्यावें, निर्ग्रंथासी शरण रिघावें, तत्व
ही अवलोकावें, कधीं न मी विसरीन तुला, जैन धर्म मला,
ाज दिसला ॥ कशास० ॥ ३ ॥ इति ॥

चोवीसी.

(गोपीचंदकी देशी.)

ा उठ गुण गावो; एक चित्त चोवीसी जिनंदका. (टेर)
में अजित संभव अभिनंदन, सुमत पदम सुखदाय;
ास चंदाप्रभूके प्रणमू लुल लुल पायजी. नित्य० १
धि शितल श्रेयांस वासपूज्य, विमल अनंत अविकार;
थ, श्रीशांतिजिनेश्वर, शांति तणा करनारजी. नित्य २
अरह मल्ली मुनिसुव्रतजी, नमे रिष्टनेमी देव;
थ महावीर प्रभूजीकी, हितकर कीजे सेवजी. नि० ३
दया कर मूजपे, सुख संप मुज दीजें;
ा-व्याधि-उपाधि निवारी, शांतस्वरूपी कीजेंजी. नि० ४
उगणीसे वासठको, इगतपुरी चौमास;
ोलख ' ऋषिकी अरजी मानी, दीजो शिवपुर वासजी. ५

आठारे पापस्थानरो स्तवन.

खोडीदासजीकृत.

ा म देवनो देव तुं खरो । धरम थायरो मे नथी कन्यो

सीता दुःखवारिणी हो राज ॥ १ ॥ सो० ॥ नेम अंगना रा
मती सती, कुंताजि पांडव माता हो राज; द्रुपदी नारि वि
जहारी, चंदना जिनमते विख्याता हो राज ॥ सो० ॥ संतानी
राणी मृगावती शाणी, चेलणा श्रेणिक पटराणी हो राज, प्र
वतिजिने सुभद्राजी, विजकर जग प्रगटाणी हो राज ॥ सो
नल घरनी दमयंती दीपे, सुलसा कंदर्प जीते हो राज; शीवा
दृढरही ब्रह्मव्रते, पद्मावती शील मोती सिपे हो राज ॥ सो
ए सोले संकटमें स्थिर रही, अखंड शिल व्रत पाल्यो हो रा
संयम लेइ मोक्ष सिधाई; ऋषी अमोलख दुःख टाल्यो
राज ॥ सोले सतिता ॥

वीस विहरमान स्तवन.

(रेखता)

वंदू में विसी विहरमानो, अजपा जप लग्यो ध्यानो (टेर
सीमंधर युगांधर राया, बाहु सुबाहुके पड्ड पाया;
सुजात ने स्वयंप्रभु देवा, करुं ऋषभानंदकी सेवा. वंदू० १
अनंतवीर सूरप्रभू स्वामी, वज्रधर विशाल जिन नामी;
चंद्रानन ने चंद्रबाहू, भुजंग ईश्वरकी भक्ति चाहू. वंदू० २
नेमप्रभू वीरसेना, महाभद्र उच्चारीये वेणा;
देवयशजी ने अनंतवीर, चरणमें नमता मुज शिर. वंदूं० ३
जयवंता वीसी विदेहमांही, विराजे धर्म दीपाइ;
नरिंद सुरिंद करे सेवा, जिनेश्वर देवाधिदेवा. वंदूं० ४
चिदानंद पद पाय ध्याता, 'अमोलिक' रिख गुण गाता;
चौमासा इगतपुरीमांही, प्रभू पसाय सुखदायी. वंदूं० ५

---

११ गणधरका स्तवन.

(फाग रागे.)

वंदो नित्य इग्याराइ गणधरको. (टेक.)

तिजी ने अग्निभूतिजी, वायूभूति वड मुनीवरको. वंदो० १

भूति ने सुधर्मस्वामी, पाट दीपावे जिनेश्वरको. वंदो० २

त्र ने मोरीपुत्रजी, अकंपित अचलजी सुखकरको. वंदो० ३

ने श्रीप्रभासजी, पाम्या पद अजरामरको. वंदो० ४

वित पावत शिवसुख ते, 'अमोल' नमे जोडी करको. वंदो० ५

श्री रत्नरीखजी महामुनिको पद.

ता धापुबाइका नंद २॥ देखीता हेरी सुरत, ह्मारो चित्त
ोजीक। ह्मारो दील लुभानोजी! देखी०।टेर। मुरधरदेस
पटीमे, वो तो गाम कहेवाय। सरूपचंदजी पिता तुह्मार
ाइ छे माय। माता० ॥ २ ॥ नाम तुह्मारो रत्नारिखजी,
चिंतामणी जाण। अल्प उमरमें दीक्षा लीनी, किनो काया
। मा० ॥ २ ॥ गुरू तुह्मारा तिलोकरिखजी, अनेक
जान। वाल ब्रह्मचारी आप विराजो, जीम
र भाण। मा० ॥ ३ ॥ करुणाना आगर करूणासा
कंचनवान। स्यादवाद तो वाणी मीठी, वरसे मेघ
॥ ४ ॥ सूत्र सुणावो धर्म बतावो, तारो बहु
र्मकुं आप दीपायो, धन तुम मुनि अवतार।
क्रिया आप अनुसरो, खटकाया रखपाल
ताहेरी, भव भव फेरा दो टाळ। मा